प्रवचनसारोद्धार: एक अध्ययन

प्रवचनसारोद्धार जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, जैन धर्म एवं दर्शन का सारभूत, किन्तु आकर ग्रन्थ है। इसका विषय वैविध्य एवं कर्ता की व्यापक संग्राहक दृष्टि, इसे जैन विद्या के लघु विश्व-कोष की श्रेणी में लाकर रख देती है। वस्तुत: यह एक संग्रह ग्रन्थ है, जिसमें जैन विद्या के विविध आयामों को समाहित करने का लेखक ने अनुपम प्रयास किया। यद्यपि इसके पूर्व आचार्य हरिभद्रसूरि (विक्रम संवत् की आठवीं शती) ने अपने ग्रन्थों **अष्टक, षोड्शक, विंशिका, पंचासक** आदि में जैन धर्म, दर्शन और साधना के विविध पक्षों को समाहित करने प्रयत्न किया है, फिर भी विषय वैविध्य की अपेक्षा से ये ग्रन्थ भी इतने व्यापक नहीं हैं, जितना **प्रवचनसारोद्धार** है। इसमें २७६ द्वार हैं और प्रत्येक द्वार एक-एक विषय का विवेचन प्रस्तुत करता है, इस प्रकार प्रस्तुत कृति में जैन विद्या से सम्बन्धित २७६ विषयों का विवेचन है। इससे इसका बहुआयामी स्वरूप स्पष्ट हो जाता है।

प्रस्तुत कृति १५७७ प्राकृत गाथाओं में निषद्ध है। मात्र गाथा (श्लोक) क्रमांक ७७१ संस्कृत में है। इसकी भाषा महाराष्ट्री प्राकृत है। छन्दों की अपेक्षा से इसमें आर्या छन्द की ही प्रमुखता है, यद्यपि अन्य छन्द भी उपलब्ध होते हैं। इस कृति के अवलोकन से यह स्पष्ट हो जाता है कि जैन परम्परा में ई० पू० छठी शती से लेकर ईसा की तेरहवीं शती तक लगभग दो हजार वर्ष की सुदीर्ध अवधि में प्राकृत में ग्रन्थ लेखन की जीवित परम्परा रही है। मात्र यही नहीं, इसके पश्चात् आज तक भी प्राकृत भाषा में ग्रन्थ लिखे जा रहे हैं जो जैन विद्वानों की प्राकृत के प्रति प्रतिबद्धता के सूचक हैं। प्रस्तुत कृति के लेखक ने इसके अतिरिक्त **अनंतनाहचरियं** नामक एक अन्य ग्रन्थ भी प्राकृत भाषा में रचा है इससे लेखक की प्राकृत भाषा और विषय दोनों पर अधिकार सिद्ध होता है। साथ ही प्रस्तुत कृति में विविध विषयों का संग्रह उसकी बहुश्रुतता का भी परिचय देता है।

प्रवचनसारोद्धार के रचयिता :-

प्रवचनसारोद्धार नामक प्रस्तुत कृति के रचयिता आचार्य नेमिचन्द्रसूरि हैं किन्तु ये नेमिचन्द्रसूरि कौन हैं और कब हुए? इस सम्बन्ध में थोड़ी विस्तृत विवेचना अपेक्षित है।

यद्यपि **प्रवचनसारोद्धार** की प्रशस्ति में ग्रन्थकार ने इसके रचनाकाल का उल्लेख नहीं किया है किन्तु उन्होंने अपना और अपनी गुरु परम्परा का संक्षिप्त किन्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्पष्ट निर्देश किया है। कर्ता प्रशस्ति में वे लिखते हैं "धर्म रूपी पृथ्वी का उद्धार करने में महावराह के समान जिनचन्द्रसूरि के शिष्य आम्रदेवसूरि हुए। उनके शिष्य नेमिचन्द्रसूरि, जो विजयसेन गणधर से कनिष्ठ और यशोदेवसूरि से ज्येष्ठ थे, ने सिद्धान्तरूपी रत्नाकर से रत्नों का चयन करके **प्रवचनसारोद्धार** की रचना की।" इस प्रकार **प्रवचनसारोद्धार** की इस कर्ता प्रशस्ति में उन्होंने अपनी गुरु परम्परा में केवल अपने प्रगुरु जिनचन्द्रसूरि और गुरु आम्रदेवसूरि के ही नामों का निर्देश किया है, उनके गच्छ आदि का विस्तृत विवरण नहीं दिया है किन्तु अपने द्वारा ही रचित **अनंतनाहचरियं** की कर्ता प्रशस्ति में अपने गच्छ और गुरु परम्परा का अधिक विस्तृत विवरण दिया है। फिर भी उपरोक्त दोनों प्रशस्तियों से ग्रन्थकार के सांसारिक जीवन के सम्बन्ध में कोई भी जानकारी उपलब्ध नहीं होती है।

अनंतनाहचरियं से इतना विशेष ज्ञात होता है कि वे श्वेताम्बर परम्परा के बृहद् गच्छ के थे। इस गच्छ इसका प्रारम्भ देवसूरि से बताया गया है। इन देवसूरि के शिष्य आदित्यदेवसूरि हुए। आदित्यदेवसूरि के शिष्य आनन्ददेवसूरि और आनन्ददेवसूरि के शिष्य नेमिचन्द्रसूरि (प्रथम) हुए। उसमें इन्हें सिद्धान्त के रहस्यों का ज्ञाता भी कहा गया है। इन्होंने **लघुवीरचरित**, **उत्तराध्ययनवृत्ति**, **आख्यानकमणिकोष** एवं **रत्नचूड़चरित** आदि ग्रन्थों की रचना की थी। प्रशस्ति में इन नेमिचन्द्रसूरि का जिस प्रकार से गुणगान किया गया है उससे यही सिद्ध होता है कि **प्रवचनसारोद्धार** के कर्ता ये नेमिचन्द्रसूरि (प्रथम) नहीं हैं। क्योंकि ग्रन्थकार प्रशस्ति में स्वयं अपनी प्रशंसा इस रूप में नहीं कर सकता है। इसी प्रशस्ति में आगे आनन्ददेवसूरि के दूसरे दो शिष्यों प्रद्योतनसूरि और जिनचन्द्रसूरि का उल्लेख भी हुआ है और इन जिनचन्द्रसूरि के आम्रदेवसूरि और श्रीचन्दसूरि ऐसे दो शिष्य हुए। ये आम्रदेवसूरि **आख्यानकमणिकोष** की वृत्ति के रचयिता हैं। प्रशस्ति के अनुसार इन्हीं आम्रदेवसूरि के शिष्यों में हरिभद्रसूरि, विजयसेनसूरि, यशोदेवसूरि और नेमिचन्द्रसूरि (द्वितीय) आदि हुए, यही नेमिचन्द्रसूरि (द्वितीय) इस **प्रवचनसारोद्धार** के कर्ता हैं।

अपने **अनंतनाहचरियं** की ग्रन्थ प्रशस्ति में इन नेमिचन्द्रसूरि ने अपने को मन्दमति कहा है इससे भी यही सिद्ध होता है कि ये नेमिचन्द्रसूरि (द्वितीय) ही उस **अनंतनाहचरियं** के एवं **प्रवचनसारोद्धार** नामक प्रस्तुत कृति के कर्ता हैं। नेमिचन्द्रसूरि ने उस प्रशस्ति में अपने जिन अन्य गुरु भ्राताओं का निर्देश किया है उनमें यशोदेवसूरि को लक्षण, छन्द, अलंकार, तर्क, साहित्य और सिद्धान्त का ज्ञाता कहा गया है। ज्ञातव्य है कि ये यशोदेवसूरि ही प्रस्तुत कृति के संशोधक भी थे। इस समग्र चर्चा के आधार पर प्रस्तुत कृति के कर्ता नेमीचन्द्रसूरि (द्वितीय) की जो गुरु परम्परा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निर्धारित होती है उसे निम्न सारिणी द्वारा स्पष्टतया समझा जा सकता है—

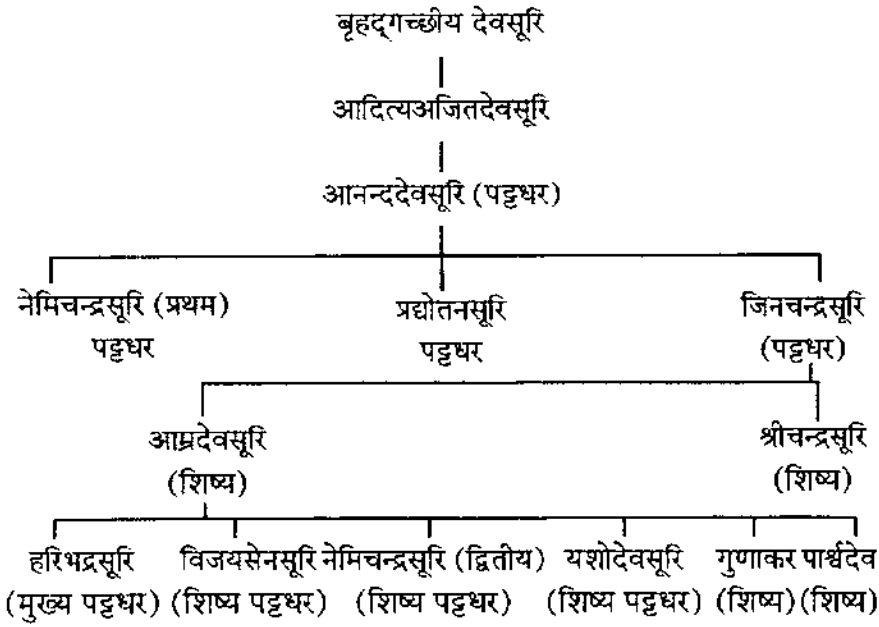

प्रस्तुत कृति का रचनाकाल :-

यद्यपि **प्रवचनसारोद्धार** की प्रशस्ति में उसके रचनाकाल का स्पष्ट निर्देश नहीं है, किन्तु उसके कर्ता नेमिचन्द्रसूरि (द्वितीय) का सत्ताकाल विक्रम की १२वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर १३वीं शताब्दी के पूर्वार्ध तक सुनिश्चित है। उन्होंने अपने **अनंतनाहचरियं** में उसके रचनाकाल का भी स्पष्ट निर्देश किया है। ग्रन्थ के रचनाकाल के सम्बन्ध में ग्रन्थ की अन्तिम प्रशस्ति में उन्होंने 'रसचंदसूरससेवरिसे विक्कमनिवावकन्ते' ' ऐसा स्पष्ट उल्लेख किया है इससे स्पष्ट है कि इस ग्रन्थ की रचना वि०सं० १२१६ में हुई थी। इस कृति में कुमारपाल के राज्यकाल का भी स्पष्ट निर्देश है। इससे भी इसी तथ्य की पुष्टि होती है कि उन्होंने जब वि०सं० १२१६ में **अनंतनाहचरियं** की रचना की थी, तब गुजरात में कुमारपाल शासन कर रहा था। अत: उनका सत्ताकाल विक्रम की १२वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से १३वीं शताब्दी के पूर्वार्ध तक सिद्ध होता है। ईसा सन् की दृष्टि से तो उनका सत्ताकाल ईसा की १२वीं शताब्दी सुनिश्चित है।

प्रवचनसारोद्धार के टीकाकार सिद्धसेनसूरि ने इसकी टीका की रचना विक्रम संवत् १२४८ मतान्तर से विक्रम संवत् १२७८ में की थी। टीका प्रशस्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

में इस टीका के रचनाकाल का शब्दों के माध्यम से "करिसागर रविसंख्ये" ऐसा निर्देश किया गया है। यहाँ यह मतभेद इसलिए है कि सागर शब्द से कुछ लोग चार और कुछ लोग सात की संख्या का ग्रहण करते हैं। सागर से चार संख्या का ग्रहण करने पर टीका का रचनाकाल वि०सं० १२४८ और सात संख्या ग्रहण करने पर टीका का रचनाकाल वि०सं० १२७८ निर्धारित होता है। इनमें से चाहे कोई भी संवत् निश्चित हो किन्तु इतना निश्चित है कि विक्रम की तेरहवीं शती के उत्तरार्ध में यह टीका ग्रन्थ निर्मित हो चुका था। मेरी दृष्टि में यदि **प्रवचनसारोद्धार** बृहद्गच्छीय नेमिचन्द्रसूरि (द्वितीय) के जीवन के उत्तरार्ध की और **अनंतनाहचरियं** के बाद की रचना है तो वह विक्रम संवत् १२१६ के पश्चात् लगभग वि०सं० १२३० के आसपास कभी लिखा गया होगा क्योंकि **अनंतनाहचरियं** को समाप्त करके इसे लिखने में १०-१५ वर्ष अवश्य लगे होंगे। पुनः मूलग्रन्थ और उसकी टीका के रचनाकाल के मध्य भी कम से कम १५-२० वर्ष का अन्तर तो अवश्य ही मानना होगा। मूलग्रन्थ और उसकी टीका उसी स्थिति में समकालिक हो सकते हैं जबकि टीका या तो स्वोपज्ञ हो या अपने शिष्य या गुरुभ्राता के द्वारा लिखी गई हो।

प्रस्तुत कृति के टीकाकार सिद्धसेनसूरि नेमीचन्द्रसूरि की बृहदगच्छीय देवसूरि की परम्परा से भिन्न चन्द्रगच्छीय अभयदेवसूरि की शिष्य परम्परा के थे।

टीकाकार सिद्धसेनसूरि की गुरू परम्परा इस प्रकार है—

चन्द्रगच्छीय अभयदेवसूरि

धनेश्वरसूरि (मुञ्जनृप के समकालीन)

अजितसिंहसूरि

देवचन्द्रसूरि

चन्द्रप्रभ (मुनिपति)

भद्रेश्वरसूरि

अजितसिंहसूरि

देवप्रभसूरि (**प्रमाणप्रकाश** एवं **श्रेयासंचरित्र** के कर्ता)

सिद्धसेनसूरि (**प्रवचनसारोद्धार** के टीकाकार)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्ञातव्य है इस काल में जब ग्रन्थों की हाथ से प्रतिलिपि तैयार कराकर उन्हें प्रसारित किया जाता था तब उन्हें दूसरे लोगों के पास पहुंचने में पर्याप्त समय लग जाता था। अतः प्रस्तुत कृति से सिद्धसेनसूरि को परिचित होने और पुनः उस पर टीका लिखने में पच्चीस-तीस वर्ष का अन्तराल तो अवश्य ही रहा होगा। अतः यदि टीका विक्रम की तेरहवीं शती के पूर्वार्ध के द्वितीय चरण विक्रम संवत् १२४८ में लिखी गई है तो मूलकृति कम से कम विक्रम की तेरहवीं शती के प्रथम चरण अर्थात् वि०सं० १२२५-३० में लिखी गई होगी। अतः **प्रवचनसारोद्धार** की रचना १२२५ के आस–पास कभी हुई होगी।

प्रवचनसारोद्धार मौलिक रचना है या मात्र संग्रह ग्रन्थ ?

प्रवचनसारोद्धार आचार्य नेमिचन्द्रसूरि की मौलिक कृति है या एक संकलन ग्रन्थ है , इस प्रश्न का उत्तर देना अत्यन्त कठिन है क्योंकि प्रस्तुत ग्रन्थ में ६०० से अधिक गाथाएँ ऐसी हैं जो आगम ग्रन्थों, निर्युक्तियों, भाष्यों, प्रकीर्णकों, प्राचीन कर्म ग्रन्थों एवं **जीवसमास** आदि प्रकरण ग्रन्थों में उपलब्ध हो जाती हैं। **प्रवचनसारोद्धार** की भारतीय प्राच्य तत्व प्रकाशन समिति पिण्डवाड़ा से प्रकाशित प्रति में उसके विद्वान सम्पादक मुनिश्री पद्मसेन विजयजी और मुनिश्री चन्द्रविजय जी ने इसकी लगभग ५०० गाथाऐं जिन -जिन ग्रन्थों से ली गयी हैं, उनके मूल स्रोत का निर्देश किया है। इनके अतिरिक्त भी अनेक गाथायें ऐसी हैं जो **आवश्यकसूत्र** की **हरिभद्रीयवृत्ति** आदि प्राचीन टीका ग्रन्थों में उद्धृत हैं। पुनः पार्श्वनाथ विद्यापीठ के मेरे शिष्य डॉ० श्रीप्रकाश पाण्डेय की सूचना के अनुसार **प्रवचनसारोद्धार** में सात प्रकीर्णकों की लगभग ७२ गाथाएँ मिलती हैं। कहीं-कहीं पाठ भेद को छोड़कर ये गाथाऐं भी **प्रवचनसारोद्धार** में समान रूप से ही उपलब्ध होती हैं। इसमें देविदत्थओं की ७, गच्छाचार की१, ज्योतिष्करण्डक की ३, **तित्थोगाली** की ३२, **आराधनापताका** (प्राचीन) की २०, **आराधनापताका** (वीरभद्राचार्य रचित) की ६ एवं **पज्जंताराहणा** (**पर्यन्त-आराधना**) की ४ गाथायें मिलती हैं । यह भी स्पष्ट है कि ये सभी प्रकीर्णक नेमिचद्रसूरि के **प्रवचनसारोद्धार** से प्राचीन हैं। यह निश्चित है कि इन गाथाओं की रचना ग्रन्थकार ने स्वयं नहीं की है, अपितु इन्हें पूर्व आचार्यों द्वारा रचित ग्रन्थों से यथावत् ले लिया है। मात्र इतना ही नहीं अभी भी अनेक ग्रन्थ ऐसे हैं जिनकी गाथा सूचियों के साथ **प्रवचनसारोद्धार** की गाथाओं का तुलनात्मक अध्ययन नहीं हुआ है। **अंगविज्जा** जैसे कुछ प्राचीन ग्रन्थों में और भी समान गाथायें मिलने की संभावना है इससे ऐसा लगता है कि **प्रवचनसारोद्धार** की लगभग आधी गाथायें तो अन्य ग्रन्थों से संकलित हैं। ऐसी स्थिति में नेमिचन्द्रसूरि को ग्रन्थकार या कर्ता मानने पर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनेक विपत्तियां सामने आती हैं किन्तु जब तक सम्पूर्ण ग्रन्थ की सभी गाथायें संकलित न हों तब तक अवशिष्ट गाथाओं के रचनाकार तो नेमिचन्द्रसूरि (द्वितीय) को ही मानना होगा। प्राचीन काल में ग्रन्थ रचना करते समय आगम अथवा प्राचीन आचार्यों की कृतियों से बिना नाम निर्देश के गाथायें उद्धृत कर लेने की प्रवृत्ति रही है और इस प्रकार की प्रवृत्ति श्वेताम्बर एवं दिगम्बर दोनों ही परम्पराओं के रचनाकारों में पाई जाती है। उदाहरण के रूप में **मूलाचार** में **उत्तराध्ययनसूत्र, आवश्यकनिर्युक्ति, आतुरप्रत्याख्यान, महाप्रत्याख्यान** आदि अनेक ग्रन्थों की २०० से अधिक गाथायें उद्धृत हैं। यही स्थिति **भगवतीआराधना** एवं आचार्य कुन्दकुन्द के **नियमसार** आदि ग्रन्थों की भी है।

नियमसार षट्प्राभृत आदि की अनेक गाथाएं श्वेताम्बर आगमों, प्रकीर्णकों, निर्युक्तियों एवं भाष्यों आदि में समरूप मिलती हैं। श्वेताम्बर मान्य आगमों में भी **संग्रहणी सूत्र** आदि की एवं प्रकीर्णकों में एक दूसरे की अनेक गाथायें अवतरित की गई हैं। इस प्रकार अपने ग्रन्थों में अन्य ग्रन्थों से गाथायें अवतरित करने की परम्परा प्राचीनकाल से चली आ रही है।

ऐसी स्थिति में जब दूसरे -दूसरे आचार्यों को तत् - तत् ग्रन्थ का रचनाकार मान लिया जाता है तो फिर नेमिचंद्रसूरि (द्वितीय) को प्रस्तुत कृति का कर्ता मान लेने पर कौन सी आपत्ति है? पुनः १६०० गाथाओं के इस ग्रन्थ में यदि ६०० गाथायें अन्यकृतक हैं भी तो शेष १००० गाथाओं के रचनाकार तो नेमीचन्द्रसूरि (द्वितीय) हैं ही। **प्रवचनसारोद्धार** की कौन सी गाथा किस ग्रन्थ में किस स्थान पर मिलती है अथवा अन्य ग्रन्थों की कौन सी गाथाएँ **प्रवचनसारोद्धार** के किस क्रम पर हैं इसकी सूची इसी लेख के अन्त में यथास्थान प्रस्तुत है -

जैसा कि लेख के प्रारम्भ में कहा जा चुका हैं **प्रवचनसारोद्धार** पर आचार्य सिद्धसेनसूरि की लगभग विक्रम की १३वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में लिखी गई 'तत्त्वज्ञान-विकासिनी' नामक एक सरल किन्तु विशद टीका उपलब्ध होती है। टीकाकार सिद्धसेनसूरि की तीन अन्य कृतियों— १. **पद्मप्रभचरित्र** २. **समाचारी** और ३. एक **स्तुति** का उल्लेख मिलता है।

प्रवचनसारोद्धार की 'तत्त्वज्ञान-विकासिनी' नामक यह वृत्ति या टीका टीकाकार की बहुश्रुतता को अभिव्यक्त करती है। उन्होंने इसमें लगभग १०० ग्रन्थों का निर्देश किया है और उनके ५०० से अधिक सन्दर्भों का संकलन किया है। इन उद्धरणों की सूची भी पिण्डवाडा से प्रकाशित **प्रवचनसारोद्धार** भाग-२ के अन्त में दे दी गई है। इससे वृत्तिकार की बहुश्रुतता प्रामाणित हो जाती है। वृत्तिकार ने जहां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आवश्यकता हुई वहां न केवल अपनी विवेचना प्रस्तुत की अपितु पूर्व पक्ष को प्रस्तुत कर उसका समाधान भी किया। जहां कहीं भी उन्हें व्याख्या में मतभेद की सूचना प्राप्त हुई उन्होंने स्पष्ट रूप से अन्य मत का भी निर्देश किया है। इसी प्रकार जहां मूलपाठ के सन्दर्भ में किसी प्रकार की विप्रतिपत्ति दिखाई दी उन्होंने पाठ को अपनी दृष्टि से शुद्ध बनाने का भी प्रयत्न किया है। इस प्रकार प्रस्तुत ग्रन्थ की यह टीका भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।

प्रवचनसारोद्धार की विषयवस्तु :-

प्रवचनसारोद्धार के प्रारम्भ में मंगल अभिधान के पश्चात् ६३ गाथाओं में इस के २७६ द्वारों का उल्लेख किया गया है। इन द्वारों के नामों को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रस्तुत कृति में जैनधर्मदर्शन के विविध पक्षों को समाहित करने का प्रयत्न किया गया है। यद्यपि **प्रवचनसारोद्धार** में मूल गाथाओं की संख्या मात्र १५९९ है फिर भी इसमें जैन धर्म दर्शन के अनेक महत्त्वपूर्ण पक्षों को समाहित करने का प्रयास किया गया है। मूल गाथाओं की संख्या कम होते हुए भी इसका विषय वैविध्य इतना है कि इसे "जैन धर्म दर्शन का लघु विश्वकोष" कहा जा सकता है। आगे हम इसके २७६ द्वारों की विषयवस्तु का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करेंगे।

प्रवचनसारोद्धार के प्रथम द्वार में चैत्यवंदन विधि का विवेचन किया गया है। चैत्यवंदन के सम्बन्ध में सर्वप्रथम दस त्रिकों की चर्चा की गई है। ये दस त्रिक निम्न हैं– १. त्रिनिषेधिका २. त्रिप्रदक्षिणा ३. त्रिप्रणाम ४. त्रिविधपूजा ५. त्रिअवस्था भावना ६. त्रिदशानिरीक्षण विरति ७. त्रिविध भूमि प्रमार्जन ८. वर्णत्रिक ९. मुद्रात्रिक और १०. प्रणिधान त्रिक।

चैत्यवन्दन हेतु जिन–भवन में प्रवेश करते सर्वप्रथम पुष्प, ताम्बूल आदि सचित्त द्रव्यों का परिहार करे, आभूषण आदि अचित्त द्रव्यों का परिहार नहीं करे और एक अधोवस्त्र तथा एक उत्तरीय धारण करे। ज्ञातव्य है कि कुछ आचार्यों के अनुसार यहाँ अहंकार सूचक अचित्त द्रव्य जैसे छत्र, चामर, मुकुट आदि के भी त्याग का निर्देश है। **प्रवचनसारोद्धार** की **टीका** इस सम्बन्ध में विस्तृत विवेचना करती है। चक्षु द्वारा जिन प्रतिमा दिखाई देने पर अंजलि प्रग्रह करे और एकाग्रचित्त होकर पूर्वोक्त दसत्रिकों का अनुसरण करता हुआ जिन प्रतिमा को वन्दन करे । ये दसत्रिक निम्नानुसार हैं–

१. सर्वप्रथम निषेधिकात्रिक में गृही जीवन सम्बन्धी सावद्य व्यापार का प्रतिषेध २. जिन भवन सम्बन्धी सावद्य व्यापार का त्याग और ३. पूजा विधान सम्बन्धी सावद्य व्यापार का त्याग। कुछ अन्य आचार्यों के अनुसार ये तीन निषेधिकाएं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इस प्रकार हैं–

१. जिन मन्दिर के मुख्य द्वार पर आकर गृह सम्बन्धी कार्यों का निषेध करें २. फिर जिन–मन्दिर के मध्य भाग (रंग–मण्डप) में प्रवेश करते समय सावद्य (हिंसक) वचन–व्यापार का निषेध करें और ३. गर्भगृह में प्रवेश करने पर सभी सावद्य (हिंसक) कार्यों के मानसिक चिन्तन का भी निषेध करें – यह निषेधिकात्रिक है।

२. जिन प्रतिमा की तीन प्रदक्षिणा करना प्रदक्षिणा त्रिक है।

३. जिन प्रतिमा को तीन बार प्रणाम करना प्रणाम त्रिक है।

४. पूजात्रिक के अन्तर्गत तीन प्रकार की पूजा का उल्लेख किया गया है– १. पुष्प पूजा २. अक्षत पूजा और ३. स्तुति पूजा ।

५. जिन की छद्मस्थ, कैवल्य और सिद्ध– इन तीन अवस्थाओं का चिन्तन करना त्रि–अवस्था भावना है।

६. तीन दिशाओं में न देखकर मात्र जिन–बिम्ब के सन्मुख दृष्टि रखना त्रिदिशानिरीक्षणविरति है।

७. जिस भूमि पर स्थित रहकर जिन प्रतिमा को वन्दन करना है उस स्थल का गृहस्थ द्वारा वस्त्र अञ्चल से और मुनि द्वारा रजोहरण से तीन बार प्रमार्जन करना प्रमार्जनात्रिक है।

८. शब्द, अर्थ एवं आलम्बन (प्रतिमा) ये वर्ण–त्रिक हैं।

९. मुद्रात्रिक के अन्तर्गत तीन प्रकार की मुद्राएं बतायी गई हैं १. जिनमुद्रा २. योगमुद्रा ३. मुक्ताशुक्ति मुद्रा ।

१०. मन, वचन और काया की प्रवृतियों का संवरण करके परमात्मा की शरण ग्रहण करना प्रणिधान त्रिक है।

चैत्यवन्दनद्वार में उपरोक्त दश त्रिकों के साथ–साथ स्तुति एवं वन्दन विधि का तथा द्वादश अधिकारों का विवेचन है। अन्त में चैत्यवन्दन कब और कितनी बार करना आदि की चर्चा के साथ चैत्यवन्दन के जघन्य, मध्यम एवं उत्कृष्ट भेदों का विवेचन करते हुए यह चैत्यवन्दन द्वार समाप्त होता है।

चैत्यवन्दन नामक प्रथम द्वार के पश्चात् **प्रवचनसारोद्धार** का दूसरा द्वार गुरुवन्दन के विधि–विधा एवं दोषों से सम्बन्धित है। प्रस्तुत कृति में गुरुवन्दन के १९२ स्थान वर्णित किये गये हैं– मुखवस्त्रिका, काय (शरीर) और आवश्यक क्रिया इन तीनों में प्रत्येक के पच्चीस–पच्चीस स्थान बताये गये हैं। इनके अतिरिक्त स्थान सम्बन्धी छः, गुण सम्बन्धी छः, वचन सम्बन्धी छः, अधिकारी को वन्दन न करने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्बन्धी पाँच और अनधिकारी को वन्दन करने सम्बन्धी पाँच स्थान और प्रतिषेध सम्बन्धी पाँच स्थान बताये हैं। इसी क्रम में अवग्रह सम्बन्धी एक, अभिधान सम्बन्धी पाँच, उदाहरण सम्बन्धी पाँच, आशातना सम्बन्धी तेंतीस, वन्दन दोष सम्बन्धी बतीस एवं कारण सम्बन्धी आठ ऐसे कुल १९२ स्थानों का उल्लेख है। इस चर्चा में मुखवस्त्रिका के द्वारा काय अर्थात् शरीर के किन–किन भागों का कैसे प्रमार्जन करना चाहिए इसका विस्तृत एवं रोचक विवरण है। इसी क्रम में गुरुवन्दन करते समय खमासना के पाठ का किस प्रकार से उच्चारण करना तथा उस समय कैसी क्रिया करनी चाहिए इसका भी इस द्वार में निर्देश है। वन्दन के अनधिकारी के रूप में – १. पार्श्वस्थ २. अवसन्न ३. कुशील ४. संसक्त और ५. यथाछन्द ऐसे पाँच प्रकार के श्रमणों का न केवल उल्लेख किया गया है, अपितु उनके स्वरूप का भी विस्तृत विवरण दिया गया है। इसी क्रम में शीतलक, क्षुल्लक, श्रीकृष्ण, सेवक और पालक के दृष्टान्त भी दिये गये हैं। अन्त में तेंतीस, आशातनाओं और वन्दन सम्बन्धी बत्तीस दोषों एवं वन्दना के आठ कारण का विस्तारपूर्वक विवेचन किया गया है।

इस प्रकार प्रथम एवं द्वितीय द्वार लगभग १०० गाथाओं में सम्पूर्ण होते हैं।

प्रवचनसारोद्धार के तीसरे द्वार में दैवसिक, रात्रिक, पाक्षिक, चातुर्मासिक और सांवत्सरिक प्रतिक्रमण की विधि तथा इनके अन्तर्गत किये जाने वाले कायोत्सर्ग एवं क्षामणकों (खमासना) की विधि का विवेचन किया गया है। इसमें यह भी बताया गया है कि दैवसिक–प्रतिक्रमण में चार, रात्रिक प्रतिक्रमण में दो, पाक्षिक में बारह, चातुर्मासिक में बीस और सांवत्सरिक में चालीस लोगस्स का ध्यान करना चाहिए। पुनः इसी प्रसंग में इनकी श्लोक संख्या एवं श्वासोश्वास की संख्या का भी वर्णन किया गया है। इस दृष्टि से दैवसिक प्रतिक्रमण में १००, रात्रिक में ५०, पाक्षिक में ३००, चातुर्मासिक में ५०० और वार्षिक में १००० श्वासोश्वास का ध्यान करना चाहिए। इसी क्रम में आगे क्षामणकों (गुरु से क्षमायाचना सम्बन्धी पाठ) की संख्या का भी विचार किया गया है।

चतुर्थ प्रत्याख्यान द्वार में सर्वप्रथम निम्न दस प्रत्याख्यानों की चर्चा है– १. भविष्य सम्बन्धी २. अतीत सम्बन्धी ३. कोटि सहित ४. नियन्त्रित ५. साकार ६. अनाकार ७. परिमाण व्रत ८. निरवशेष ९. सांकेतिक और १०. काल सम्बन्धी प्रत्याख्यान। सांकेतिक प्रत्याख्यान में दृष्टि, मुष्ठि, ग्रन्थी आदि जिन आधारों पर सांकेतिक प्रत्याख्यान किये जाते हैं उनकी चर्चा है। इसी क्रम में आगे समय सम्बन्धी दस प्रत्याख्यानों की चर्चा की गई है इसमें नवकारसी, अर्द्ध–पौरुषी, पौरुषी आदि के प्रत्याख्यानों की चर्चा है। इसी क्रम में दस विकृतियों (विगयों) की, बत्तीस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनन्तकायों की और बावीस अभक्ष्यों की भी चर्चा की गई है। साथ ही इसमें शुद्ध प्रत्याख्यान के कारण एवं स्वरूप का विवेचन भी है। पाँचवां कायोत्सर्ग द्वार है। इसके अन्तर्गत मुख्य रूप से कायोत्सर्ग के १९ दोषों की चर्चा की गई है इसी क्रम में इन दोषों के स्वरूप का भी किञ्चित् दिग्दर्शन कराया गया है।

प्रवचनसारोद्धार का छठां द्वार श्रावक प्रतिक्रमण के अतिचारों का वर्णन करता है। इसके अन्तर्गत संलेखना के पाँच, कर्मादान के पन्द्रह, ज्ञानाचार के आठ, दर्शनाचार के आठ, चारित्राचार के आठ, तप के बारह, वीर्य के तीन, सम्यकत्त्व के पाँच, अहिंसा आदि पाँच अणुव्रतों, दिक्व्रत आदि तीन गुणव्रतों, सामायिक आदि चार शिक्षाव्रतों–ऐसे श्रावक के बारह व्रतों के साठ अतिचारों का उल्लेख है। यह समस्त विवरण श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र के अनुरूप ही है।

प्रवचनसारोद्धार के सप्तमद्वार में भरत एवं ऐरावत क्षेत्र में हुए तीर्थंकरों (जिन) के नामों की सूची प्रस्तुत की गई है इसके अन्तर्गत जहाँ भरत क्षेत्र के अतीत, वर्तमान और अनागत तीनों चौबीसियाँ के जिनों के नाम दिये गये हैं वहीं ऐरावत क्षेत्र के वर्तमान काल के जिनों के ही नाम दिये गये हैं।

हम देखते हैं कि **प्रवचनसारोद्धार** के प्रथम सात द्वारों तक तो अपने भेद–प्रभेदों के साथ विषयों का विस्तार से विवेचन हुआ है। किन्तु आठवें द्वार से विवेचन संक्षिप्त रूप में ही किया गया है।

इसी क्रम में अष्टम द्वार में चौबीस तीर्थंकरों के प्रथम गणधरों के नामों का भी उल्लेख है।

नवम द्वार के अन्तर्गत प्रत्येक तीर्थंकर की प्रवर्तनियों अर्थात् साध्वी–प्रमुखाओं के नामों का उल्लेख किया गया है।

दशम–द्वार के अन्तर्गत तीर्थंकर नामकर्म के उपार्जन हेतु जिन बीस स्थानकों की साधना की जाती है, उनकी चर्चा है। यह विवेचन **ज्ञाताधर्मकथा** के मल्ली अध्ययन में मिलता है।

ग्यारहवें द्वार में तीर्थंकरों की माताओं का उल्लेख है।

बारहवें–द्वार में तीर्थंकरों की माताएँ अपने देह का त्याग कर किस गति में उत्पन्न हुईं, इसकी चर्चा है।

तेरहवां–द्वार किसी काल विशेष में जिनों की जघन्य और उत्कृष्ट संख्या का विचार करता है।

चौहदवें–द्वार के अन्तर्गत यह बताया गया है कि किस जिन के जन्म के समय लोक में अधिकतम और न्यूनतम जिनों की संख्या कितनी थी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पन्द्रहवां द्वार जिनों के गणधरों की समग्र संख्या का विवेचन करता है। इसी क्रम में आगे सोलहवें–द्वार में मुनियों की संख्या का, सत्रहवें –द्वार में साध्वियों की संख्या का, अठारहवें–द्वार में जिनों के वैक्रिय लब्धिधारक मुनियों की संख्या का, उन्नीसवें–द्वार में वादियों की संख्या का, बीसवें–द्वार में अवधि ज्ञानियों की संख्या का, इक्कीसवें–द्वार में केवल ज्ञानियों की संख्या का, बावीसवें द्वार में मन: पर्यवज्ञानियों की संख्या का, तेवीसवें– द्वार में चतुर्दश पूर्वों के धारकों की संख्या का, चौबीसवें–द्वार में जिनों के श्रावकों की संख्या का और पच्चीसवें–द्वार में श्राविकाओं की संख्या का निर्देश हुआ है।

इसी क्रम में छब्बीसवां–द्वार तीर्थंकरों के शासन–सहायक यक्षों के नाम का उल्लेख करता है तो सत्ताइसवां द्वार यक्षणियों के नामों को सूचित करता है।

प्रवचनसारोद्धार का अठावीसवां द्वार तीर्थंकरों के शरीर के परिमाण (लम्बाई) का निर्देश करता है तो उनतीसवां द्वार प्रत्येक तीर्थंकरों के विशिष्ट लांछन की चर्चा करता है।

तीसवें–द्वार में तीर्थंकरों के वर्ण अर्थात् शरीर के रंग की चर्चा की गई है।

इकतीसवां–द्वार किस तीर्थंकर के साथ कितने व्यक्तियों ने मुनिधर्म स्वीकार किया उनकी संख्या का निर्देश करता है।

बत्तीसवां–द्वार तीर्थंकरों की आयु का निर्देश करता है।

तेतीसवें–द्वार में प्रत्येक तीर्थंकरों ने कितने मुनियों के साथ निर्वाण प्राप्त किया, इसका उल्लेख है तो चौतीसवां–द्वार किस तीर्थंकर ने किस स्थान पर निर्वाण प्राप्त किया, इसका उल्लेख करता हैं ।

"पैंतीसवां-द्वार' तीर्थंकरों एवं अन्य शलाकापुरुषों के मध्य कितने-कितने काल का अन्तराल रहा है, इसका विवेचन प्रस्तुत करता है जबकि छत्तीसवें द्वार में इस बात की चर्चा है कि किस तीर्थंकर का तीर्थ या शासन कितने काल तक चला और बीच में कितने काल का अन्तराल रहा। इसप्रकार हम देखते हैं कि सातवें द्वार से लेकर छत्तीसवें द्वार तक उन्तीस द्वारों में मुख्यत: तीर्थंकरों से सम्बन्धित विभिन्न तथ्यों का निर्देश किया गया है।

'सैंतीसवें द्वार' से लेकर 'सन्तानवे -द्वार तक इकसठ द्वारों में पुन: जैन सिद्धान्त और आचार सम्बन्धी विवेचन प्रस्तुत किये गये हैं। यद्यपि बीच में कहीं–कहीं तीर्थंकरों के तप आदि का भी निर्देश है। सैंतीसवें द्वार में दस आशातनाओं का उल्लेख है तो अड़तीसवें द्वार में चौरासी आशातनाओं का उल्लेख है। इसी चर्चा के प्रसंग में इस द्वार में मुनिचैत्य में कितने समय तक रह सकता है इसकी चर्चा भी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हुई है।

'उन्तालीसवें-द्वार' में तीर्थंकरों के आठ महाप्रतिहार्यों और 'चालीसवें-द्वार' में तीर्थंकरों के चौंतीस अतिशयों (विशिष्टताओं) की चर्चा है।

'इकतालीसवां-द्वार' उन अठारह दोषों का उल्लेख करता है,जिनसे तीर्थंकर मुक्त रहते हैं। दूसरे शब्दों में जिनको उन्होंने नष्ट कर दिया है।

'बयालीसवां-द्वार' जिन-शब्द के चार निक्षेपों की चर्चा करता है और यह बताता है कि ऋषभ, शान्ति, महावीर आदि जिनों के नाम नामजिन हैं जबकि कैवल्य और मुक्ति को प्राप्त जिन भावजिन अर्थात यथार्थजिन हैं। जिन-प्रतिमा को स्थापना जिन कहा जाता है और जो भविष्य में जिन होने वाले हैं वे द्रव्यजिन कहलाते हैं।

'तिरालीसवां-द्वार किस तीर्थंकर ने दीक्षा के समय कितने दिन का तप किया था इसका विवेचन करता है इसी क्रम में चवालीसवें द्वार में किस तीर्थंकर को केवलज्ञान उत्पन्न होने के समय कितने दिन का तप था, इसका उल्लेख है। आगे पैतालीसवें-द्वार में तीर्थंकरों द्वारा अपने निर्वाण के समय किये गये तप का उल्लेख है।

प्रस्तुत कृति का छियालीसवां-द्वार उन जीवों का उल्लेख करता है जो भविष्य में तीर्थंकर होने वाले हैं।

सैतालीसवें-द्वार में इस बात की चर्चा की गई है कि उर्ध्वलोक, तिर्यकलोक, जल, स्थल आदि स्थानों से एक साथ कितने व्यक्ति मुक्ति को प्राप्त कर सकते हैं।

'अड़तालीसवां-द्वार हमें यह सूचना देता है कि एक समय में एक साथ कितने पुरुष, कितनी स्त्रियां अथवा कितने नपुंसक सिद्ध हो सकते हैं।

उनचासवें-द्वार में सिद्धों के भेदों की चर्चा है। ज्ञातव्य है कि वैसे तो सिद्धों में कोई भेद नहीं होता किन्तु जिस पर्याय/अवस्था से सिद्ध हुए हैं, उसके आधार पर सिद्धों के पन्द्रह भेदों की चर्चा की गई है।

पचासवें द्वार में सिद्धों की अवगाहना अर्थात् उनके आत्म-प्रदेशों के विस्तार-क्षेत्र की चर्चा की गई है। इसी क्रम में यह बताया गया है कि उत्कृष्ट अवगाहना वाले दो, जघन्य अवगाहना वाले चार तथा मध्यम अवगाहना वाले एक सौ आठ व्यक्ति एक साथ सिद्ध हो सकते हैं। अवगाहना के सन्दर्भ में चर्चा करते हुए प्रस्तुत कृति के टीकाकार ने यह भी बताया है कि उत्कृष्ट अवगाहना पांच सौ धनुष और जघन्य अवगाहना दो हाथ परिमाण होती है। यहां यह ज्ञातव्य है कि सिद्धों की उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य अवगाहना के सन्दर्भ में विशेष चर्चा प्रस्तुत कृति के छप्पनवें, सत्तावनवें एवं अट्ठावनवें द्वार में भी की गयी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'इकावनवें-द्वार में स्वलिंग, अन्यलिंग और गृहस्थलिंग की अपेक्षा से एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं इसका विवेचन किया गया है। गृहस्थ लिंग से चार, अन्यलिङ्ग से दस और स्वलिंग से एक सौ आठ व्यक्ति एक समय में सिद्ध हो सकते हैं। आगे 'बावनवें-द्वार में यह बताया गया है कि निरन्तर अर्थात् बिना अन्तराल कितने समय तक जीव सिद्ध हो सकते हैं और उनकी संख्या कितनी होती है।

'त्रेपनवें-द्वार में स्त्री, पुरुष और नपुंसक की अपेक्षा से एक समय में कितने व्यक्ति सिद्ध हो सकते हैं, इसकी चर्चा है। इस सन्दर्भ में यह बताया गया है कि एक समय में बीस स्त्रियां, एक सौ आठ पुरुष और दस नपुंसक शरीर पर्याय से सिद्ध हो सकते हैं। पुनः इसी द्वार में यह भी बताया गया है कि नरक, भवनपति, व्यंतर और तिर्यकलोक के स्त्रीपुरुष तथा अकल्पवासी अर्थात् गैवेयक एवं अनुत्तरविमानवासी देव पुनः मनुष्यभव ग्रहण करके मुक्ति प्राप्त करते हैं तो वे एक समय में अधिकतम दस-दस व्यक्ति ही सिद्ध हो सकते हैं। कल्पवासी देवों से मनुष्य जन्म ग्रहण कर मुक्त होने वाले जीवों की अधिकतम संख्या एक सौ साठ हो सकती है। पृथ्वीकायिक, अप्कायिक और पंकप्रभा आदि से मनुष्य भव ग्रहण करके मुक्ति प्राप्त करने वाले एक समय में चार-चार व्यक्ति ही सिद्ध हो सकते हैं।

चौपनवें-द्वार में सिद्धों के आत्म-प्रदेशों के संस्थान (विस्तार क्षेत्र) की चर्चा की गई है। इस चर्चा में उत्तानक, अर्धअवनत, पार्श्वस्थित, स्थित, उपविष्ट आदि संस्थानों की चर्चा भी की गई है। इसके पश्चात् पचपनवें द्वार में सिद्धों की अवस्थिति की चर्चा है। वस्तुतः इस प्रसंग में सिद्ध शिला के ऊपर और अलोक से नीचे कितने मध्य भाग में सिद्ध अवस्थित रहे हुए हैं, यह बताया गया है। पुनः जैसा कि हमने पूर्व में सूचित किया है ५६-५७ वें और ५८वें द्वार में सिद्धों की उत्कृष्ट-मध्यम और जघन्य अवगाहना की चर्चा की गई है। उन्सठवें द्वार में लोक की शाश्वत जिन प्रतिमाओं का उल्लेख है।

साठवें द्वार में जिन कल्प का पालन करने वाले मुनियों के और इकसठवें द्वार में स्थविर कल्प का पालन करने वाले मुनियों के उपकरणों का उल्लेख है। इसी प्रसंग में स्वयं बुद्ध और प्रत्येक बुद्ध के स्वरूप की चर्चा भी की गयी है।

बासठवें द्वार में साध्वियों के उपकरणों की चर्चा है। जबकि त्रेसठवां द्वार जिन कल्पिकों की संख्या के सम्बन्ध में विवेचन करता है, चौसठवें द्वार में आचार्य के ३६ गुणों का निर्देश किया गया है, इसी प्रसंग में आचार्य की आठ सम्पदाओं की भी विस्तार से चर्चा की गई है। ज्ञातव्य है कि यहाँ आचार्य के इन छत्तीस गुणों की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चर्चा अनेक अपेक्षाओं से उपलब्ध होती है।

पैसठवें द्वार में जहाँ विनय के बावन भेदों की चर्चा है, वहीं छियासठवें द्वार में चरण सत्तरी और सड़सठवें द्वार में करण सत्तरी का विवेचन है। पंच महाव्रत, दस श्रमण धर्म, सत्रह प्रकार का संयम, दस प्रकार की वैयावृत्य, नौ ब्रह्मचर्य गुप्तियां, तीन रत्नत्रय, बारह तप और क्रोध आदि चार कषायों का निग्रह ये चरण सत्तरी के सत्तर भेद हैं।

प्रस्तुत कृति में यह भी बताया गया है कि अन्य-अन्य आचार्यों की कृतियों में चरण सत्तरी के इन सत्तर भेदों का वर्गीकरण किस-किस प्रकार से किया गया है।

करण-सत्तरी के अन्तर्गत सोलह उद्गम दोषों, सोलह उत्पादन दोषों, दस एषणा दोषों, पांच ग्रासेषणा दोषों, पांच समितियों, बारह भावनाओं, पांच इन्द्रियों का निरोध, तीन गुप्ति आदि की चर्चा की गई है।

अड़सठवें द्वार में जंघाचारण और विद्याचारण लब्धि अर्थात् आकाश गमन सम्बन्धी विशिष्ट शक्तियों की चर्चा की गई है।

उनहत्तरवें द्वार में परिहार विशुद्धि तप के स्वरूप का और सत्तरवें द्वार में यथालन्दिक के स्वरूप का विवेचन है।

इकहत्तरवें द्वार में अड़तालीस निर्यामकों और उनके कार्य विभाजन की चर्चा है। निर्यामक समाधिमरण ग्रहण किये हुए मुनि की परिचर्या करने वाले मुनियों को कहा जाता है।

बहत्तरवें द्वार में पंच महाव्रतों की पच्चीस भावनाओं की विवेचना की गई है। इसी क्रम में तिहत्तरवां द्वार आसुरी आदि पच्चीस अशुभ भावनाओं का विवेचन करता है।

चौहत्तरवें द्वार में विभिन्न तीर्थंकरों के काल में महाव्रतों की संख्या कितनी होती है, इसका निर्देश किया गया है।

७५वें द्वार में चौदह कृतिकर्मों की चर्चा है। कृतिकर्म का तात्पर्य आचार्य आदि ज्येष्ठ मुनियों के वंदन से है।

७६वें द्वार में भरत, ऐरावत आदि क्षेत्रों में कितने चारित्र होते हैं, इसकी चर्चा करता है। प्रथम और अंतिम तीर्थंकर के समय में भरत और ऐरवत क्षेत्र में सामायिक आदि पांच चारित्र पाये जाते हैं किन्तु शेष बाइस तीर्थंकरों के समय में इन क्षेत्रों में सामायिक, सूक्ष्म सम्पराय और यथाख्यात ये तीन चारित्र उपलब्ध होते हैं। महाविदेह क्षेत्र में पूर्वोक्त तीन चारित्र ही होते हैं। इन क्षेत्रों में छेदोपस्थापनीय और परिहार विशुद्धि चारित्र का कदाचित् अभाव होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७७वें और ७८वें द्वार में यह बताया गया है कि दस स्थितिकल्पों में मध्यवर्ती बाईस तीर्थंकरों के समय में चार स्थित, छः वैकल्पिक कल्प होते हैं जबकि प्रथम और अन्तिम तीर्थंकर के समय में दस ही स्थित कल्प होते हैं।

७९ वें द्वार में निम्न प्रकार के चैत्यों का उल्लेख हुआ है — (१) भक्ति चैत्य (२) मंगल चैत्य (३) निश्राकृत चैत्य (४) अनिश्राकृत चैत्य और (५) शाश्वत चैत्य।

८०वें द्वार में निम्न पांच प्रकार की पुस्तकों का उल्लेख हुआ है — (१) गण्डिका (२) कच्छपी (३) मुष्टि (४) संयुक्त फलक (५) छेदपाटी। इसी क्रम में ८१ वें द्वार में पांच प्रकार के दण्डों का, ८२ वें द्वार में पांच प्रकार के तृणों का, ८३ वें द्वार में पांच प्रकार के चमड़े का और ८४ वें द्वार में पांच प्रकार के वस्त्रों का विवेचन किया गया है।

८५वें द्वार में पांच प्रकार के अवग्रहों (ठहरने के स्थानों) का और ८६ वें द्वार में बाइस परीषहों का विवेचन किया गया है।

८७वें द्वार में सात प्रकार की मण्डलियों का उल्लेख है तो ८८ वें द्वार में जम्बूस्वामी के समय में जिन दस बातों का विच्छेद हुआ, उनका उल्लेख है।

८९वें द्वार में क्षपक श्रेणी का और ९०वें द्वार में उपशम श्रेणी का विवेचन है।

९१वें द्वार में स्थण्डिल भूमि (मूल–मूत्र विसर्जन करने का स्थान) कैसी होनी चाहिए- इसका विवेचन उपलब्ध होता है।

९२वें द्वार में चौदह पूर्वों और उनके विषय तथा पदों की संख्या आदि का निर्देश किया गया है।

९३वें द्वार में निर्ग्रन्थों के पुलाक, बकुश, कुशील, निर्ग्रन्थ और स्नातक-ऐसे पांच प्रकारों की चर्चा है।

९४वें द्वार में निर्ग्रन्थ, शाक्य, तापस, गैरूक और आजीवक ऐसे पांच प्रकार के श्रमणों की चर्चा है।

९५वें द्वार में संयोजन, प्रमाण, अंगार, धूम और कारण ऐसे ग्रासैषणा के पांच दोषों का विवेचन किया गया है। मुनि को भोजन करते समय स्वाद के लिये भोज्य पदार्थों का सम्मिश्रण करना, परिमाण से अधिक आहार करना, भोज्य पदार्थों में राग रखना, प्रतिकूल भोज्य पदार्थों की निन्दा करना और अकारण आहार करना निषिद्ध है।

९६वें द्वार में पिण्ड-पाणैषणा के सात प्रकारों का उल्लेख हुआ है।

९७वें द्वार में भिक्षाचर्या अष्टक अर्थात् भिक्षाचर्या के आठ प्रकारों का विवेचन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किया गया है।

९८वें द्वार में दस प्रायश्चितों का विवेचन किया गया है। दस प्रायश्चित निम्न हैं— (१) आलोचना (२) प्रतिक्रमण (३) आलोचना सहित प्रतिक्रमण (४) विवेक (५) व्युत्सर्ग (६) तप (७) छेद (८) मूल (९) अनवस्थित उपस्थापना और (१०) पाराञ्चिक।

९९वें द्वार में ओघसमाचारी अर्थात् सामान्य समाचारी का विवेचन है, यह विवेचन **ओघनिर्युक्ति** में प्रतिपादित समाचारी पर आधारित है।

१००वें द्वार में पद विभाग समाचारी का उल्लेख है। ज्ञातव्य है कि छेदसूत्रों में वर्णित समाचारी पद विभाग समाचारी कहलाती है।

१०१वें द्वार में चक्रवाल समाचारी का विवेचन किया गया है। चक्रवाल समाचारी इच्छाकार, मिथ्याकार आदि दस प्रकार की है। यह समाचारी **उत्तराध्ययन** और **भगवतीसूत्र** में भी वर्णित है। प्रस्तुत कृति में इस समाचारी का विस्तृत विवेचन है।

१०२वें द्वार में उपशम श्रेणी और क्षपक श्रेणी का विवेचन किया गया है।

१०३वें द्वार में गीतार्थ विहार और गीतार्थ आश्रित विहार का निर्देश है। इसी सन्दर्भ में यात्रा करते समय किस प्रकार की सावधानी रखना चाहिये, इसका भी विवेचन किया गया है। ज्ञातव्य है कि आगम के साथ-साथ देश-काल और परिस्थिति का आकलन करने में समर्थ साधक गीतार्थ कहलाता है।

१०४वें द्वार में अप्रतिबद्ध विचार का निर्देश है। इसमें यह बताया गया है कि मुनि चातुर्मास काल में चारमास तक, अन्य काल में एक मास तक एक स्थान पर रह सकता है, उसके पश्चात् सामान्य परिस्थिति में विहार करना चाहिए।

१०५वें द्वार में जातकल्प और अजातकल्प का निर्देश है। श्रुतसम्पन्न गीतार्थ मुनि के साथ यात्रा करना जातकल्प है और इससे भिन्न अजातकल्प । इसी क्रम में ऋतुबद्ध बिहार को सम्मत विहार कहा गया है और इससे भिन्न विहार को असम्मत विहार कहा गया है।

१०६वें द्वार में मल–मूत्र आदि के प्रतिस्थापन अर्थात् विसर्जन की विधि का विवेचन है। इसी प्रसंग में विभिन्न दिशाओं का भी विचार किया गया है।

१०७वें द्वार में दीक्षा के अयोग्य अट्ठारह प्रकार के पुरुषों का उल्लेख किया गया है। इसी क्रम में १०८ वें द्वार में दीक्षा के अयोग्य बीस प्रकार की स्त्रियों का भी उल्लेख है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०९वें द्वार में नपुंसकों को और११० वें द्वार में विकलांगों को दीक्षा के अयोग्य बताया गया है। नपुंसकों की चर्चा करते हुए टीका में उनके सोलह प्रकारों का उल्लेख हुआ है और सोलह प्रकारों में से दस प्रकार को दीक्षा के अयोग्य और छः प्रकार को दीक्षा के योग्य माना गया है।

१११वें द्वार में साधु को कितने मूल्य का वस्त्र कल्प्य (ग्राह्य) है उसका विवेचन किया गया है। इसी प्रसंग में विभिन्न प्रदेशों और नगरों में मुद्रा विनिमय का पारस्परिक अनुपात क्या था, इसकी भी चर्चा हुई है।

यहाँ यह भी बताया गया है कि एक लाख साभारक के मूल्य वाला वस्त्र उत्कृष्ट होता है और अट्ठारह साभारक या उससे भी कम मूल्यवाला वस्त्र जघन्य होता है। इन दोनों के मध्य का वस्त्र मध्यम कोटि का माना जाता है। मुनि के लिये अल्प मूल्य का वस्त्र ही ग्रहण करने योग्य है।

११२वें द्वार में शय्यातर पिण्ड अर्थात जिसने निवास के लिये स्थान दिया हो उसके यहाँ से भोजन ग्रहण करना निषिद्ध माना गया है। इसी क्रम में अट्ठारह प्रकार के शय्यातरों का उल्लेख भी हुआ है।

११३वें द्वार में श्रुतज्ञान और सम्यक्त्व के पारस्परिक सम्बन्ध की चर्चा हुई है।

११४वें द्वार में पांच प्रकार के निर्ग्रन्थों का पांच प्रकार के ज्ञानों से और चार प्रकार की गतियों से सम्बन्ध बताया गया है।

११५वें द्वार में जिस क्षेत्र में सूर्य उदित हो गया है उस क्षेत्र से ग्रहीत अशन आदि ही कल्प्य होता है, शेष कालातिक्रान्त कहलाता है जो अकल्प्य (अग्राह्य) है।

११६वें द्वार में यह बताया गया है कि दो कोस से अधिक दूरी से लाया गया भोजन-पान क्षेत्रातीत कहलाता है और यह मुनि के लिये अकल्प्य है।

११७वें द्वार में यह बताया गया है कि प्रथम प्रहर में लिया गया भोजन-पान आदि तीसरे प्रहर तक भोज्य होते हैं उसके बाद वे कालातीत होकर अकल्प्य हो जाता हैं।

११८ वें द्वार में पुरुष के लिये बत्तीस कवल भोजन ही ग्राह्य माना गया है। इससे अधिक भोजन प्रमाणतिक्रान्त होने से अकल्प्य माना जाता है।

११९वें द्वार में चार प्रकार के निवास स्थानों को दुःख शय्या बताया गया है। इसी प्रसंग में यह भी स्पष्ट किया गया है कि जिन स्थानों पर अश्रद्धालु जन रहते हों, जहाँ पर दूसरों से कुछ प्राप्ति के लिये प्रार्थनायें की जाती हों, जहाँ मनोज्ञ शब्द, रूप अथवा भोजन आदि मिलते हों और जहाँ मर्दन आदि होता हो, वे स्थान मुनि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

के निवास के अयोग्य हैं। १२० वें द्वार में उसके विपरीत चार प्रकार की सुखशय्या अर्थात् मुनि के निवास के योग्य माने गये हैं।

१२१वें द्वार में तेरह क्रिया स्थानों की, १२२ वें द्वार में श्रुत सामायिक, दर्शन सामायिक, देश समायिक और सर्वसामायिक ऐसी चार प्रकार सामायिक की और १२३ वें द्वार में अट्ठारह हजार शीलांगों की चर्चा है। पुन: १२४ वें द्वार में सात नयों की चर्चा की गई है जबकि १२५वें द्वार में मुनि के लिये वस्त्र ग्रहण की विधि बतायी गयी है।

१२६वें द्वार में आगम, श्रुत, आज्ञा, धारणा और जीत ऐसे पांच व्यवहारों की चर्चा है।

१२७वें द्वार में निम्न पांच प्रकार के यथाजात का उल्लेख है। (१) चोलपट्ट (२) रजोहरण (३) और्णिक (४) क्षौमिक और (५) मुखवस्त्रिका। इन उपकरणों से ही श्रमण का जन्म होता है। अत: इन्हें यथाजात कहा गया है।

१२८वें द्वार में मुनियों के रात्रि जागरण की विधि का विवेचन है। उसमें बताया गया है कि प्रथम प्रहर में आचार्य, गीतार्थ और सभी साधु मिलकर स्वाध्याय करें। दूसरे प्रहर में सभी मुनि और आचार्य सो जायें और गीतार्थ मुनि स्वाध्याय करें। तीसरे प्रहर में आचार्य जागृत होकर स्वाध्याय करें और गीतार्थ मुनि सो जायें। चौथे प्रहर में सभी साधु उठकर स्वाध्याय करें। आचार्य और गीतार्थ सोये रहें क्योंकि उन्हें बाद में प्रवचन आदि कार्य करने होते हैं।

१२९वें द्वार में जिस व्यक्ति के सामने आलोचना की जा सकती है उसको खोजने की विधि बताई गई है।

१३०वें द्वार में प्रति जागरण के काल के सम्बन्ध में विवेचन किया गया है।

१३१ वें द्वार में मुनि की उपधि अर्थात् संयमोपकरण के धोने के काल का विवेचन है। इसमें यह बताया गया है कि किस उपधि को कितने काल के पश्चात् धोना चाहिए।

१३२वें द्वार में साधु-साध्वियों के आहार की मात्रा कितनी होना चाहिये, इसका विवेचन किया गया है। सामान्यत: यह बताया गया है कि मुनि को बड़े आंवले के आकार के बत्तीस कौर और साध्वी को अट्ठावीस कौर आहार ग्रहण करना चाहिए।

१३३वें द्वार में वसति अर्थात् मुनि के निवास की शुद्धि आदि का विवेचन किया गया है। मुनि के लिये किस प्रकार का आवास ग्राह्य होता है इसकी विवेचना इस द्वार में की गई है।

१३४वें द्वार में संलेखना सम्बन्धी विधि-विधान का विस्तृत विवेचन किया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गया है।

१३५वें द्वार में यह बताया गया है कि नगर की कल्पना पूर्वाभिमुख वृषभ के रूप में करे उसके पश्चात् उसे उस वृषभ रूप कल्पित नगर में किस स्थान पर निवास करना है, इसका निश्चय करे। इसमें यह बताया गया है किस अंग/क्षेत्र में निवास करने का क्या फल होता है।

१३६वें द्वार में किस ऋतु में किस प्रकार का जल किसने काल तक प्रासुक रहता है और बाद में सचित्त हो जाता है, इसका विवेचन किया गया है। सामान्यतया यह माना जाता है कि उष्ण किया हुआ प्रासुक जल ग्रीष्म ऋतु में पांच प्रहर तक, शीत ऋतु में चार प्रहर तक और वर्षा ऋतु में तीन प्रहर तक प्रासुक (अचित) रहता है और बाद में सचित्त हो जाता है। यद्यपि चूना आदि डालकर अधिक समय तक उसे प्रासुक रखा जा सकता है।

१३७वें द्वार में पशु-पक्षी आदि तीर्यञ्च-जीवों की मादाओं के सम्बन्ध में विवेचन किया गया है।

१३८वें द्वार में इस अवसर्पिणी काल में घटित हुए इस प्रकार के आश्चर्यों जैसे महावीर के गर्भ का संहरण, स्त्री-तीर्थंकर आदि का वर्णन किया गया है।

१३९वें द्वार में सत्य, मृषा, सत्य मृष (मिश्र) और असत्य-अमृषा ऐसी चार प्रकार की भाषाओं का उनके आवान्तर भेदों और उदाहरणों सहित विवेचन किया गया है।

१४०वां द्वार वचन षोड़सक अर्थात् सोलह प्रकार के वचनों का उल्लेख करता है।

१४१वें द्वार में मास पंचक और १४२वें द्वार में वर्ष पंचक का विवेचन है।

१४३वें द्वार में लोक के स्वरूप (आकार-प्रकार) का विवेचन है इसी क्रम में यहाँ लोक पुरुष की भी चर्चा की गयी है।

१४४ से लेकर १४७ तक चार द्वारों में क्रमशः तीन, चार, दस और पन्द्रह प्रकार की संज्ञाओं का विवेचन किया गया है।

१४८वें द्वार में सम्यक्त्व सड़सठ भेदों का विवेचन है, जबकि १४९वें द्वार में सम्यक्त्व के एक-दो आदि विभिन्न भेदों की विस्तार पूर्वक चर्चा की गई है।

१५०वें द्वार के अन्दर पृथ्वीकाय आदि षड् जीवनिकायके कुलों की संख्या का विवेचन है। प्राणियों की प्रजाति को योनि और उनकी उप प्रजातियों को कुल कहते हैं। इन कुलों की संख्या एक करोड़ सत्तानवे लाख पचास हजार मानी गई है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५१वें द्वार में चौरासी लाख जीव योनियों का विवेचन किया गया है। इस द्वार में पृथ्वीकाय की सात लाख, अपकाय की सात लाख, अग्निकाय की सात लाख, वायुकाय की सात लाख, प्रत्येक वनस्पतिकाय की दस लाख, साधारण वनस्पतिकाय की चौदह लाख, द्वीन्द्रिय की दो लाख, त्रीन्द्रिय की दो लाख, चउरिन्द्रिय की दो लाख, नारक चार लाख, देवता चार लाख, तिर्यञ्च चार लाख, मनुष्यों की चौदह लाख प्रजाति (योनि) मानी गयी है।

१५२वें द्वार में कालत्रिक, द्रव्य षट्क, नवपदार्थ, जीव निकाय षट्क, षट्लेश्या, पंच अस्तिकाय, पांच व्रत, पांच गति, पांच चारित्र का निर्देश है।

१५३वें द्वार में गृहस्थ उपासक की ग्यारह प्रतिमाओं का विवेचन है। ये ग्यारह प्रतिमायें निम्न हैं : (१) दर्शन प्रतिमा (२) व्रत प्रतिमा (३) सामायिक प्रतिमा (४) पौषधोपवास प्रतिमा (५) नियम प्रतिमा (६) सचित त्याग प्रतिमा (७) ब्रह्मचर्य प्रतिमा (८) आरम्भ त्याग प्रतिमा (९) प्रेष्य त्याग प्रतिमा (१०) औद्देशिक आहार त्याग प्रतिमा (११) श्रमणभूत प्रतिमा।

१५४वें द्वार में विभिन्न प्रकार के धान्यों के बीज कितने काल तक सचित्त रहते हैं और कब निर्जीव हो जाते हैं: इसका विवेचन किया गया है।

१५५वें द्वार में कौन सी वस्तुयें क्षेत्रातीत होने पर अचित हो जाती हैं इसका विवेचन किया गया है। इसी क्रम में १५६वें द्वार में गेहूं, चावल, मूंग-तिल आदि चौबीस प्रकार के धान्यों का विवेचन है।

१५७ वें द्वार में **समवायांगसूत्र** के समान सत्रह प्रकार के मरणों (मृत्यु) का विवेचन है।

१५८ वें और १५९ वें द्वारों में क्रमशः पल्योपम और सागरोपम के स्वरूप का विवेचन उपलब्ध होता है। इसी क्रम में १६० वें और १६१ वें द्वारों में क्रमशः अवसर्पिणी काल और उत्सर्पिणीकाल के स्वरूप का विवेचन किया गया है उसके पश्चात् १६२ वें द्वार में पुद्गल परावर्त काल के स्वरूप का विवेचन हुआ है।

१६३ वें और १६४ वें द्वारों में क्रमशः पन्द्रह कर्म भूमियों और तीस अकर्म भूमियों का विवेचन किया गया है।

१६५ वें द्वार में जातिमद, कुलमद आदि आठ प्रकार के भेदों (अहंकारों) का विवेचन है।

१६६ वें द्वार में हिंसा के दो सौ तिरालिस भेदों का विवेचन उपलब्ध होता है।

इसी प्रकार १६७ वें द्वार में परिणामों के एक सौ आठ भेदों की चर्चा की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गई है।

१६८ वें द्वार में ब्रह्मचर्य के अट्ठारह प्रकारों की चर्चा है और १६९ वें द्वार में काम के चौबीस भेदों का विवेचन किया गया है।

इसी क्रम में आगे १७० वें द्वार में दस प्रकार के प्राणों की चर्चा की गई है। जैन दर्शन में पाँच इन्द्रियाँ, मन–वचन और काया–ऐसे तीन बल, श्वासोश्वास और आयु ऐसे दस प्राण माने गये हैं।

१७१ वें द्वार में दस प्रकार के कल्पवृक्षों की चर्चा है।

१७२ वें द्वार में सात नरक भूमियों के नाम और गोत्र का विवेचन किया गया है।

आगे १७३ से लेकर १८२ तक के सभी द्वार नारकीय जीवन के विवेचन से सम्बद्ध हैं। १७३ वें द्वार में नरक के आवासों का, १७४ वें द्वार में नारकीय वेदना का, १७५ वें द्वार में नारकों की आयु का, १७६ वें द्वार में नारकीय जीवों के शरीर की लम्बाई आदि का विवेचन किया गया है।

पुनः १७७ वें द्वार में नरकगति, प्रतिसमय उत्पत्ति और अन्तराल का विवेचन है।

१७८ वां द्वार किस नरक के जीवों में कौन सी द्रव्य लेश्या पाई जाती है इसका विवेचन करता है, जबकि १७९ वां द्वार नारक जीवों के अवधिज्ञान के स्वरूप का विवेचन करता है।

१८० वें द्वार में नारकीय जीवों को दण्डित करने वाले परमाधामी देवों का विवेचन किया गया है।

१८१ वें द्वार में नारकीय जीवों की उपलब्धि अर्थात् शक्ति का विवेचन है जबकि १८२ वें, १८३ और १८४ वें द्वारों में नारकीय जीवों के उपपात अर्थात् जन्म का विवेचन प्रस्तुत है। इसमें यह बताया गया है कि जीव किन योनियों से मरकर कौन से नरक में उत्पन्न होता है और नारकीय जीव मरकर तिर्यंच और मनुष्य योनियों में कहाँ–कहाँ जन्म लेते हैं।

१८५ से १९१ तक के सात द्वारों में क्रमशः एकेन्द्रिय जीवों की काय स्थिति, भवस्थिति, शरीर परिणाम, इन्द्रियों के स्वरूप, इन्द्रियों के विषय, एकेन्द्रिय जीवों की लेश्या तथा उनकी गति और आगति का विवेचन उपलब्ध होता है।

१९२ और १९३ वें द्वारों में विकलेन्द्रिय आदि की उत्पत्ति, च्यवन एवं विरहकाल (अन्तराल) का तथा जन्म और मृत्यु प्राप्त करने वालों की संख्या का

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवेचन है।

१९४ वें द्वार में भवनपति आदि देवों की कायस्थिति, १९५ वें में उनके भवनादि का स्वरूप, १९६ वें द्वार में इन देवों के शरीर की लम्बाई आदि और १९७ वें द्वार में विभिन्न देवों में पाई जाने वाली द्रव्य लेश्या का विवेचन है। इसी क्रम में १९८ वें द्वार में देवों के अवधिज्ञान के स्वरूप का और १९९ वें द्वार में देवों की उत्पत्ति में होने वाले विरहकाल का विवेचन है।

२०० वें द्वार में देवों की उपपात के विरहकाल का और २०१ वें द्वार में देवों के उपपात की संख्या का विवेचन किया गया है।

२०२ और २०३ वें द्वारों में क्रमशः देवों की गति और आगति का विवेचन है।

२०४ वां द्वार सिद्ध गति में जाने वाले जीवों के बीच जो अन्तराल अर्थात् विरहकाल होता है उसका विवेचन करता है।

२०५ वें द्वार में जीवों के आहारादि स्वरूप का विवेचन है।

२०६ वें द्वार में तीन सौ त्रेसठ पाखंडी मतों का विस्तृत विवेचन किया गया है।

२०७ वें द्वार में प्रमाद के आठ भेदों का विवेचन है।

२०८ वें द्वार में बारह चक्रवर्तियों का, २०९ वें द्वार में नौ बलदेवों का, २१० वें द्वार में नौ वासुदेवों का और २११ वें द्वार में नौ प्रतिवासुदेवों का संक्षिप्त विवेचन उपलब्ध होता है।

२१२ वें द्वार में चक्रवर्ती, वासुदेव आदि के क्रमशः चौदह और सात रत्नों का विवेचन है।

२१३ वें द्वार में चक्रवर्ती, वासुदेव आदि की नव निधियों का विवेचन किया गया है।

२१४ वां द्वार विभिन्न योनियों में जन्म लेने वाले जीवों की संख्या आदि का विवेचन करता है।

२१५ वें द्वार से लेकर २२० वें द्वार तक छः द्वारों में जैन कर्म सिद्धान्त का विवेचन उपलब्ध होता है। इनमें क्रमशः आठ मूल प्रकृतियों, एक सौ अट्ठावन उत्तर प्रकृतियों, उनके बन्ध आदि के स्वरूप तथा उनकी स्थिति का विवेचन किया गया है। अन्तिम दो द्वारों में क्रमशः बयालीस पुण्य प्रकृतियों का और बयासी पाप प्रकृतियों का विवेचन है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२२१ वें द्वार में जीवों के क्षायिक आदि छः प्रकार के भावों का विवेचन है। इसके साथ ही इस द्वार में विभिन्न गुणस्थानों में पाये जाने वाले विभिन्न भावों का भी विवेचन किया गया है।

२२२ वां एवं २२३ वां द्वार क्रमशः जीवों के चौदह और अजीवों के चौदह प्रकार का विवेचन करता है।

२२४ वें द्वार में १४ गुणस्थानों का, २२५ वें द्वार में चौदह मार्गणाओं का, २२६ वें द्वार में बारह उपयोगों का और २२७ वें द्वार में पन्द्रह योगों का विवेचन है।

२३७ वें द्वार में अट्ठारह प्रकार के पापों का विवेचन है।

२३८ वें द्वार में मुनि के सत्ताइस मूल गुणों का विवेचन है।

२३९ वें द्वार में श्रावक के इक्कीस गुणों का विवेचन किया गया है।

२४० वें द्वार में तिर्यंच जीवों की गर्भ स्थिति के उत्कृष्ट काल का विवेचन किया गया है जबकि २४१ वें द्वार में मनुष्यों की गर्भ स्थिति के सम्बन्ध में विवेचन है। २४२वां द्वार मनुष्य की काय स्थिति को स्पष्ट करता है।

२४३ वें द्वार में गर्भ में स्थिति जीव के आहार के स्वरूप का विवेचन है तो २४४ वें द्वार में गर्भ का धारण कब सम्भव होता है इसका विवरण दिया गया है। २४५ और २४६ वें द्वार में क्रमशः यह बताया गया है कि एक पिता के कितने पुत्र हो सकते हैं? और एक पुत्र के कितने पिता हो सकते हैं। आधुनिक जीव विज्ञान की दृष्टि से यह एक रोचक विषय है।

२४७ वें द्वार में स्त्री-पुरुष कब संतानोत्पत्ति के अयोग्य होते हैं इसका विवेचन किया गया है। २४८ वें द्वार में वीर्य आदि की मात्रा के सम्बन्ध में चर्चा की गई है इसमें यह भी बताया है कि एक शरीर में रक्त, वीर्य आदि की कितनी मात्रा होती है।

२४९ वें द्वार में सम्यक्त्व आदि की उपलब्धि में किस अपेक्षा से कितना अन्तराल होता है इसका विवेचन किया गया है।

२५० वें द्वार में मनुष्य भव में किनकी उत्पत्ति सम्भव नहीं है, इसका विवरण प्रस्तुत किया गया है।

२५१ वें द्वार में ग्यारह अंगों के परिमाण का और २५२ वें द्वार में चौदह पूर्वों के परिमाण का विवेचन है। इनमें मुख्य रूप से यह बताया है कि किस अंग और किस पूर्व की कितनी श्लोक संख्या होती है।

२५३ वें द्वार में लवण शिखा के परिमाण का उल्लेख है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५४ वां द्वार विभिन्न प्रकार के अंगुलों (माप विशेष) का विवेचन करता है।

२५५ वें द्वार में त्रसकाय के स्वरूप का विवेचन किया गया है।

२५६ वें द्वार में छः प्रकार के अनन्तकायों की चर्चा है।

२५७ वें द्वार में निमित्त शास्त्र के आठ अंगों का विवेचन है। दूसरे शब्दों में यह द्वार अष्टांग निमित्त शास्त्र का विवेचन करता है।

२५८ वें द्वार में मान और उन्मान अर्थात् माप–तौल सम्बन्धी विभिन्न पैमाने दिये गये हैं।

२५९ वें द्वार में अट्ठारह प्रकार के भोज्य पदार्थों का विवेचन है। २६० वां द्वार षट् स्थानक हानि वृद्धि नामक जैन दर्शन की विशिष्ट अवधारणा का विवेचन करता है। २६१ वें द्वार में उन जीवों का निर्देश है, जिनका संहरण सम्भव नहीं होता है। इसमें बताया गया है कि श्रमणी, अपगतवेद, परिहारविशुद्धचारित्र, पुलाकलब्धि, अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती, चौदह पूर्वधर एवं आहारकलब्धि से सम्पन्न जीवों का संहरण नहीं होता है।

२६२ वें द्वार में छप्पन अन्तर्द्वीपों का विवेचन किया गया है।

२६३ वें द्वार में जीवों का पारस्परिक अल्पबहुत्व का विचार किया गया है।

२६४ वें द्वार में युगप्रधान सूरियों अर्थात् आचार्यों की संख्या का विवेचन किया गया है।

२६५ वें द्वार में ऋषभ से लेकर महावीर स्वामी पर्यन्त तीर्थ की स्थिति का विचार किया गया है।

२६६ वां द्वार विभिन्न देवलोकों में देवता अपनी काम वासना की पूर्ति कैसे करते हैं, इसका विवरण प्रस्तुत करता है।

२६७ वें द्वार में कृष्णराजी का विवेचन है।

२६८ वां द्वार अस्वाध्याय के स्वरूप का विस्तृत विवेचन करता है।

२६९ वें द्वार में नन्दीश्वर द्वीप के स्वरूप का विवेचन किया गया है।

२७० वें द्वार में विभिन्न प्रकार की लब्धियों (विशिष्ट शक्तियों) का विवेचन है।

२७१ वें द्वार में छः आन्तर और छः बाह्य तपों के स्वरूप का विस्तृत विवेचन है।

२७२ वें द्वार में दस पातालकलशों के स्वरूप का विवेचन है।

२७३ वें द्वार में आहारक शरीर के स्वरूप का विवेचन किया गया है।

२७४ वें द्वार में अनार्य देशों का और २७५ वें द्वार में आर्य देशों का

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवेचन है।

अन्तिम २७६ वां द्वार सिद्धों के इकत्तीस गुणों का विवरण प्रस्तुत करता है।

इस प्रकार यह विशालकाय कृति २७६ द्वारों (अध्यायों) में जैन दर्शन के २७६ विशिष्ट पक्षों के विवेचन के साथ समाप्त होती है। यही कारण है कि इस कृति को जैन धर्म दर्शन का एक छोटा विश्वकोष कहा जा सकता है।

हमें यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होती है कि प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर जैन दर्शन के इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ को हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित कर रही है। इससे जन सामान्य और विद्वत वर्ग दोनों का ही उपकार होगा। क्योंकि इसका हिन्दी भाषा में कोई भी अनुवाद उपलब्ध नहीं था। परम विदुषी साध्वी श्री हेमप्रभा श्री जी० म०सा० ने इस विशालकाय ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद करने का जो कठिनतर कार्य किया है, वह स्तुत्य तो है ही, साथ ही उनकी बहुश्रुतता का परिचायक भी है। ऐसे दुरूह प्राकृत ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद करना सहज नहीं था, यह उनके साहस का ही परिणाम है कि उन्होंने न केवल इस महाकार्य को हाथ में लिया, अपितु प्रामाणिकता के साथ इसे सम्पूर्ण भी किया। अनुवाद में उन्होंने मूल ग्रन्थ के साथ टीका को भी आधार बनाया है। इससे पाठकों को विषय को स्पष्ट रूप से समझने में सहायता मिलती है।

अनुवाद सहज और सुगम है और सीधा मूल विषय को स्पर्श करता है वस्तुतः यह पूज्या साध्वीजी का जैन विधा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण अवदान है और इस हेतु वे हम सभी के साधुवाद की पात्र हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्य ग्रन्थों की गाथाएँ और प्रवचनसारोद्धार

अङ्गुलसप्तति	२	प्रवचनसारोद्धार	१३८९
अङ्गुलसप्तति	४	प्रवचनसारोद्धार	१३९४
अङ्गुलसप्तति	५	प्रवचनसारोद्धार	१३९५
आचारांगनिर्युक्ति	३९	प्रवचनसारोद्धार	९२५
आराहणापडाया (प्रा.)	१०	प्रवचनसारोद्धार	८७५
आराहणापडाया (प्रा.)	११	प्रवचनसारोद्धार	८७६
आराहणापडाया (प्रा.)	१२	प्रवचनसारोद्धार	८७७
आराहणापडाया (प्रा.)	३३	प्रवचनसारोद्धार	६२९
आराहणापडाया (प्रा.)	१७६	प्रवचनसारोद्धार	२६७
आराहणापडाया (प्रा.)	१८०	प्रवचनसारोद्धार	२६८
आराहणापडाया (प्रा.)	५०४	प्रवचनसारोद्धार	१२९
आराहणापडाया (प्रा.)	६५१	प्रवचनसारोद्धार	५६१
आराहणापडाया (प्रा.)	६५१	प्रवचनसारोद्धार	१२५६
आराहणापडाया (प्रा.)	६७१	प्रवचनसारोद्धार	६८५
आराहणापडाया (प्रा.)	६७२	प्रवचनसारोद्धार	६८६
आराहणापडाया (प्रा.)	६८६	प्रवचनसारोद्धार	१२०७
आराहणापडाया (प्रा.)	६८७	प्रवचनसारोद्धार	१२०८
आराहणापडाया (प्रा.)	७१४	प्रवचनसारोद्धार	६४१
आराहणापडाया (प्रा.)	७१५	प्रवचनसारोद्धार	६४२
आराहणापडाया (प्रा.)	७१७	प्रवचनसारोद्धार	६४४
आराहणापडाया (प्रा.)	७१९	प्रवचनसारोद्धार	६४६
आराहणापडाया (प्रा.)	७४६	प्रवचनसारोद्धार	६३६
आराहणापडाया (प्रा.)	७४७	प्रवचनसारोद्धार	६३७
आराहणापडाया (प्रा.)	७४८	प्रवचनसारोद्धार	६३८
आराहणापडाया (प्रा.)	७४९	प्रवचनसारोद्धार	६३९
आराहणापडाया (वीरभद्र)	८९	प्रवचनसारोद्धार	२६७
आराहणापडाया (वीरभद्र)	९०	प्रवचनसारोद्धार	२६८

* इस सम्बन्ध में हमारा आधार मुनि पद्मसेनविजयजी द्वारा सम्पादित एवं भारतीय प्राच्य तत्त्व प्रकाशन समिति पिण्डवाड़ा द्वारा प्रकाशित 'प्रवचन-सारोद्धार खण्ड १-२' एवं डॉ. श्री प्रकाश पाण्डेय का आलेख 'प्रकीर्णक एवं प्रवचनसारोद्धार' रहे हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आराहणापडाया (वीरभद्र)	१५५	प्रवचनसारोद्धार	८७५
आराहणापडाया (वीरभद्र)	१५७	प्रवचनसारोद्धार	८७७
आराहणापडाया (वीरभद्र)	५४३	प्रवचनसारोद्धार	५५६
आवश्यकनिर्युक्ति	१२०२	प्रवचनसारोद्धार	९८
आवश्यकनिर्युक्ति	११९८	प्रवचनसारोद्धार	१२४
आवश्यकनिर्युक्ति	१५३१	प्रवचनसारोद्धार	१८३
आवश्यकनिर्युक्ति	१५३२	प्रवचनसारोद्धार	१८४
आवश्यकनिर्युक्ति	१५९९	प्रवचनसारोद्धार	२०३
आवश्यकनिर्युक्ति	१६००	प्रवचनसारोद्धार	२०४
आवश्यकनिर्युक्ति	१६०१	प्रवचनसारोद्धार	२०५
आवश्यकनिर्युक्ति	१६०२	प्रवचनसारोद्धार	२०६
आवश्यकनिर्युक्ति	१५४६	प्रवचनसारोद्धार	२४७
आवश्यकनिर्युक्ति	१७९	प्रवचनसारोद्धार	३१०
आवश्यकनिर्युक्ति	१८०	प्रवचनसारोद्धार	३११
आवश्यकनिर्युक्ति	१८१	प्रवचनसारोद्धार	३१२
आवश्यकनिर्युक्ति	३८५	प्रवचनसारोद्धार	३२०
आवश्यकनिर्युक्ति	३८६	प्रवचनसारोद्धार	३२१
आवश्यकनिर्युक्ति	३८७	प्रवचनसारोद्धार	३२२
आवश्यकनिर्युक्ति	३८८	प्रवचनसारोद्धार	३२३
आवश्यकनिर्युक्ति	३८९	प्रवचनसारोद्धार	३२४
आवश्यकनिर्युक्ति	२६६	प्रवचनसारोद्धार	३२९
आवश्यकनिर्युक्ति	२६७	प्रवचनसारोद्धार	३२८
आवश्यकनिर्युक्ति	२७६	प्रवचनसारोद्धार	३८१
आवश्यकनिर्युक्ति	३७७	प्रवचनसारोद्धार	३८२
आवश्यकनिर्युक्ति	२२४	प्रवचनसारोद्धार	३८३
आवश्यकनिर्युक्ति	२२५	प्रवचनसारोद्धार	३८४
आवश्यकनिर्युक्ति	३०३	प्रवचनसारोद्धार	३८५
आवश्यकनिर्युक्ति	३०४	प्रवचनसारोद्धार	३८६
आवश्यकनिर्युक्ति	३०५	प्रवचनसारोद्धार	३८७
आवश्यकनिर्युक्ति	३०८	प्रवचनसारोद्धार	३८८
आवश्यकनिर्युक्ति	३०९	प्रवचनसारोद्धार	३८९
आवश्यकनिर्युक्ति	३१०	प्रवचनसारोद्धार	३९०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आवश्यकनिर्युक्ति	२२८	प्रवचनसारोद्धार	४५४
आवश्यकनिर्युक्ति	२५५	प्रवचनसारोद्धार	४५५
आवश्यकनिर्युक्ति	३०६	प्रवचनसारोद्धार	४५६
आवश्यकनिर्युक्ति	९७०	प्रवचनसारोद्धार	४८२
आवश्यकनिर्युक्ति	९६९	प्रवचनसारोद्धार	४८३
आवश्यकनिर्युक्ति	९६७	प्रवचनसारोद्धार	४८४
आवश्यकनिर्युक्ति	९६५	प्रवचनसारोद्धार	४८५
आवश्यकनिर्युक्ति	९५९	प्रवचनसारोद्धार	४८६
आवश्यकनिर्युक्ति	९७१	प्रवचनसारोद्धार	४८७
आवश्यकनिर्युक्ति	९७२	प्रवचनसारोद्धार	४८८
आवश्यकनिर्युक्ति	९७३	प्रवचनसारोद्धार	४८९
आवश्यकनिर्युक्ति	१२१	प्रवचनसारोद्धार	६९४
आवश्यकनिर्युक्ति	११६	प्रवचनसारोद्धार	७००
आवश्यकनिर्युक्ति	१४१८	प्रवचनसारोद्धार	७५०
आवश्यकनिर्युक्ति	६६६	प्रवचनसारोद्धार	७६०
आवश्यकनिर्युक्ति	६६७	प्रवचनसारोद्धार	७६१
आवश्यकनिर्युक्ति	६६८	प्रवचनसारोद्धार	७६२
आवश्यकनिर्युक्ति	६८२	प्रवचनसारोद्धार	७६३
आवश्यकनिर्युक्ति	६८८	प्रवचनसारोद्धार	७६४
आवश्यकनिर्युक्ति	६९६	प्रवचनसारोद्धार	७६७
आवश्यकनिर्युक्ति	११७२	प्रवचनसारोद्धार	७७८
आवश्यकनिर्युक्ति	८५७	प्रवचनसारोद्धार	८३७
आवश्यकनिर्युक्ति	८५८	प्रवचनसारोद्धार	८३८
आवश्यकनिर्युक्ति	७५४	प्रवचनसारोद्धार	८४७
आवश्यकनिर्युक्ति	७५९	प्रवचनसारोद्धार	८४८
आवश्यकनिर्युक्ति	४७	प्रवचनसारोद्धार	१०८४
आवश्यकनिर्युक्ति	१४	प्रवचनसारोद्धार	१३०३
आवश्यकनिर्युक्ति	२१४	प्रवचनसारोद्धार	१४४८
आवश्यकनिर्युक्ति	१३३१	प्रवचनसारोद्धार	१४५६
आवश्यकनिर्युक्ति	१३३२	प्रवचनसारोद्धार	१४५७
आवश्यकनिर्युक्ति	१३३४	प्रवचनसारोद्धार	१४५८
आवश्यकनिर्युक्ति	१३३५	प्रवचनसारोद्धार	१४५९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आवश्यकनिर्युक्ति	१३३७	प्रवचनसारोद्धार	१४६०
आवश्यकनिर्युक्ति	१३३८	प्रवचनसारोद्धार	१४६१
आवश्यकनिर्युक्ति	१३४२	प्रवचनसारोद्धार	१४६२
आवश्यकनिर्युक्ति	१३४४	प्रवचनसारोद्धार	१४६३
आवश्यकनिर्युक्ति	१३४७	प्रवचनसारोद्धार	१४६४
आवश्यकनिर्युक्ति	१३५०	प्रवचनसारोद्धार	१४६५
आवश्यकनिर्युक्ति	१३५१	प्रवचनसारोद्धार	१४६६
आवश्यकनिर्युक्ति	१३५२	प्रवचनसारोद्धार	१४६७
आवश्यकनिर्युक्ति	१३५५	प्रवचनसारोद्धार	१४७०
आवश्यकनिर्युक्ति	१३५८	प्रवचनसारोद्धार	१४७१
आवश्यकभाष्यम्	४१	प्रवचनसारोद्धार	१२११
आवश्यकभाष्यम्	४२	प्रवचनसारोद्धार	१२१२
आवश्यकभाष्यम्	४३	प्रवचनसारोद्धार	१२१३
आवश्यकभाष्यम्	२१६	प्रवचनसारोद्धार	१४५४
आवश्यकभाष्यम्	२१७	प्रवचनसारोद्धार	१४५५
आवश्यकभाष्यम्	२१९	प्रवचनसारोद्धार	१४६८
आवश्यकभाष्यम्	२२०	प्रवचनसारोद्धार	१४६९
उत्तराध्ययन निर्युक्ति	८२	प्रवचनसारोद्धार	६९१
उत्तराध्ययन निर्युक्ति	४८२	प्रवचनसारोद्धार	७६०
उत्तराध्ययन निर्युक्ति	४८३	प्रवचनसारोद्धार	७६१
उत्तराध्ययन निर्युक्ति	२१२	प्रवचनसारोद्धार	१००६
उत्तराध्ययन निर्युक्ति	२१३	प्रवचनसारोद्धार	१००७
उत्तराध्ययन निर्युक्ति	२१५	प्रवचनसारोद्धार	१००८
उत्तराध्ययन निर्युक्ति	२१६	प्रवचनसारोद्धार	१००९
उत्तराध्ययन निर्युक्ति	२१७	प्रवचनसारोद्धार	१०१०
उत्तराध्ययन निर्युक्ति	२१९	प्रवचनसारोद्धार	१०११
उत्तराध्ययन निर्युक्ति	२२१	प्रवचनसारोद्धार	१०१२
उत्तराध्ययन निर्युक्ति	२२२	प्रवचनसारोद्धार	१०१४
उत्तराध्ययन निर्युक्ति	२२३	प्रवचनसारोद्धार	१०१५
उत्तराध्ययन निर्युक्ति	२२४	प्रवचनसारोद्धार	१०१६
उत्तराध्ययन सूत्रम्	२४/७	प्रवचनसारोद्धार	७७१
उत्तराध्ययन सूत्रम्	२८/१६	प्रवचनसारोद्धार	९५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्तराध्ययन सूत्रम्	२८/१८	प्रवचनसारोद्धार	९५१
उत्तराध्ययन सूत्रम्	२८/१९	प्रवचनसारोद्धार	९५२
उत्तराध्ययन सूत्रम्	२८/२०	प्रवचनसारोद्धार	९५३
उत्तराध्ययन सूत्रम्	२८/२१	प्रवचनसारोद्धार	९५४
उत्तराध्ययन सूत्रम्	२८/२२	प्रवचनसारोद्धार	९५५
उत्तराध्ययन सूत्रम्	२८/२३	प्रवचनसारोद्धार	९५६
उत्तराध्ययन सूत्रम्	२८/२४	प्रवचनसारोद्धार	९५७
उत्तराध्ययन सूत्रम्	२८/२५	प्रवचनसारोद्धार	९५८
उत्तराध्ययन सूत्रम्	२८/२६	प्रवचनसारोद्धार	९५९
उत्तराध्ययन सूत्रम्	२८/२७	प्रवचनसारोद्धार	९६०
उपदेशपदम्	१७	प्रवचनसारोद्धार	१०९४
ओघनिर्युक्ति	६६८	प्रवचनसारोद्धार	४९१
ओघनिर्युक्ति	६६९	प्रवचनसारोद्धार	४९२
ओघनिर्युक्ति	७०३	प्रवचनसारोद्धार	५०६
ओघनिर्युक्ति	७०५	प्रवचनसारोद्धार	५०७
ओघनिर्युक्ति	७०८	प्रवचनसारोद्धार	५०८
ओघनिर्युक्ति	७११	प्रवचनसारोद्धार	५०९
ओघनिर्युक्ति	७१३	प्रवचनसारोद्धार	५१०
ओघनिर्युक्ति	७१४	प्रवचनसारोद्धार	५११
ओघनिर्युक्ति	७२१	प्रवचनसारोद्धार	५१२
ओघनिर्युक्ति	७२३	प्रवचनसारोद्धार	५१३
ओघनिर्युक्ति	७१०	प्रवचनसारोद्धार	५१४
ओघनिर्युक्ति	७१२	प्रवचनसारोद्धार	५१५
ओघनिर्युक्ति	६९१	प्रवचनसारोद्धार	५१६
ओघनिर्युक्ति	७०६	प्रवचनसारोद्धार	५१७
ओघनिर्युक्ति	७२२	प्रवचनसारोद्धार	५१८
ओघनिर्युक्ति	६७६	प्रवचनसारोद्धार	५२९
ओघनिर्युक्ति	६७७	प्रवचनसारोद्धार	५३०
ओघनिर्युक्ति	७३०	प्रवचनसारोद्धार	६७०
ओघनिर्युक्ति	३१३	प्रवचनसारोद्धार	७०९
ओघनिर्युक्ति	३१४	प्रवचनसारोद्धार	७१०
ओघनिर्युक्ति	१२१	प्रवचनसारोद्धार	७७०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओघनिर्युक्ति	३१६	प्रवचनसारोद्धार	७८६
ओघनिर्युक्ति	३१७	प्रवचनसारोद्धार	७८९
ओघनिर्युक्ति	६६०	प्रवचनसारोद्धार	८६१
ओघनिर्युक्ति	३५१	प्रवचनसारोद्धार	८६४
ओघनिर्युक्ति	३५२	प्रवचनसारोद्धार	८६५
ओघनिर्युक्तिभाष्यम्	३१३	प्रवचनसारोद्धार	५३१
ओघनिर्युक्तिभाष्यम्	३१४	प्रवचनसारोद्धार	५३२
ओघनिर्युक्तिभाष्यम्	३१५	प्रवचनसारोद्धार	५३३
ओघनिर्युक्तिभाष्यम्	३१६	प्रवचनसारोद्धार	५३४
ओघनिर्युक्तिभाष्यम्	३१७	प्रवचनसारोद्धार	५३५
ओघनिर्युक्तिभाष्यम्	३१८	प्रवचनसारोद्धार	५३६
ओघनिर्युक्तिभाष्यम्	३१९	प्रवचनसारोद्धार	५३७
ओघनिर्युक्तिभाष्यम्	३२०	प्रवचनसारोद्धार	५३८
ओघनिर्युक्तिभाष्यम्	२	प्रवचनसारोद्धार	५५१
ओघनिर्युक्तिभाष्यम्	३	प्रवचनसारोद्धार	५६२
ओघनिर्युक्तिभाष्यम्	१८४	प्रवचनसारोद्धार	७८७
ओघनिर्युक्तिभाष्यम्	१८५	प्रवचनसारोद्धार	७८८
कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/५	प्रवचनसारोद्धार	१२४१
कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/७	प्रवचनसारोद्धार	१२५१
कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/७१	प्रवचनसारोद्धार	१२६२
कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/७२	प्रवचनसारोद्धार	१२६३
कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/७३	प्रवचनसारोद्धार	१२६४
कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/७४	प्रवचनसारोद्धार	१२६५
कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/७५	प्रवचनसारोद्धार	१२६६
कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/७६	प्रवचनसारोद्धार	१२६७
कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/७७	प्रवचनसारोद्धार	१२६८
कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/७८	प्रवचनसारोद्धार	१२६९
कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/७९	प्रवचनसारोद्धार	१२७०
कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/८०	प्रवचनसारोद्धार	१२७१
कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/८१	प्रवचनसारोद्धार	१२७२
कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/८२	प्रवचनसारोद्धार	१२७३
कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	४/७९	प्रवचनसारोद्धार	१२७६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	४/१३	प्रवचनसारोद्धार	१३००
कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	४/२६	प्रवचनसारोद्धार	१३०२
कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	४/३४	प्रवचनसारोद्धार	१३०१
कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/१३६	प्रवचनसारोद्धार	१३१७
गच्छायार पइण्णयं	८९	प्रवचनसारोद्धार	७३७
चैत्यवन्दन महाभाष्य	१८०	प्रवचनसारोद्धार	६६
चैत्यवन्दन महाभाष्य	४७८	प्रवचनसारोद्धार	२४७
चैत्यवन्दन महाभाष्य	४८०	प्रवचनसारोद्धार	२४९
चैत्यवन्दन महाभाष्य	४८१	प्रवचनसारोद्धार	२५०
चैत्यवन्दन महाभाष्य	४८२	प्रवचनसारोद्धार	२५१
चैत्यवन्दन महाभाष्य	४८३	प्रवचनसारोद्धार	२५२
चैत्यवन्दन महाभाष्य	४८४	प्रवचनसारोद्धार	२५३
चैत्यवन्दन महाभाष्य	४८५	प्रवचनसारोद्धार	२५४
चैत्यवन्दन महाभाष्य	४८६	प्रवचनसारोद्धार	२५५
चैत्यवन्दन महाभाष्य	४८७	प्रवचनसारोद्धार	२५६
चैत्यवन्दन महाभाष्य	४८९	प्रवचनसारोद्धार	२५७
चैत्यवन्दन महाभाष्य	४९०	प्रवचनसारोद्धार	२५८
चैत्यवन्दन महाभाष्य	४९१	प्रवचनसारोद्धार	२५९
चैत्यवन्दन महाभाष्य	४९२	प्रवचनसारोद्धार	२६०
चैत्यवन्दन महाभाष्य	४९३	प्रवचनसारोद्धार	२६१
चैत्यवन्दन महाभाष्य	४९४	प्रवचनसारोद्धार	२६२
चैत्यवन्दन महाभाष्य	६३	प्रवचनसारोद्धार	४३२
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्षस्कार	२/१९	प्रवचनसारोद्धार	१३९०
जीवसमास	४०	प्रवचनसारोद्धार	९६३
जीवसमास	४१	प्रवचनसारोद्धार	९६४
जीवसमास	४२	प्रवचनसारोद्धार	९६५
जीवसमास	४३	प्रवचनसारोद्धार	९६६
जीवसमास	४४	प्रवचनसारोद्धार	९६७
जीवसमास	११७	प्रवचनसारोद्धार	१०१८
जीवसमास	११८	प्रवचनसारोद्धार	१०१९
जीवसमास	११९	प्रवचनसारोद्धार	१०२०
जीवसमास	१२०	प्रवचनसारोद्धार	१०२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीवसमास	१२१	प्रवचनसारोद्धार	१०२२
जीवसमास	१२२	प्रवचनसारोद्धार	१०२३
जीवसमास	१२५	प्रवचनसारोद्धार	१०२४
जीवसमास	१३६	प्रवचनसारोद्धार	१०२५
जीवसमास	१३१	प्रवचनसारोद्धार	१०२६
जीवसमास	१२३	प्रवचनसारोद्धार	१०२७
जीवसमास	१२४	प्रवचनसारोद्धार	१०२८
जीवसमास	१२७	प्रवचनसारोद्धार	१०२९
जीवसमास	१३०	प्रवचनसारोद्धार	१०३०
जीवसमास	१३२	प्रवचनसारोद्धार	१०३१
जीवसमास	१३३	प्रवचनसारोद्धार	१०३२
जीवसमास	१९	प्रवचनसारोद्धार	११३३
जीवसमास	२०	प्रवचनसारोद्धार	११३४
जीवसमास	६	प्रवचनसारोद्धार	१३०३
जीवसमास	१९२	प्रवचनसारोद्धार	१३११
जीवसमास	२५	प्रवचनसारोद्धार	१३१७
जीवसमास	८२	प्रवचनसारोद्धार	१३१९
जीवसमास	९८	प्रवचनसारोद्धार	१३९१
जीवसमास	१०३	प्रवचनसारोद्धार	१३९४
जोइसकरंडग पइण्णयं*	८३	प्रवचनसारोद्धार	१३९०
जोइसकरंडग पइण्णयं*	८४	प्रवचनसारोद्धार	१३९१
जोइसकरंडग पइण्णयं*	९५	प्रवचनसारोद्धार	१०३४
ज्योतिष्करण्डक प्रकीर्णक	७९	प्रवचनसारोद्धार	१०२०
ज्योतिष्करण्डक प्रकीर्णक	७३	प्रवचनसारोद्धार	१३९०
ज्योतिष्करण्डक प्रकीर्णक	७४	प्रवचनसारोद्धार	१३९१
तित्थोगालीपइण्णयं	१२	प्रवचनसारोद्धार	१०२५
तित्थोगालीपइण्णयं	१८	प्रवचनसारोद्धार	१०३४
तित्थोगालीपइण्णयं	२१	प्रवचनसारोद्धार	१०३६
तित्थोगालीपइण्णयं	२२	प्रवचनसारोद्धार	१०३७
तित्थोगालीपइण्णयं	४६	प्रवचनसारोद्धार	१०६७

* डॉ. श्री प्रकाश पाण्डेय द्वारा निर्दिष्ट गाथाओं के क्रमांक मुनि पद्मसेन विजयजी द्वारा दिये गये गाथा क्रमांक से भिन्न है। हो सकता है यह भिन्नता संस्करण भेद के कारण हो इनमें दस गाथाओं का अन्तर है। पद्मसेन विजयजी के संस्करण में इनका क्रमांक क्रमशः ७३, ७४ एवं ८५ है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तित्थोगालीपइण्णायं	४७	प्रवचनसारोद्धार	१०६८
तित्थोगालीपइण्णायं	४९	प्रवचनसारोद्धार	१०७०
तित्थोगालीपइण्णायं	५४	प्रवचनसारोद्धार	१०३४
तित्थोगालीपइण्णायं	८२	प्रवचनसारोद्धार	१३८७
तित्थोगालीपइण्णायं	३६०	प्रवचनसारोद्धार	४०६
तित्थोगालीपइण्णायं	३९५	प्रवचनसारोद्धार	३८४
तित्थोगालीपइण्णायं	४००	प्रवचनसारोद्धार	४५४
तित्थोगालीपइण्णायं	५६७	प्रवचनसारोद्धार	३२५
तित्थोगालीपइण्णायं	५६८	प्रवचनसारोद्धार	३२६
तित्थोगालीपइण्णायं	५७०	प्रवचनसारोद्धार	१२०९
तित्थोगालीपइण्णायं	५७१	प्रवचनसारोद्धार	१२१०
तित्थोगालीपइण्णायं	६१०	प्रवचनसारोद्धार	१२१३
तित्थोगालीपइण्णायं	६९९	प्रवचनसारोद्धार	६९३
तित्थोगालीपइण्णायं	८८८	प्रवचनसारोद्धार	८८५
तित्थोगालीपइण्णायं	८८९	प्रवचनसारोद्धार	८८६
तित्थोगालीपइण्णायं	११३३	प्रवचनसारोद्धार	१२२०
तित्थोगालीपइण्णायं	११३६	प्रवचनसारोद्धार	१२२३
तित्थोगालीपइण्णायं	११४१	प्रवचनसारोद्धार	१२२८
तित्थोगालीपइण्णायं	११४२	प्रवचनसारोद्धार	१२२९
तित्थोगालीपइण्णायं	११७०	प्रवचनसारोद्धार	१०३५
तित्थोगालीपइण्णायं	१२०७	प्रवचनसारोद्धार	५५३
तित्थोगालीपइण्णायं	१२२०	प्रवचनसारोद्धार	९३५
तित्थोगालीपइण्णायं	१२३७	प्रवचनसारोद्धार	४८६
तित्थोगालीपइण्णायं	१२३८	प्रवचनसारोद्धार	४८२
तित्थोगालीपइण्णायं	१२३९	प्रवचनसारोद्धार	४८४
तित्थोगालीपइण्णायं	१२४२	प्रवचनसारोद्धार	४८८
तित्थोगालीपइण्णायं	१२४३	प्रवचनसारोद्धार	४८९
दशवैकालिकानिर्युक्ति	४७	प्रवचनसारोद्धार	२७०
दशवैकालिकानिर्युक्ति	४८	प्रवचनसारोद्धार	२७१
दशवैकालिकानिर्युक्ति	३२५	प्रवचनसारोद्धार	५४९
दशवैकालिकानिर्युक्ति	३२६	प्रवचनसारोद्धार	५५०
दशवैकालिकानिर्युक्ति	४६	प्रवचनसारोद्धार	५५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दशवैकालिकानिर्युक्ति	४७	प्रवचनसारोद्धार	५५९
दशवैकालिकानिर्युक्ति	४८	प्रवचनसारोद्धार	५६०
दशवैकालिकानिर्युक्ति	२७३	प्रवचनसारोद्धार	८९१
दशवैकालिकानिर्युक्ति	२७४	प्रवचनसारोद्धार	८९२
दशवैकालिकानिर्युक्ति	२७५	प्रवचनसारोद्धार	८९३
दशवैकालिकानिर्युक्ति	२७६	प्रवचनसारोद्धार	८९४
दशवैकालिकानिर्युक्ति	२७७	प्रवचनसारोद्धार	८९५
दशवैकालिकानिर्युक्ति	२५२	प्रवचनसारोद्धार	१००४
दशवैकालिकानिर्युक्ति	२५३	प्रवचनसारोद्धार	१००५
दशवैकालिकानिर्युक्ति	२५९	प्रवचनसारोद्धार	१०३२
दशवैकालिकानिर्युक्ति	२६०	प्रवचनसारोद्धार	१०६३
दशवैकालिकानिर्युक्ति	२६१	प्रवचनसारोद्धार	१०६४
देविदत्थओ पइण्णयं	२६२	प्रवचनसारोद्धार	१०६५
देविदत्थओ पइण्णयं	६७	प्रवचनसारोद्धार	११३०
देविदत्थओ पइण्णयं	८१	प्रवचनसारोद्धार	११३३
देविदत्थओ पइण्णयं	१८४	प्रवचनसारोद्धार	११३७
देविदत्थओ पइण्णयं	१९२	प्रवचनसारोद्धार	११६०
देविदत्थओ पइण्णयं	२८६	प्रवचनसारोद्धार	४८६
देविदत्थओ पइण्णयं	२८७	प्रवचनसारोद्धार	४८४
देविदत्थओ पइण्णयं	२८९	प्रवचनसारोद्धार	१५४०
धर्मरत्नप्रकरण	५	प्रवचनसारोद्धार	१३५६
धर्मरत्नप्रकरण	६	प्रवचनसारोद्धार	१३५७
धर्मरत्नप्रकरण	७	प्रवचनसारोद्धार	१३५८
धर्मसंग्रहणी	६१८	प्रवचनसारोद्धार	१२६३
धर्मसंग्रहणी	६१९	प्रवचनसारोद्धार	१२६४
धर्मसंग्रहणी	६२०	प्रवचनसारोद्धार	१२६५
निशीथभाष्यम्	१३९०	प्रवचनसारोद्धार	४९३
निशीथभाष्यम्	१३९१	प्रवचनसारोद्धार	४९४
निशीथभाष्यम्	१३९२	प्रवचनसारोद्धार	४९७
निशीथभाष्यम्	४००३	प्रवचनसारोद्धार	६७६
निशीथभाष्यम्	४००१	प्रवचनसारोद्धार	६७७
निशीथभाष्यम्	४००२	प्रवचनसारोद्धार	६७८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निशीथभाष्यम्		३५०६	प्रवचनसारोद्धार	७९०
निशीथभाष्यम्		३५०७	प्रवचनसारोद्धार	७९१
निशीथभाष्यम्		३५६१	प्रवचनसारोद्धार	७९३
निशीथभाष्यम्		३७०९	प्रवचनसारोद्धार	७९५
निशीथभाष्यम्		३७१०	प्रवचनसारोद्धार	७९६
निशीथभाष्यम्		११४४	प्रवचनसारोद्धार	८००
निशीथभाष्यम्		११४५	प्रवचनसारोद्धार	८०१
निशीथभाष्यम्		११४९	प्रवचनसारोद्धार	८०२
निशीथभाष्यम्		११४८	प्रवचनसारोद्धार	८०३
निशीथभाष्यम्		११५८	प्रवचनसारोद्धार	८०४
निशीथभाष्यम्		११५९	प्रवचनसारोद्धार	८०५
निशीथभाष्यम्		११६०	प्रवचनसारोद्धार	८०६
निशीथभाष्यम्		११६१	प्रवचनसारोद्धार	८०७
निशीथभाष्यम्		११६२	प्रवचनसारोद्धार	८०८
निशीथभाष्यम्		५०८७	प्रवचनसारोद्धार	८५०
निशीथभाष्यम्		५०८६	प्रवचनसारोद्धार	८५१
निशीथभाष्यम्		५०८८	प्रवचनसारोद्धार	८५२
निशीथभाष्यम्		५०८९	प्रवचनसारोद्धार	८५३
निशीथभाष्यम्		४८३३	प्रवचनसारोद्धार	१००१
निशीथभाष्यम्		४८३४	प्रवचनसारोद्धार	१००२
निशीथभाष्यम्		४८३५	प्रवचनसारोद्धार	१००३
पञ्चकल्पभाष्यम्		२००	प्रवचनसारोद्धार	७९०
पञ्चकल्पभाष्यम्		२०१	प्रवचनसारोद्धार	७९१
पञ्चसंग्रह	द्वार	३/११	प्रवचनसारोद्धार	१२७४
पञ्चसंग्रह	द्वार	३/४	प्रवचनसारोद्धार	१२५४
पञ्चसंग्रह	द्वार	३/२५	प्रवचनसारोद्धार	१२९८
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्		३७१	प्रवचनसारोद्धार	२१७
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्		७७५	प्रवचनसारोद्धार	४९४
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्		८२७	प्रवचनसारोद्धार	५३३
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्		१५३८	प्रवचनसारोद्धार	६११
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्		१५३९	प्रवचनसारोद्धार	६१२
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्		१५४०	प्रवचनसारोद्धार	६१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	१५४१	प्रवचनसारोद्धार	६१४
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	१५४७	प्रवचनसारोद्धार	६२३
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	१५४८	प्रवचनसारोद्धार	६२४
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	१५४९	प्रवचनसारोद्धार	६२५
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	१५५०	प्रवचनसारोद्धार	६२६
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	१५५१	प्रवचनसारोद्धार	६२७
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	१५५२	प्रवचनसारोद्धार	६२८
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	३९९	प्रवचनसारोद्धार	७०१
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	४००	प्रवचनसारोद्धार	७१०
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	३००	प्रवचनसारोद्धार	७४५
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	२३०	प्रवचनसारोद्धार	७६८
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	८९५	प्रवचनसारोद्धार	७७२
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	८९६	प्रवचनसारोद्धार	७७३
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	१३२८	प्रवचनसारोद्धार	७८०
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	१३२९	प्रवचनसारोद्धार	७८१
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	१३३०	प्रवचनसारोद्धार	७८२
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	७०७	प्रवचनसारोद्धार	८७१
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	७०८	प्रवचनसारोद्धार	८७२
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	७०९	प्रवचनसारोद्धार	८७३
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	७०६	प्रवचनसारोद्धार	८७४
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	१५७४	प्रवचनसारोद्धार	८७५
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	१५७५	प्रवचनसारोद्धार	८७६
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	९२६	प्रवचनसारोद्धार	८८५
पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	९२७	प्रवचनसारोद्धार	८८६
पञ्चाशकप्रकरणम्	३/१७	प्रवचनसारोद्धार	७२
पञ्चाशकप्रकरणम्	३/१८	प्रवचनसारोद्धार	७३
पञ्चाशकप्रकरणम्	३/१९	प्रवचनसारोद्धार	७४
पञ्चाशकप्रकरणम्	३/२०	प्रवचनसारोद्धार	७५
पञ्चाशकप्रकरणम्	३/२१	प्रवचनसारोद्धार	७६
पञ्चाशकप्रकरणम्	५/८	प्रवचनसारोद्धार	२०३
पञ्चाशकप्रकरणम्	५/९	प्रवचनसारोद्धार	२०४
पञ्चाशकप्रकरणम्	५/१०	प्रवचनसारोद्धार	२०५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पञ्चाशकप्रकरणम्	५/२७	प्रवचनसारोद्धार	२०७
पञ्चाशकप्रकरणम्	५/२८	प्रवचनसारोद्धार	२०८
पञ्चाशकप्रकरणम्	५/२९	प्रवचनसारोद्धार	२०९
पञ्चाशकप्रकरणम्	५/३०	प्रवचनसारोद्धार	२१०
पञ्चाशकप्रकरणम्	१३/३	प्रवचनसारोद्धार	५६३
पञ्चाशकप्रकरणम्	१८/३	प्रवचनसारोद्धार	५७४
पञ्चाशकप्रकरणम्	१८/४	प्रवचनसारोद्धार	५७५
पञ्चाशकप्रकरणम्	१८/५	प्रवचनसारोद्धार	५७६
पञ्चाशकप्रकरणम्	१८/६	प्रवचनसारोद्धार	५७७
पञ्चाशकप्रकरणम्	१८/७	प्रवचनसारोद्धार	५७८
पञ्चाशकप्रकरणम्	१७/२६	प्रवचनसारोद्धार	६४७
पञ्चाशकप्रकरणम्	१७/१०	प्रवचनसारोद्धार	६५०
पञ्चाशकप्रकरणम्	१७/८	प्रवचनसारोद्धार	६५१
पञ्चाशकप्रकरणम्	१७/१२	प्रवचनसारोद्धार	६५२
पञ्चाशकप्रकरणम्	१७/१६	प्रवचनसारोद्धार	६५३
पञ्चाशकप्रकरणम्	१७/३२	प्रवचनसारोद्धार	६५४
पञ्चाशकप्रकरणम्	१७/३७	प्रवचनसारोद्धार	६५६
पञ्चाशकप्रकरणम्	१७/३८	प्रवचनसारोद्धार	६५७
पञ्चाशकप्रकरणम्	१७/३९	प्रवचनसारोद्धार	६५८
पञ्चाशकप्रकरणम्	१६/२	प्रवचनसारोद्धार	७४०
पञ्चाशकप्रकरणम्	१२/२	प्रवचनसारोद्धार	७६०
पञ्चाशकप्रकरणम्	१२/३	प्रवचनसारोद्धार	७६१
पञ्चाशकप्रकरणम्	१२/१०	प्रवचनसारोद्धार	७६३
पञ्चाशकप्रकरणम्	१२/१४	प्रवचनसारोद्धार	७६४
पञ्चाशकप्रकरणम्	१४/२	प्रवचनसारोद्धार	८३९
पञ्चाशकप्रकरणम्	१४/३	प्रवचनसारोद्धार	८४०
पञ्चाशकप्रकरणम्	१४/४	प्रवचनसारोद्धार	८४१
पञ्चाशकप्रकरणम्	१४/५	प्रवचनसारोद्धार	८४२
पञ्चाशकप्रकरणम्	१४/६	प्रवचनसारोद्धार	८४३
पञ्चाशकप्रकरणम्	१४/७	प्रवचनसारोद्धार	८४४
पञ्चाशकप्रकरणम्	१४/८	प्रवचनसारोद्धार	८४५
पञ्चाशकप्रकरणम्	१४/९	प्रवचनसारोद्धार	८४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पञ्चाशकप्रकरणम्	१५/४१	प्रवचनसारोद्धार	८६२
पञ्चाशकप्रकरणम्	१०/१७	प्रवचनसारोद्धार	९८५
पञ्चाशकप्रकरणम्	१०/१८	प्रवचनसारोद्धार	९८६
पञ्चाशकप्रकरणम्	१०/१९	प्रवचनसारोद्धार	९८७
पर्यन्ताराधना	८	प्रवचनसारोद्धार	९७६
पर्यन्ताराधना	९	प्रवचनसारोद्धार	८७७
पर्यन्ताराधना	१८	प्रवचनसारोद्धार	९२७
पर्यन्ताराधना	२६०	प्रवचनसारोद्धार	६४१
पिण्डविशुद्धि	३	प्रवचनसारोद्धार	५६४
पिण्डविशुद्धि	४	प्रवचनसारोद्धार	५६५
पिण्डविशुद्धि	४०८	प्रवचनसारोद्धार	५६६
पिण्डविशुद्धि	४०९	प्रवचनसारोद्धार	५६७
पिण्डविशुद्धि	५२०	प्रवचनसारोद्धार	५६८
पिण्डविशुद्धि	६६२	प्रवचनसारोद्धार	७३४
पिण्डविशुद्धि	६६३	प्रवचनसारोद्धार	७३५
पिण्डविशुद्धि	६६४	प्रवचनसारोद्धार	७३६
पिण्डविशुद्धि	६६५	प्रवचनसारोद्धार	७३७
पिण्डविशुद्धि	६६६	प्रवचनसारोद्धार	७३८
पिण्डविशुद्धि	२६	प्रवचनसारोद्धार	८६४
पिण्डविशुद्धि	२७	प्रवचनसारोद्धार	८६५
पिण्डविशुद्धि	६४२	प्रवचनसारोद्धार	८६६
पिण्डविशुद्धि	६५०	प्रवचनसारोद्धार	८६७
पिण्डविशुद्धि	६५१	प्रवचनसारोद्धार	८६८
पिण्डविशुद्धि	६५२	प्रवचनसारोद्धार	८६९
पिण्डविशुद्धि	६५३	प्रवचनसारोद्धार	८७०
प्रज्ञापनासूत्रम् पद११/सू. ८६२गा. १९४		प्रवचनसारोद्धार	८९१
प्रज्ञापनासूत्रम् पद११/सू. ८६३ गा. १९५		प्रवचनसारोद्धार	८९२
प्रज्ञापनासूत्रम् पद १/सू. ८६६ गा. १९६		प्रवचनसारोद्धार	८९५
प्रज्ञापनासूत्रम् पद १/सू. ११० गा. १३१		प्रवचनसारोद्धार	९२८
प्रज्ञापनासूत्रम् पद १/सू. ११० गा. ११९		प्रवचनसारोद्धार	९५०
प्रज्ञापनासूत्रम् पद १/सू. ११० गा. १२१		प्रवचनसारोद्धार	९५१
प्रज्ञापनासूत्रम् पद १/सू. ११० गा. १२२		प्रवचनसारोद्धार	९५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रज्ञापनासूत्रम् पद२/सू. १९४ गा. १५१		प्रवचनसारोद्धार	११३१
प्रज्ञापनासूत्रम् पद१/सू. १०२ गा. ११२		प्रवचनसारोद्धार	१५८७
प्रज्ञापनासूत्रम् पद१/सू.१०२ गा. ११३		प्रवचनसारोद्धार	१५८८
प्रज्ञापनासूत्रम् पद१/सू. १०२ गा. ११४		प्रवचनसारोद्धार	१५८९
प्रज्ञापनासूत्रम् पद१/सू. १०२ गा. ११५		प्रवचनसारोद्धार	१५९०
प्रज्ञापनासूत्रम् पद१/सू. १०२ गा. ११६		प्रवचनसारोद्धार	१५९१
प्रज्ञापनासूत्रम् पद१/सू. १०२ गा. ११७		प्रवचनसारोद्धार	१५९२
बृहत्कल्पभाष्यम्	१३२८	प्रवचनसारोद्धार	४९८
बृहत्कल्पभाष्यम्	१४३९	प्रवचनसारोद्धार	६१४
बृहत्कल्पभाष्यम्	१४४१	प्रवचनसारोद्धार	६२४
बृहत्कल्पभाष्यम्	१४४२	प्रवचनसारोद्धार	६२५
बृहत्कल्पभाष्यम्	१४४३	प्रवचनसारोद्धार	६२६
बृहत्कल्पभाष्यम्	१४४४	प्रवचनसारोद्धार	६२७
बृहत्कल्पभाष्यम्	१४४५	प्रवचनसारोद्धार	६२८
बृहत्कल्पभाष्यम्	६३६१	प्रवचनसारोद्धार	६५०
बृहत्कल्पभाष्यम्	१७७५	प्रवचनसारोद्धार	६६३
बृहत्कल्पभाष्यम्	४४३	प्रवचनसारोद्धार	७०९
बृहत्कल्पभाष्यम्	४४४	प्रवचनसारोद्धार	७१०
बृहत्कल्पभाष्यम्	६८८	प्रवचनसारोद्धार	७७०
बृहत्कल्पभाष्यम्	४२८६	प्रवचनसारोद्धार	७७५
बृहत्कल्पभाष्यम्	४२८७	प्रवचनसारोद्धार	७७६
बृहत्कल्पभाष्यम्	१५०६	प्रवचनसारोद्धार	७८३
बृहत्कल्पभाष्यम्	१५०७	प्रवचनसारोद्धार	७८४
बृहत्कल्पभाष्यम्	१५०८	प्रवचनसारोद्धार	७८५
बृहत्कल्पभाष्यम्	४५६	प्रवचनसारोद्धार	७८६
बृहत्कल्पभाष्यम्	४५७	प्रवचनसारोद्धार	७८७
बृहत्कल्पभाष्यम्	४५८	प्रवचनसारोद्धार	७८८
बृहत्कल्पभाष्यम्	४५९	प्रवचनसारोद्धार	७८९
बृहत्कल्पभाष्यम्	३८९०	प्रवचनसारोद्धार	७९७
बृहत्कल्पभाष्यम्	३८९१	प्रवचनसारोद्धार	७९८
बृहत्कल्पभाष्यम्	३८९२	प्रवचनसारोद्धार	७९९
बृहत्कल्पभाष्यम्	३५२५	प्रवचनसारोद्धार	८००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बृहत्कल्पभाष्यम्	३५२६	प्रवचनसारोद्धार	८०१
बृहत्कल्पभाष्यम्	३५३०	प्रवचनसारोद्धार	८०२
बृहत्कल्पभाष्यम्	३५२९	प्रवचनसारोद्धार	८०३
बृहत्कल्पभाष्यम्	३५३९	प्रवचनसारोद्धार	८०५
बृहत्कल्पभाष्यम्	३५४१	प्रवचनसारोद्धार	८०७
बृहत्कल्पभाष्यम्	३५४३	प्रवचनसारोद्धार	८०८
बृहत्कल्पभाष्यम्	२८३२	प्रवचनसारोद्धार	८५०
बृहत्कल्पभाष्यम्	२८३१	प्रवचनसारोद्धार	८५१
बृहत्कल्पभाष्यम्	२८३३	प्रवचनसारोद्धार	८५२
बृहत्कल्पभाष्यम्	२८३४	प्रवचनसारोद्धार	८५३
बृहत्कल्पभाष्यम्	५८२	प्रवचनसारोद्धार	८७१
बृहत्कल्पभाष्यम्	५८३	प्रवचनसारोद्धार	८७२
बृहत्कल्पभाष्यम्	५८४	प्रवचनसारोद्धार	८७३
बृहत्कल्पभाष्यम्	१४९४	प्रवचनसारोद्धार	८७९
बृहत्कल्पभाष्यम्	१४९५	प्रवचनसारोद्धार	८८०
बृहत्कल्पभाष्यम्	९७३	प्रवचनसारोद्धार	१००१
बृहत्कल्पभाष्यम्	९७४	प्रवचनसारोद्धार	१००२
बृहत्कल्पभाष्यम्	९७५	प्रवचनसारोद्धार	१००३
बृहत्संग्रहणी	३५१	प्रवचनसारोद्धार	९६८
बृहत्संग्रहणी	३५२	प्रवचनसारोद्धार	९६९
बृहत्संग्रहणी	२३९	प्रवचनसारोद्धार	१०७२
बृहत्संग्रहणी	२५५	प्रवचनसारोद्धार	१०७३
बृहत्संग्रहणी	२३३	प्रवचनसारोद्धार	१०७५
बृहत्संग्रहणी	२३४	प्रवचनसारोद्धार	१०७६
बृहत्संग्रहणी	२७९	प्रवचनसारोद्धार	१०७९
बृहत्संग्रहणी	२८०	प्रवचनसारोद्धार	१०८०
बृहत्संग्रहणी	२८१	प्रवचनसारोद्धार	१०८१
बृहत्संग्रहणी	२८२	प्रवचनसारोद्धार	१०८२
बृहत्संग्रहणी	२८९	प्रवचनसारोद्धार	१०८३
बृहत्संग्रहणी	२८४	प्रवचनसारोद्धार	१०९१
बृहत्संग्रहणी	२८५	प्रवचनसारोद्धार	१०९२
बृहत्संग्रहणी	२८६	प्रवचनसारोद्धार	१०९३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बृहत्संग्रहणी	३३३	प्रवचनसारोद्धार	१०९४
बृहत्संग्रहणी	३३४	प्रवचनसारोद्धार	१०९५
बृहत्संग्रहणी	३१२	प्रवचनसारोद्धार	१०९६
बृहत्संग्रहणी	३१३	प्रवचनसारोद्धार	१०९७
बृहत्संग्रहणी	३१४	प्रवचनसारोद्धार	१०९८
बृहत्संग्रहणी	३०७	प्रवचनसारोद्धार	१०९९
बृहत्संग्रहणी	३११	प्रवचनसारोद्धार	११०२
बृहत्संग्रहणी	३१०	प्रवचनसारोद्धार	११०३
बृहत्संग्रहणी	३०८	प्रवचनसारोद्धार	११०४
बृहत्संग्रहणी	३४२	प्रवचनसारोद्धार	१११०
बृहत्संग्रहणी	१७०	प्रवचनसारोद्धार	१११७
बृहत्संग्रहणी	१६९	प्रवचनसारोद्धार	१११८
बृहत्संग्रहणी	१७१	प्रवचनसारोद्धार	१११९
बृहत्संग्रहणी	१७२	प्रवचनसारोद्धार	११२०
बृहत्संग्रहणी	३३७	प्रवचनसारोद्धार	११२४
बृहत्संग्रहणी	३३८	प्रवचनसारोद्धार	११२५
बृहत्संग्रहणी	३४०	प्रवचनसारोद्धार	११२६
बृहत्संग्रहणी	३४१	प्रवचनसारोद्धार	११२७
बृहत्संग्रहणी	४२	प्रवचनसारोद्धार	११२९
बृहत्संग्रहणी	५८	प्रवचनसारोद्धार	११३०
बृहत्संग्रहणी	५	प्रवचनसारोद्धार	११३८
बृहत्संग्रहणी	६	प्रवचनसारोद्धार	११३९
बृहत्संग्रहणी	४	प्रवचनसारोद्धार	११४०
बृहत्संग्रहणी	१२	प्रवचनसारोद्धार	११४३
बृहत्संग्रहणी	१७	प्रवचनसारोद्धार	११४६
बृहत्संग्रहणी	३५	प्रवचनसारोद्धार	११४७
बृहत्संग्रहणी	३६	प्रवचनसारोद्धार	११४८
बृहत्संग्रहणी	३७	प्रवचनसारोद्धार	११४९
बृहत्संग्रहणी	५५	प्रवचनसारोद्धार	११५०
बृहत्संग्रहणी	११७	प्रवचनसारोद्धार	११५१
बृहत्संग्रहणी	११८	प्रवचनसारोद्धार	११५२
बृहत्संग्रहणी	११९	प्रवचनसारोद्धार	११५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बृहत्संग्रहणी	१२०	प्रवचनसारोद्धार	११५४
बृहत्संग्रहणी	१४३	प्रवचनसारोद्धार	११५५
बृहत्संग्रहणी	१४४	प्रवचनसारोद्धार	११५६
बृहत्संग्रहणी	१४८	प्रवचनसारोद्धार	११५७
बृहत्संग्रहणी	१५०	प्रवचनसारोद्धार	११५८
बृहत्संग्रहणी	२२०	प्रवचनसारोद्धार	११६१
बृहत्संग्रहणी	२२१	प्रवचनसारोद्धार	११६२
बृहत्संग्रहणी	२२२	प्रवचनसारोद्धार	११६३
बृहत्संग्रहणी	२२३	प्रवचनसारोद्धार	११६४
बृहत्संग्रहणी	२२४	प्रवचनसारोद्धार	११६५
बृहत्संग्रहणी	१५०	प्रवचनसारोद्धार	११६७
बृहत्संग्रहणी	१५१	प्रवचनसारोद्धार	११६८
बृहत्संग्रहणी	१५२	प्रवचनसारोद्धार	११६९
बृहत्संग्रहणी	१५३	प्रवचनसारोद्धार	११७०
बृहत्संग्रहणी	१५४	प्रवचनसारोद्धार	११७१
बृहत्संग्रहणी	१५५	प्रवचनसारोद्धार	११७२
बृहत्संग्रहणी	१५६	प्रवचनसारोद्धार	११७३
बृहत्संग्रहणी	१८०	प्रवचनसारोद्धार	११७४
बृहत्संग्रहणी	१५७	प्रवचनसारोद्धार	११७७
बृहत्संग्रहणी	१८४	प्रवचनसारोद्धार	११७८
बृहत्संग्रहणी	१९८	प्रवचनसारोद्धार	११८०
बृहत्संग्रहणी	१९९	प्रवचनसारोद्धार	११८१
बृहत्संग्रहणी	२००	प्रवचनसारोद्धार	११८२
बृहत्संग्रहणी	२०१	प्रवचनसारोद्धार	११८३
बृहत्संग्रहणी	२०२	प्रवचनसारोद्धार	११८४
बृहत्संग्रहणी	२१४	प्रवचनसारोद्धार	११८५
बृहत्संग्रहणी	२१५	प्रवचनसारोद्धार	११८७
बृहत्संग्रहणी	३०३	प्रवचनसारोद्धार	१२१५
बृहत्संग्रहणी	३०४	प्रवचनसारोद्धार	१२१६
बृहत्संग्रहणी	३१२	प्रवचनसारोद्धार	१२१७
बृहत्संग्रहणी	३६३	प्रवचनसारोद्धार	१३१७
बृहत्संग्रहणी	१८१	प्रवचनसारोद्धार	१४३९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बृहत्संग्रहणी	६/५/२४३	प्रवचनसारोद्धार	१४४९
बृहत्संग्रहणी	२५/७/८०१	प्रवचनसारोद्धार	७६०
भगवतीसूत्रम्	३/७/४	प्रवचनसारोद्धार	१०८५
भगवतीसूत्रम्	६/५/२४३	प्रवचनसारोद्धार	१४४३
विशेषणवती	१	प्रवचनसारोद्धार	१३९६
व्यवहारसूत्रभाष्यम्	उ.१ गा.५३	प्रवचनसारोद्धार	७५०
व्यवहारसूत्रभाष्यम्	उ.२ गा.२०	प्रवचनसारोद्धार	७७०
व्यवहारसूत्रभाष्यम्	उ.३ गा.१५	प्रवचनसारोद्धार	७८०
व्यवहारसूत्रभाष्यम्	उ.३ गा. १६	प्रवचनसारोद्धार	७८१
श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	२	प्रवचनसारोद्धार	१३२३
श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	३	प्रवचनसारोद्धार	१३२४
श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	५	प्रवचनसारोद्धार	१३२५
श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	६	प्रवचनसारोद्धार	१३२६
श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	७	प्रवचनसारोद्धार	१३२७
श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	८	प्रवचनसारोद्धार	१३२८
श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	९	प्रवचनसारोद्धार	१३२९
श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	१०	प्रवचनसारोद्धार	१३३०
श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	११	प्रवचनसारोद्धार	१३३१
श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	१२	प्रवचनसारोद्धार	१३३२
श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	१३	प्रवचनसारोद्धार	१३३३
श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	१४	प्रवचनसारोद्धार	१३३४
श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	१६	प्रवचनसारोद्धार	१३३५
श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	१७	प्रवचनसारोद्धार	१३३६
श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	१८	प्रवचनसारोद्धार	१३३७
श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	१९	प्रवचनसारोद्धार	१३३८
श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	२०	प्रवचनसारोद्धार	१३३९
श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	२१	प्रवचनसारोद्धार	१३४०
श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	२२	प्रवचनसारोद्धार	१३४१
श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	२३	प्रवचनसारोद्धार	१३४२
श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	२४	प्रवचनसारोद्धार	१३४४
श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	२५	प्रवचनसारोद्धार	१३४५
श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	२६	प्रवचनसारोद्धार	१३४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	२७	प्रवचनसारोद्धार	१३४७
श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	२८	प्रवचनसारोद्धार	१३४८
श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	३०	प्रवचनसारोद्धार	१३४९
श्रावकव्रतभङ्गप्रकरणम्	४०	प्रवचनसारोद्धार	१३५०
संतिकरं	७	प्रवचनसारोद्धार	३७३
संतिकरं	८	प्रवचनसारोद्धार	३७४
संतिकरं	९	प्रवचनसारोद्धार	३७५
संतिकरं	१०	प्रवचनसारोद्धार	३७६
सप्ततिशतस्थानप्रकरणम्	२०८	प्रवचनसारोद्धार	४४०
समवायांगसूत्रम् स्था.१५सू.१गा.	११-१२	प्रवचनसारोद्धार	१०८६
समवायांगसूत्रम् परि. सू.	१५८/४७	प्रवचनसारोद्धार	१२०९
समवायांगसूत्रम् परि. सू.	१५८/४८	प्रवचनसारोद्धार	१२१०
संबोधप्रकरण	२/१८	प्रवचनसारोद्धार	१०३
संबोधप्रकरण	२/१२	प्रवचनसारोद्धार	१०६
संबोधप्रकरण	२/१७	प्रवचनसारोद्धार	१२०
संबोधप्रकरण	७/९२	प्रवचनसारोद्धार	२३८
संबोधप्रकरण	७/१४१	प्रवचनसारोद्धार	२६४
संबोधप्रकरण	७/१४६	प्रवचनसारोद्धार	२६७
संबोधप्रकरण	७/१४८	प्रवचनसारोद्धार	२६९
संबोधप्रकरण	६/१५०	प्रवचनसारोद्धार	२७१
संबोधप्रकरण	६/१५१	प्रवचनसारोद्धार	२७२
संबोधप्रकरण	७/३७	प्रवचनसारोद्धार	२७७
संबोधप्रकरण	७/४७	प्रवचनसारोद्धार	२७८
संबोधप्रकरण	७/४८	प्रवचनसारोद्धार	२७९
संबोधप्रकरण	७/६४	प्रवचनसारोद्धार	२८०
संबोधप्रकरण	७/१९८	प्रवचनसारोद्धार	२८३
संबोधप्रकरण	५/१३८	प्रवचनसारोद्धार	२८६
संबोधप्रकरण	१/८७	प्रवचनसारोद्धार	४३२
संबोधप्रकरण	१/३४	प्रवचनसारोद्धार	४४३
संबोधप्रकरण	१/३५	प्रवचनसारोद्धार	४४४
संबोधप्रकरण	१/३६	प्रवचनसारोद्धार	४४५
संबोधप्रकरण	१/१४	प्रवचनसारोद्धार	४५२
संबोधप्रकरण	२/१८	प्रवचनसारोद्धार	४९१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संबोधप्रकरण	२/२३०	प्रवचनसारोद्धार	५५१
संबोधप्रकरण	२/२२३	प्रवचनसारोद्धार	५५२
संबोधप्रकरण	२/६८	प्रवचनसारोद्धार	५५७
संबोधप्रकरण	२/२३१	प्रवचनसारोद्धार	५६२
संबोधप्रकरण	२/२७०	प्रवचनसारोद्धार	५६५
संबोधप्रकरण	२/२७१	प्रवचनसारोद्धार	५६६
संबोधप्रकरण	२/२७३	प्रवचनसारोद्धार	५६८
संबोधप्रकरण	२/२३४	प्रवचनसारोद्धार	६३६
संबोधप्रकरण	३/२३८	प्रवचनसारोद्धार	६४०
संबोधप्रकरण	२/२३९	प्रवचनसारोद्धार	६४१
संबोधप्रकरण	२/१६	प्रवचनसारोद्धार	६४४
संबोधप्रकरण	२/२४१	प्रवचनसारोद्धार	७१९
संबोधप्रकरण	२/२४९	प्रवचनसारोद्धार	७२८
संबोधप्रकरण	२/२७४	प्रवचनसारोद्धार	७३४
संबोधप्रकरण	२/२७७	प्रवचनसारोद्धार	७३९
संबोधप्रकरण	२/२८०	प्रवचनसारोद्धार	७४५
संबोधप्रकरण	१२/५२	प्रवचनसारोद्धार	७५४
संबोधप्रकरण	१२/५३	प्रवचनसारोद्धार	७५५
संबोधप्रकरण	१२/५४	प्रवचनसारोद्धार	७५६
संबोधप्रकरण	१२/५५	प्रवचनसारोद्धार	७५७
संबोधप्रकरण	१२/५६	प्रवचनसारोद्धार	७५८
संबोधप्रकरण	११/३८	प्रवचनसारोद्धार	८०९
संबोधप्रकरण	४/३०	प्रवचनसारोद्धार	८३६
संबोधप्रकरण	४/३२	प्रवचनसारोद्धार	८३७
संबोधप्रकरण	१२/६७	प्रवचनसारोद्धार	८५५
संबोधप्रकरण	१२/७०	प्रवचनसारोद्धार	८५८
संबोधप्रकरण	१२/७१	प्रवचनसारोद्धार	८५९
संबोधप्रकरण	२/५२	प्रवचनसारोद्धार	८९१
संबोधप्रकरण	४/६०	प्रवचनसारोद्धार	९२७
संबोधप्रकरण	४/६१	प्रवचनसारोद्धार	९२८
संबोधप्रकरण	४/६८	प्रवचनसारोद्धार	९३४
संबोधप्रकरण	४/८४	प्रवचनसारोद्धार	९४५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संबोधप्रकरण	४/८५	प्रवचनसारोद्धार	९४६
संबोधप्रकरण	४/८८	प्रवचनसारोद्धार	९४९
संबोधप्रकरण	४/८९	प्रवचनसारोद्धार	९५०
संबोधप्रकरण	७/१	प्रवचनसारोद्धार	९७७
संबोधप्रकरण	६/८८	प्रवचनसारोद्धार	९८०
संबोधप्रकरण	६/८९	प्रवचनसारोद्धार	९८१
संबोधप्रकरण	६/९०	प्रवचनसारोद्धार	९८२
संबोधप्रकरण	६/९६	प्रवचनसारोद्धार	९८४
संबोधप्रकरण	६/९८	प्रवचनसारोद्धार	९८६
संबोधप्रकरण	६/१०४	प्रवचनसारोद्धार	९८९
संबोधप्रकरण	६/१०३	प्रवचनसारोद्धार	९९२
संबोधप्रकरण	६/११०	प्रवचनसारोद्धार	९९३
संबोधप्रकरण	२/४५	प्रवचनसारोद्धार	१०५७
संबोधप्रकरण	२/६५	प्रवचनसारोद्धार	१०६४
संबोधप्रकरण	२/६६	प्रवचनसारोद्धार	१०६५
संबोधप्रकरण	२/३२	प्रवचनसारोद्धार	१२३८
संबोधप्रकरण	३/३७	प्रवचनसारोद्धार	१२४२
संबोधप्रकरण	३/३८	प्रवचनसारोद्धार	१२४३
संबोधप्रकरण	३/३९	प्रवचनसारोद्धार	१२४४
संबोधप्रकरण	२/४२	प्रवचनसारोद्धार	१२४७
संबोधप्रकरण	३/१९९	प्रवचनसारोद्धार	१३५४
संबोधप्रकरण	३/२००	प्रवचनसारोद्धार	१३५५
संबोधप्रकरण	५/६	प्रवचनसारोद्धार	१३५६
संबोधप्रकरण	५/७	प्रवचनसारोद्धार	१३५७
संबोधप्रकरण	५/८	प्रवचनसारोद्धार	१३५८
स्थानांगसूत्रम् स्था.१० सू.७७७गा. १७५		प्रवचनसारोद्धार	८८५
स्थानांगसूत्रम् स्था.१० सू.७७७गा. १७६		प्रवचनसारोद्धार	८८६
स्थानांगसूत्रम् स्था.९/सू.६७३गा.१		प्रवचनसारोद्धार	१२१८
स्थानांगसूत्रम् स्था.९/सू.६७३गा.२		प्रवचनसारोद्धार	१२१९
स्थानांगसूत्रम् स्था.९ सू.६७३गा. ३		प्रवचनसारोद्धार	१२२०

* मुनि जम्बूविजयजी द्वारा सम्पादित ठाणांगसुत्त में इनका गाथा क्रमांक १ से १४ न होकर गाथा क्रमांक ११७-१३० है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्थानांगसूत्रम् स्था.९ सू.६७३गा.४	प्रवचनसारोद्धार	१२२१
स्थानांगसूत्रम् स्था.९ सू.६७३गा.५	प्रवचनसारोद्धार	१२२२
स्थानांगसूत्रम् स्था.९ सू.६७३गा.६	प्रवचनसारोद्धार	१२२३
स्थानांगसूत्रम् स्था.९ सू.६७३गा.७	प्रवचनसारोद्धार	१२२४
स्थानांगसूत्रम् स्था.९ सू.६७३गा.८	प्रवचनसारोद्धार	१२२५
स्थानांगसूत्रम् स्था.९ सू.६७३गा.९	प्रवचनसारोद्धार	१२२६
स्थानांगसूत्रम् स्था.९ सू.६७३गा.१०	प्रवचनसारोद्धार	१२२७
स्थानांगसूत्रम् स्था.९ सू.६७३गा.११	प्रवचनसारोद्धार	१२२८
स्थानांगसूत्रम् स्था.९ सू.६७३गा.१२	प्रवचनसारोद्धार	१२२९
स्थानांगसूत्रम् स्था.९ सू.६७३गा.१३	प्रवचनसारोद्धार	१२३०
स्थानांगसूत्रम् स्था.९ सू.६७३गा.१४	प्रवचनसारोद्धार	१२३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवचनसारोद्धार और अन्य ग्रन्थों की गाथाएँ

प्रवचनसारोद्धार	६६	चैत्यवन्दनमहाभाष्यम्	१८०
प्रवचनसारोद्धार	७२	पञ्चाशकप्रकरणम्	३/१७
प्रवचनसारोद्धार	७३	पञ्चाशकप्रकरणम्	३/१८
प्रवचनसारोद्धार	७४	पञ्चाशकप्रकरणम्	३/१९
प्रवचनसारोद्धार	७५	पञ्चाशकप्रकरणम्	३/२०
प्रवचनसारोद्धार	७६	पञ्चाशकप्रकरणम्	३/२१
प्रवचनसारोद्धार	९८	आवश्यकनिर्युक्ति	१२०२
प्रवचनसारोद्धार	१०३	संबोधप्रकरण	२/१८
प्रवचनसारोद्धार	१०६	संबोधप्रकरण	२/१२
प्रवचनसारोद्धार	१२०	संबोधप्रकरण	२/१७
प्रवचनसारोद्धार	१२४	आवश्यकनिर्युक्ति	११९८
प्रवचनसारोद्धार	१२९	आराधनापताका (प्रा.)	५०४
प्रवचनसारोद्धार	१८३	आवश्यकनिर्युक्ति	३१
प्रवचनसारोद्धार	१८४	आवश्यकनिर्युक्ति	१५३२
प्रवचनसारोद्धार	२०३	आवश्यकनिर्युक्ति	१५९९
प्रवचनसारोद्धार	२०३	पञ्चाशकप्रकरणम्	५/८
प्रवचनसारोद्धार	२०४	आवश्यकनिर्युक्ति	१६००
प्रवचनसारोद्धार	२०४	पञ्चाशकप्रकरणम्	५/९
प्रवचनसारोद्धार	२०५	आवश्यकनिर्युक्ति	१६०१
प्रवचनसारोद्धार	२०५	पञ्चाशकप्रकरणम्	५/१०
प्रवचनसारोद्धार	२०६	आवश्यकनिर्युक्ति	१६०२
प्रवचनसारोद्धार	२०७	पञ्चाशकप्रकरणम्	५/२७
प्रवचनसारोद्धार	२०८	पञ्चाशकप्रकरणम्	५/८
प्रवचनसारोद्धार	२०९	पञ्चाशकप्रकरणम्	५/२९
प्रवचनसारोद्धार	२१०	पञ्चाशकप्रकरणम्	५/३०
प्रवचनसारोद्धार	२१७	पञ्चवस्तुप्रकरणम्	३७१
प्रवचनसारोद्धार	२३८	संबोधप्रकरण	७/९२
प्रवचनसारोद्धार	२४७	आवश्यकनिर्युक्ति	१५४६
प्रवचनसारोद्धार	२४७	चैत्यवन्दन महाभाष्य	४७८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवचनसारोद्धार	२४९	चैत्यवन्दन महाभाष्य	४८०
प्रवचनसारोद्धार	२५०	चैत्यवन्दन महाभाष्य	४८१
प्रवचनसारोद्धार	२५१	चैत्यवन्दन महाभाष्य	४८२
प्रवचनसारोद्धार	२५२	चैत्यवन्दन महाभाष्य	४८३
प्रवचनसारोद्धार	२५३	चैत्यवन्दन महाभाष्य	४८४
प्रवचनसारोद्धार	२५४	चैत्यवन्दन महाभाष्य	४८५
प्रवचनसारोद्धार	२५५	चैत्यवन्दन महाभाष्य	४८६
प्रवचनसारोद्धार	२५६	चैत्यवन्दन महाभाष्य	४८७
प्रवचनसारोद्धार	२५७	चैत्यवन्दन महाभाष्य	४८९
प्रवचनसारोद्धार	२५८	चैत्यवन्दन महाभाष्य	४९०
प्रवचनसारोद्धार	२५९	चैत्यवन्दन महाभाष्य	४९१
प्रवचनसारोद्धार	२६०	चैत्यवन्दन महाभाष्य	४९२
प्रवचनसारोद्धार	२६१	चैत्यवन्दन महाभाष्य	४९३
प्रवचनसारोद्धार	२६२	चैत्यवन्दन महाभाष्य	४९४
प्रवचनसारोद्धार	२६४	संबोधप्रकरण	७/१४१
प्रवचनसारोद्धार	२६७	संबोधप्रकरण	७/१४६
प्रवचनसारोद्धार	२६७	आराधनापताका (वीरभद्र)	८९
प्रवचनसारोद्धार	२६७	आराधनापताका (प्रा.)	१७६
प्रवचनसारोद्धार	२६८	आराधनापताका (प्रा.)	१८०
प्रवचनसारोद्धार	२६८	आराधनापताका (वीरभद्र)	९०
प्रवचनसारोद्धार	२६९	संबोधप्रकरण	७/१४८
प्रवचनसारोद्धार	२७०	दशवैकालिकनिर्युक्ति	४७
प्रवचनसारोद्धार	२७१	दशवैकालिकनिर्युक्ति	४८
प्रवचनसारोद्धार	२७१	संबोधप्रकरण	६/१५०
प्रवचनसारोद्धार	२७२	संबोधप्रकरण	६/१५१
प्रवचनसारोद्धार	२७७	संबोधप्रकरण	७/३७
प्रवचनसारोद्धार	२७८	संबोधप्रकरण	७/४७
प्रवचनसारोद्धार	२८९	संबोधप्रकरण	७/४८
प्रवचनसारोद्धार	२८०	संबोधप्रकरण	७/६४
प्रवचनसारोद्धार	२८३	संबोधप्रकरण	७/१९८
प्रवचनसारोद्धार	२८६	संबोधप्रकरण	५/१३८
प्रवचनसारोद्धार	३१०	आवश्यकनिर्युक्ति	१७९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवचनसारोद्धार	३११	आवश्यकनिर्युक्ति	१८०
प्रवचनसारोद्धार	३१२	आवश्यकनिर्युक्ति	१८१
प्रवचनसारोद्धार	३२०	आवश्यकनिर्युक्ति	३८५
प्रवचनसारोद्धार	३२१	आवश्यकनिर्युक्ति	३८६
प्रवचनसारोद्धार	३२२	आवश्यकनिर्युक्ति	३८७
प्रवचनसारोद्धार	३२३	आवश्यकनिर्युक्ति	३८८
प्रवचनसारोद्धार	३२४	आवश्यकनिर्युक्ति	३८९
प्रवचनसारोद्धार	३२५	तित्थोगालीपइण्णयं	५६७
प्रवचनसारोद्धार	३२६	तित्थोगालीपइण्णयं	५६८
प्रवचनसारोद्धार	३२८	आवश्यकनिर्युक्ति	२६६
प्रवचनसारोद्धार	३२९	आवश्यकनिर्युक्ति	२६७
प्रवचनसारोद्धार	३७३	संतिकरं	७
प्रवचनसारोद्धार	३७४	संतिकरं	८
प्रवचनसारोद्धार	३७५	संतिकरं	९
प्रवचनसारोद्धार	३७६	संतिकरं	१०
प्रवचनसारोद्धार	३८१	आवश्यकनिर्युक्ति	३७६
प्रवचनसारोद्धार	३८२	आवश्यकनिर्युक्ति	३७७
प्रवचनसारोद्धार	३८३	आवश्यकनिर्युक्ति	२२४
प्रवचनसारोद्धार	३८४	आवश्यकनिर्युक्ति	२२५
प्रवचनसारोद्धार	३८४	तित्थोगालीपइण्णयं	३९५
प्रवचनसारोद्धार	३८५	आवश्यकनिर्युक्ति	३०३
प्रवचनसारोद्धार	३८६	आवश्यकनिर्युक्ति	३०४
प्रवचनसारोद्धार	३८७	आवश्यकनिर्युक्ति	३०५
प्रवचनसारोद्धार	३८८	आवश्यकनिर्युक्ति	३०८
प्रवचनसारोद्धार	३८९	आवश्यकनिर्युक्ति	३०९
प्रवचनसारोद्धार	३९०	आवश्यकनिर्युक्ति	३१०
प्रवचनसारोद्धार	४०३	निशीथभाष्यम्	१३९०
प्रवचनसारोद्धार	४०४	निशीथभाष्यम्	१३९१
प्रवचनसारोद्धार	४०६	तित्थोगालीपइण्णयं	३६०
प्रवचनसारोद्धार	४३२	चैतयवन्दनमहाभाष्यम्	६३
प्रवचनसारोद्धार	४३२	संबोधप्रकरण	१/८७
प्रवचनसारोद्धार	४४०	सप्ततिशतस्थानप्रकरणम्	२०८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवचनसारोद्धार	४४३	संबोधप्रकरण	१/३४
प्रवचनसारोद्धार	४४४	संबोधप्रकरण	१/३५
प्रवचनसारोद्धार	४४५	संबोधप्रकरण	१/३६
प्रवचनसारोद्धार	४५२	संबोधप्रकरण	१/१४
प्रवचनसारोद्धार	४५४	आवश्यकनिर्युक्ति	२२८
प्रवचनसारोद्धार	४५४	तित्थोगालीपइण्णयं	४००
प्रवचनसारोद्धार	४५५	आवश्यकनिर्युक्ति	२५५
प्रवचनसारोद्धार	४५६	आवश्यकनिर्युक्ति	३०६
प्रवचनसारोद्धार	४८२	आवश्यकनिर्युक्ति	९७०
प्रवचनसारोद्धार	४८२	तित्थोगालीपइण्णयं	१२३८
प्रवचनसारोद्धार	४८३	आवश्यकनिर्युक्ति	९६९
प्रवचनसारोद्धार	४८४	देविदत्थओ पइण्णयं	२८७
प्रवचनसारोद्धार	४८४	तित्थोगालीपइण्णयं	२३३
प्रवचनसारोद्धार	४८५	आवश्यकनिर्युक्ति	९६५
प्रवचनसारोद्धार	४८६	आवश्यकनिर्युक्ति	९५७
प्रवचनसारोद्धार	४८६	देविदत्थओ पइण्णयं	२८६
प्रवचनसारोद्धार	४८७	आवश्यकनिर्युक्ति	९७१
प्रवचनसारोद्धार	४८८	तित्थोगालीपइण्णयं	१२४२
प्रवचनसारोद्धार	४८८	आवश्यकनिर्युक्ति	९७२
प्रवचनसारोद्धार	४८९	आवश्यकनिर्युक्ति	९७३
प्रवचनसारोद्धार	४८९	तित्थोगालीपइण्णयं	१२४३
प्रवचनसारोद्धार	४९१	संबोधप्रकरण	२/१८
प्रवचनसारोद्धार	४९१	ओघनिर्युक्ति	६६८
प्रवचनसारोद्धार	४९२	ओघनिर्युक्ति	६६९
प्रवचनसारोद्धार	४९३	निशीथभाष्य	१३९०
प्रवचनसारोद्धार	४९४	निशीथभाष्य	१३९१
प्रवचनसारोद्धार	४९४	पञ्चवस्तुप्रकरणम्	७७५
प्रवचनसारोद्धार	४९७	निशीथभाष्यम्	१३९२
प्रवचनसारोद्धार	४९८	बृहत्कल्पभाष्यम्	१३२८
प्रवचनसारोद्धार	५०६	ओघनिर्युक्ति	७०३
प्रवचनसारोद्धार	५०७	ओघनिर्युक्ति	७०५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवचनसारोद्धार	५०८	ओघनिर्युक्ति	७०८
प्रवचनसारोद्धार	५०९	ओघनिर्युक्ति	७११
प्रवचनसारोद्धार	५१०	ओघनिर्युक्ति	७१३
प्रवचनसारोद्धार	५११	ओघनिर्युक्ति	७१४
प्रवचनसारोद्धार	५१२	ओघनिर्युक्ति	७२१
प्रवचनसारोद्धार	५१३	ओघनिर्युक्ति	७२३
प्रवचनसारोद्धार	५१४	ओघनिर्युक्ति	७१०
प्रवचनसारोद्धार	५१५	ओघनिर्युक्ति	७१२
प्रवचनसारोद्धार	५१६	ओघनिर्युक्ति	६९१
प्रवचनसारोद्धार	५१७	ओघनिर्युक्ति	७०६
प्रवचनसारोद्धार	५१८	ओघनिर्युक्ति	७२२
प्रवचनसारोद्धार	५२९	ओघनिर्युक्ति	६७६
प्रवचनसारोद्धार	५३०	ओघनिर्युक्ति	६७७
प्रवचनसारोद्धार	५३१	ओघनिर्युक्तिभाष्यम्	३१३
प्रवचनसारोद्धार	५३२	ओघनिर्युक्तिभाष्यम्	३१४
प्रवचनसारोद्धार	५३३	ओघनिर्युक्तिभाष्यम्	३१५
प्रवचनसारोद्धार	५३३	पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	८२७
प्रवचनसारोद्धार	५३४	ओघनिर्युक्तिभाष्यम्	३१६
प्रवचनसारोद्धार	५३५	ओघनिर्युक्तिभाष्यम्	३१७
प्रवचनसारोद्धार	५३६	ओघनिर्युक्तिभाष्यम्	३१८
प्रवचनसारोद्धार	५३७	ओघनिर्युक्तिभाष्यम्	३१९
प्रवचनसारोद्धार	५३८	ओघनिर्युक्तिभाष्यम्	३२०
प्रवचनसारोद्धार	५४९	दशवैकालिकनिर्युक्ति	३२५
प्रवचनसारोद्धार	५५०	दशवैकालिकनिर्युक्ति	३२९
प्रवचनसारोद्धार	५५१	ओघनिर्युक्तिभाष्यम्	२
प्रवचनसारोद्धार	५५१	संबोधप्रकरण	२/२३०
प्रवचनसारोद्धार	५५२	संबोधप्रकरण	२/२२३
प्रवचनसारोद्धार	५५३	तित्थोगालीपइण्णयं	१२०७
प्रवचनसारोद्धार	५५५	दशवैकालिकनिर्युक्ति	४६
प्रवचनसारोद्धार	५५७	संबोधप्रकरण	२/६८
प्रवचनसारोद्धार	५५७	आराधनापताका (वीर)	५४३
प्रवचनसारोद्धार	५५९	दशवैकालिकनिर्युक्ति	४७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवचनसारोद्धार	५६०	दशवैकालिकनिर्युक्ति	४८
प्रवचनसारोद्धार	५६१	आराधनापताका (प्रा०)	६५१
प्रवचनसारोद्धार	५६२	ओघनिर्युक्तिभाष्यम्	३
प्रवचनसारोद्धार	५६२	संबोधप्रकरण	२/३१
प्रवचनसारोद्धार	५६३	पञ्चाशकप्रकरण	१३/३
प्रवचनसारोद्धार	५६४	पिण्डविशुद्धि	३
प्रवचनसारोद्धार	५६५	पिण्डविशुद्धि	४
प्रवचनसारोद्धार	५६५	संबोधप्रकरण	२/२७०
प्रवचनसारोद्धार	५६६	पिण्डनिर्युक्ति	४०८
प्रवचनसारोद्धार	५६६	संबोधप्रकरण	२/२७१
प्रवचनसारोद्धार	५६७	पिण्डविशुद्धि	४०९
प्रवचनसारोद्धार	५६८	पिण्डविशुद्धि	५२०
प्रवचनसारोद्धार	५६८	संबोधप्रकरण	२/२७३
प्रवचनसारोद्धार	५७४	पञ्चाशकप्रकरण	१८/३
प्रवचनसारोद्धार	५७५	पञ्चाशकप्रकरण	१८/४
प्रवचनसारोद्धार	५७६	पञ्चाशकप्रकरण	१८/५
प्रवचनसारोद्धार	५७७	पञ्चाशकप्रकरण	१८/६
प्रवचनसारोद्धार	५७८	पञ्चाशकप्रकरणम्	१८/७
प्रवचनसारोद्धार	६११	पञ्चवस्तुप्रकरणम्	१५३८
प्रवचनसारोद्धार	६१२	पञ्चवस्तुप्रकरणम्	१५३९
प्रवचनसारोद्धार	६१३	पञ्चवस्तुप्रकरणम्	१५४०
प्रवचनसारोद्धार	६१४	पञ्चवस्तुप्रकरणम्	१५४१
प्रवचनसारोद्धार	३१४	बृहत्कल्पभाष्यम्	१४३९
प्रवचनसारोद्धार	६२३	पञ्चवस्तुप्रकरणम्	१५४७
प्रवचनसारोद्धार	३२४	पञ्चवस्तुप्रकरणम्	१५४८
प्रवचनसारोद्धार	६२४	बृहत्कल्पभाष्यम्	१४४१
प्रवचनसारोद्धार	६२५	पञ्चवस्तुप्रकरणम्	१५४९
प्रवचनसारोद्धार	६२५	बृहत्कल्पभाष्यम्	१४४२
प्रवचनसारोद्धार	६२६	पञ्चवस्तुप्रकरणम्	१५५०
प्रवचनसारोद्धार	६२६	बृहत्कल्पभाष्यम्	१४४३
प्रवचनसारोद्धार	६२७	पञ्चवस्तुप्रकरणम्	१५५१
प्रवचनसारोद्धार	६२७	बृहत्कल्पभाष्यम्	१४४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवचनसारोद्धार	६२८	पञ्चवस्तुप्रकरणम्	१५५२
प्रवचनसारोद्धार	६२८	बृहत्कल्पभाष्यम्	१४४५
प्रवचनसारोद्धार	६२९	आराधनापताका (प्रा०)	३३
प्रवचनसारोद्धार	६३६	संबोधप्रकरण	२/२३४
प्रवचनसारोद्धार	६३६	आराधनापताका (प्रा०)	७४६
प्रवचनसारोद्धार	६३७	आराधनापताका (प्रा०)	७४७
प्रवचनसारोद्धार	६३८	आराधनापताका (प्रा०)	७४८
प्रवचनसारोद्धार	६३९	आराधनापताका (प्रा०)	७४९
प्रवचनसारोद्धार	६४०	संबोधप्रकरण	३/२३८
प्रवचनसारोद्धार	६४१	संबोधप्रकरण	२/२३९
प्रवचनसारोद्धार	६४१	आराधनापताका (प्रा०)	७१४
प्रवचनसारोद्धार	६४१	पर्यन्ताराधना	२६०
प्रवचनसारोद्धार	६४२	आराधनापताका (प्रा०)	७१५
प्रवचनसारोद्धार	६४४	संबोधप्रकरण	२/१६
प्रवचनसारोद्धार	६४४	आराधनापताका (प्रा०)	७१७
प्रवचनसारोद्धार	६४६	आराधनापताका (प्रा०)	७१९
प्रवचनसारोद्धार	६४७	पञ्चाशकप्रकरणम्	१७/२६
प्रवचनसारोद्धार	६५०	पञ्चाशकप्रकरणम्	१७/१०
प्रवचनसारोद्धार	६५०	बृहत्कल्पभाष्यम्	६३६१
प्रवचनसारोद्धार	६५१	पञ्चाशकप्रकरणम्	१७/८
प्रवचनसारोद्धार	३५२	ओघनिर्युक्ति भाष्यम्	७९
प्रवचनसारोद्धार	६५२	पञ्चाशकप्रकरणम्	१७/१२
प्रवचनसारोद्धार	६५३	पञ्चाशकप्रकरणम्	१७/१६
प्रवचनसारोद्धार	६५४	पञ्चाशकप्रकरणम्	१७/३२
प्रवचनसारोद्धार	६५६	पञ्चाशकप्रकरणम्	१७/३७
प्रवचनसारोद्धार	६५७	पञ्चाशकप्रकरणम्	१७/३८
प्रवचनसारोद्धार	६५३	पञ्चाशकप्रकरणम्	१७/३९
प्रवचनसारोद्धार	६६३	बृहत्कल्पभाष्यम्	१७७५
प्रवचनसारोद्धार	६७०	ओघनिर्युक्ति	७३०
प्रवचनसारोद्धार	६७६	निशीथभाष्यम्	४००३
प्रवचनसारोद्धार	६७७	निशीथभाष्यम्	४००१
प्रवचनसारोद्धार	६७८	निशीथभाष्यम्	४००२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवचनसारोद्धार	६८५	आराधनापताका (प्रा०)	६७१
प्रवचनसारोद्धार	६८६	आराधनापताका (प्रा०)	६७२
प्रवचनसारोद्धार	६९१	उत्तराध्ययननिर्युक्ति	८२
प्रवचनसारोद्धार	६९३	तित्थोगालीपइण्णयं	६९९
प्रवचनसारोद्धार	६९४	आवश्यकनिर्युक्ति	१२१
प्रवचनसारोद्धार	७००	आवश्यकनिर्युक्ति	११६
प्रवचनसारोद्धार	७०९	पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	३९९
प्रवचनसारोद्धार	७०९	बृहत्कल्पभाष्यम्	४४३
प्रवचनसारोद्धार	७०९	ओघनिर्युक्ति	३१३
प्रवचनसारोद्धार	७१०	ओघनिर्युक्ति	३१४
प्रवचनसारोद्धार	७१०	पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	४००
प्रवचनसारोद्धार	७१०	बृहत्कल्पभाष्यम्	४४४
प्रवचनसारोद्धार	७१९	संबोधप्रकरण	२/२४१
प्रवचनसारोद्धार	७२१	आराधनापताका (वीर)	६४७
प्रवचनसारोद्धार	७२८	संबोधप्रकरण	२/२४९
प्रवचनसारोद्धार	७३४	पिण्डनिर्युक्ति	६६२
प्रवचनसारोद्धार	७३४	संबोधप्रकरण	२/२७४
प्रवचनसारोद्धार	७३५	पिण्डनिर्युक्ति	६६३
प्रवचनसारोद्धार	७३६	पिण्डनिर्युक्ति	६६४
प्रवचनसारोद्धार	७३७	पिण्डनिर्युक्ति	६६५
प्रवचनसारोद्धार	७३७	गच्छायारपइण्णयं	५९
प्रवचनसारोद्धार	७३८	विण्डविशुद्धि	६६६
प्रवचनसारोद्धार	७३९	संबोधप्रकरण	२/२७७
प्रवचनसारोद्धार	७४०	पञ्चाशकप्रकरण	१६/२
प्रवचनसारोद्धार	७४५	पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	३००
प्रवचनसारोद्धार	७४५	संबोधपकरण	२/२८०
प्रवचनसारोद्धार	७५०	आवश्यकनिर्युक्ति	१४१८
प्रवचनसारोद्धार	७५०	व्यवहारसूत्रभाष्यम्	५३
प्रवचनसारोद्धार	७५१	संबोधप्रकरण	१२/५२
प्रवचनसारोद्धार	७५५	संबोधप्रकरण	१२/५३
प्रवचनसारोद्धार	७५८	संबोधप्रकरण	१२/५४
प्रवचनसारोद्धार	७५७	संबोधप्रकरण	१२/५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवचनसारोद्धार	७५८	संबोधप्रकरण	१२/५६
प्रवचनसारोद्धार	७६०	आवश्यकनिर्युक्ति	६६६
प्रवचनसारोद्धार	७६०	उत्तराध्ययन निर्युक्ति	४८२
प्रवचनसारोद्धार	७६०	पञ्चाशकप्रकरणम्	१२/२
प्रवचनसारोद्धार	७६०	भगवतीसूत्रम्	२५/७/८०१
प्रवचनसारोद्धार	७६१	उत्तराध्ययननिर्युक्ति	४८३
प्रवचनसारोद्धार	७६१	आवश्यकनिर्युक्ति	६६७
प्रवचनसारोद्धार	७६१	पञ्चाशकप्रकरण	१२/३
प्रवचनसारोद्धार	७६२	आवश्यकनिर्युक्ति	६६८
प्रवचनसारोद्धार	७६३	आवश्यकनिर्युक्ति	६८२
प्रवचनसारोद्धार	७६३	पञ्चाशकप्रकरण	१२/१०
प्रवचनसारोद्धार	७६४	आवश्यकनिर्युक्ति	६८८
प्रवचनसारोद्धार	७६४	पञ्चाशकप्रकरण	१२/१४
प्रवचनसारोद्धार	७६७	आवश्यकनिर्युक्ति	६९७
प्रवचनसारोद्धार	७६८	पञ्चाशकप्रकरणम्	२३०
प्रवचनसारोद्धार	७७०	बृहत्कल्पभाष्यम्	६८८
प्रवचनसारोद्धार	७७०	ओघनिर्युक्ति	१२१
प्रवचनसारोद्धार	७७०	व्यवहारसूत्रभाष्यम् उ. २ गा. २०	
प्रवचनसारोद्धार	७७१	उत्तराध्ययनसूत्रम्	२४/७
प्रवचनसारोद्धार	७७२	पञ्चवस्तुकप्रकरण	८९५
प्रवचनसारोद्धार	७७३	पञ्चवस्तुकप्रकरण	८९६
प्रवचनसारोद्धार	७७५	बृहत्कल्पभाष्यम्	४२८६
प्रवचनसारोद्धार	७७६	बृहत्कल्पभाष्यम्	४२८७
प्रवचनसारोद्धार	७७८	आवश्यकनिर्युक्ति	११७२
प्रवचनसारोद्धार	७८०	पञ्चाशकप्रकरणम्	५/८
प्रवचनसारोद्धार	७८०	पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	१३२८
प्रवचनसारोद्धार	७८०	व्यवहारसूत्रभाष्यम् उ. ३ गा. १५	
प्रवचनसारोद्धार	७८१	पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	१३२९
प्रवचनसारोद्धार	७८१	व्यवहारसूत्रभाष्यम् उ. ३ गा. १६	
प्रवचनसारोद्धार	७८२	पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	१३३०
प्रवचनसारोद्धार	७८३	बृहत्कल्पभाष्यम्	१५०६
प्रवचनसारोद्धार	७८४	बृहत्कल्पभाष्यम्	१५०७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवचनसारोद्धार	७८५	बृहत्कल्पभाष्यम्	१५०८
प्रवचनसारोद्धार	७८६	बृहत्कल्पभाष्यम्	४५६
प्रवचनसारोद्धार	७८६	ओघनिर्युक्ति	३१६
प्रवचनसारोद्धार	७८७	ओघनिर्युक्तिभाष्यम्	१८४
प्रवचनसारोद्धार	७८७	बृहत्कल्पभाष्यम्	४५७
प्रवचनसारोद्धार	७८८	ओघनिर्युक्तिभाष्यम्	१८५
प्रवचनसारोद्धार	७८८	बृहत्कल्पभाष्यम्	४५८
प्रवचनसारोद्धार	७८९	ओघनिर्युक्ति	३१७
प्रवचनसारोद्धार	७८९	बृहत्कल्पभाष्यम्	४५९
प्रवचनसारोद्धार	७९०	निशीथभाष्यम्	३५०६
प्रवचनसारोद्धार	७९०	पंचकल्पभाष्य	२००
प्रवचनसारोद्धार	७९१	निशीथभाष्यम्	३५०७
प्रवचनसारोद्धार	७९१	पंचकल्पभाष्य	२०१
प्रवचनसारोद्धार	७९३	निशीथभाष्यम्	३५६१
प्रवचनसारोद्धार	७९५	निशीथभाष्यम्	३७०९
प्रवचनसारोद्धार	७९६	निशीथभाष्यम्	३७१०
प्रवचनसारोद्धार	७९७	बृहत्कल्पभाष्यम्	३८९०
प्रवचनसारोद्धार	७९८	बृहत्कल्पभाष्यम्	३८९१
प्रवचनसारोद्धार	७९९	बृहत्कल्पभाष्यम्	३८९२
प्रवचनसारोद्धार	८००	निशीथभाष्यम्	११४४
प्रवचनसारोद्धार	८००	बृहत्कल्पभाष्यम्	३५२५
प्रवचनसारोद्धार	८०१	निशीथभाष्यम्	११४५
प्रवचनसारोद्धार	८०१	बृहत्कल्पभाष्यम्	३५२६
प्रवचनसारोद्धार	८०२	निशीथभाष्यम्	११४९
प्रवचनसारोद्धार	८०२	बृहत्कल्पभाष्यम्	३५३०
प्रवचनसारोद्धार	८०३	निशीथभाष्यम्	११४८
प्रवचनसारोद्धार	८०३	बृहत्कल्पभाष्यम्	३५२९
प्रवचनसारोद्धार	८०४	निशीथभाष्यम्	११५८
प्रवचनसारोद्धार	८०५	निशीथभाष्यम्	११५९
प्रवचनसारोद्धार	८०५	बृहत्कल्पभाष्यम्	३५३९
प्रवचनसारोद्धार	८०६	निशीथभाष्यम्	११६०
प्रवचनसारोद्धार	८०६	बृहत्कल्पभाष्यम्	३५४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवचनसारोद्धार	८०७	निशीथभाष्यम्	११६१
प्रवचनसारोद्धार	८०७	बृहत्कल्पभाष्यम्	३५४१
प्रवचनसारोद्धार	८०८	निशीथभाष्यम्	११६२
प्रवचनसारोद्धार	८०८	बृहत्कल्पभाष्यम्	३५४३
प्रवचनसारोद्धार	८०९	संबोधप्रकरण	११/३८
प्रवचनसारोद्धार	८३६	संबोधप्रकरण	४/३०
प्रवचनसारोद्धार	८३७	आवश्यकनिर्युक्ति	८५७
प्रवचनसारोद्धार	८३७	संबोधप्रकरण	४/३२
प्रवचनसारोद्धार	८३८	आवश्यकनिर्युक्ति	८५८
प्रवचनसारोद्धार	८३९	पञ्चाशकप्रकरणम्	१४/२
प्रवचनसारोद्धार	८४०	पञ्चाशकप्रकरणम्	१४/३
प्रवचनसारोद्धार	८४१	पञ्चाशकप्रकरणम्	१४/४
प्रवचनसारोद्धार	८४२	पञ्चाशकप्रकरणम्	१४/५
प्रवचनसारोद्धार	८४३	पञ्चाशकप्रकरणम्	१४/६
प्रवचनसारोद्धार	८४४	पञ्चाशकप्रकरणम्	१४/७
प्रवचनसारोद्धार	८४५	पञ्चाशकप्रकरणम्	१४/८
प्रवचनसारोद्धार	८४५	पञ्चाशकप्रकरणम्	१४/९
प्रवचनसारोद्धार	८४७	आवश्यकनिर्युक्ति	७५४
प्रवचनसारोद्धार	८४८	आवश्यकनिर्युक्ति	७५९
प्रवचनसारोद्धार	८५०	निशीथभाष्यम्	५०८७
प्रवचनसारोद्धार	८५०	बृहत्कल्पभाष्यम्	२८३२
प्रवचनसारोद्धार	८५१	निशीथभाष्यम्	५०८६
प्रवचनसारोद्धार	८५१	बृहत्कल्पभाष्यम्	२८३१
प्रवचनसारोद्धार	८५२	निशीथभाष्यम्	५०८८
प्रवचनसारोद्धार	८५२	बृहत्कल्पभाष्यम्	२५३३
प्रवचनसारोद्धार	८५३	निशीथभाष्यम्	५०८९
प्रवचनसारोद्धार	८५३	बृहत्कल्पभाष्यम्	२८३४
प्रवचनसारोद्धार	८५५	संबोधप्रकरण	१२/६७
प्रवचनसारोद्धार	८५८	संबोधप्रकरण	१२/७०
प्रवचनसारोद्धार	८५९	संबोधप्रकरण	१२/७१
प्रवचनसारोद्धार	८६१	ओघनिर्युक्ति	६६०
प्रवचनसारोद्धार	८६२	पञ्चाशकप्रकरणम्	१५/४१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवचनसारोद्धार	८६४	ओघनिर्युक्ति	३५१
प्रवचनसारोद्धार	८६४	पिण्डनिर्युक्ति	२६
प्रवचनसारोद्धार	८६५	ओघनिर्युक्ति	३५२
प्रवचनसारोद्धार	८६५	पिण्डनिर्युक्ति	२७
प्रवचनसारोद्धार	८६६	पिण्डनिर्युक्ति	६४२
प्रवचनसारोद्धार	८६७	पिण्डनिर्युक्ति	६५०
प्रवचनसारोद्धार	८६८	पिण्डनिर्युक्ति	६५१
प्रवचनसारोद्धार	८६९	पिण्डनिर्युक्ति	६५२
प्रवचनसारोद्धार	८७०	पिण्डनिर्युक्ति	६५३
प्रवचनसारोद्धार	८७१	पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	७०७
प्रवचनसारोद्धार	८७१	बृहत्कल्पभाष्यम्	५८२
प्रवचनसारोद्धार	८७२	पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	७०८
प्रवचनसारोद्धार	८७२	बृहत्कल्पभाष्यम्	५८३
प्रवचनसारोद्धार	८७३	पञ्चवस्तुप्रकरणम्	७०९
प्रवचनसारोद्धार	८७३	बृहत्कल्पभाष्यम्	५८४
प्रवचनसारोद्धार	८७४	पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	७०६
प्रवचनसारोद्धार	८७५	पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	१५७४
प्रवचनसारोद्धार	८७५	आराहणापडाया (प्रा.)	१०
प्रवचनसारोद्धार	८७५	आराहणापडाया (वीर)	१५५
प्रवचनसारोद्धार	८७६	पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	१५७५
प्रवचनसारोद्धार	८७६	आराधनापताका (प्रा०)	११
प्रवचनसारोद्धार	८७६	पर्यन्ताराधना	८
प्रवचनसारोद्धार	८७७	आराधनापताका (प्रा०)	१२
प्रवचनसारोद्धार	८७७	आराधनापताका (वीर)	१५७
प्रवचनसारोद्धार	८७७	पर्यन्ताराधना	९
प्रवचनसारोद्धार	८७९	बृहत्कल्पभाष्यम्	१४९४
प्रवचनसारोद्धार	८८०	बृहत्कल्पभाष्यम्	१४९५
प्रवचनसारोद्धार	८८५	पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	९२६
प्रवचनसारोद्धार	८८५	स्थानांगसूत्रम् स्थान. १० सू.२७७ गा. १७५	
प्रवचनसारोद्धार	८८५	तित्थोगालीपइण्णयं	८८८
प्रवचनसारोद्धार	८८६	स्थानांगसूत्रम् स्थान. १० सू.७७७ गा. १७६	
प्रवचनसारोद्धार	८८६	पञ्चवस्तुकप्रकरणम्	९२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवचनसारोद्धार	८८६	तित्थोगालीपइण्णयं	८८९
प्रवचनसारोद्धार	८९१	दशवैकालिकनिर्युक्ति	२७३
प्रवचनसारोद्धार	८९१	प्रज्ञापनासूत्रम् पद ११/सू. ८६२/गा.१९४	
प्रवचनसारोद्धार	८९१	संबोधप्रकरण	२/५२
प्रवचनसारोद्धार	८९२	दशवैकालिकनिर्युक्ति	२७४
प्रवचनसारोद्धार	८९२	प्रज्ञापनासूत्रम् पद ११/सू. ८६३/गा.१९५	
प्रवचनसारोद्धार	८९३	दशवैकालिकनिर्युक्ति	२७५
प्रवचनसारोद्धार	८९४	दशवैकालिकनिर्युक्ति	२७६
प्रवचनसारोद्धार	८९५	दशवैकालिकनिर्युक्ति	२७७
प्रवचनसारोद्धार	८९५	प्रज्ञापनासूत्रम् पद ११/सू. ८६६/गा.१९६	
प्रवचनसारोद्धार	९२५	आचारांगनिर्युक्ति	३९
प्रवचनसारोद्धार	९२७	संबोधप्रकरण	४/६०
प्रवचनसारोद्धार	९२७	पर्यन्ताराधना	१८
प्रवचनसारोद्धार	९२८	प्रज्ञापनासूत्रम् पद १/सू. ११०/गा.१३१	
प्रवचनसारोद्धार	९२८	संबोधप्रकरण	४/६१
प्रवचनसारोद्धार	९३४	संबोधप्रकरण	४/६८
प्रवचनसारोद्धार	९३५	तित्थोगालीपइण्णयं	१२२०
प्रवचनसारोद्धार	९४५	संबोधप्रकरण	४/८४
प्रवचनसारोद्धार	९४८	संबोधप्रकरण	४/८५
प्रवचनसारोद्धार	९४९	संबोधप्रकरण	४/८८
प्रवचनसारोद्धार	९५०	उत्तराध्ययनसूत्रम्	२८/१६
प्रवचनसारोद्धार	९५०	प्रज्ञापनासूत्रम् पद १/सू. ११०/गा.११९	
प्रवचनसारोद्धार	९५०	संबोधप्रकरण	४/८९
प्रवचनसारोद्धार	९५१	उत्तराध्ययनसूत्रम्	२८/१८
प्रवचनसारोद्धार	९५१	प्रज्ञापनासूत्रम् पद १/सू. ११०/गा.१२१	
प्रवचनसारोद्धार	९५२	उत्तराध्ययनसूत्रम्	२८/१९
प्रवचनसारोद्धार	९५२	प्रज्ञापनासूत्रम् पद १/सू. ११०/गा.१२२	
प्रवचनसारोद्धार	९५३	उत्तराध्ययनसूत्रम्	२८/२०
प्रवचनसारोद्धार	९५४	उत्तराध्ययनसूत्रम्	२८/२१
प्रवचनसारोद्धार	९५५	उत्तराध्ययनसूत्रम्	२८/२२
प्रवचनसारोद्धार	९५६	उत्तराध्ययनसूत्रम्	२८/२३
प्रवचनसारोद्धार	९५७	उत्तराध्ययनसूत्रम्	२८/२४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवचनसारोद्धार	९५८	उत्तराध्ययनसूत्रम्	२८/२५
प्रवचनसारोद्धार	९५९	उत्तराध्ययनसूत्रम्	२८/२६
प्रवचनसारोद्धार	९६०	उत्तराध्ययनसूत्रम्	१८/२७
प्रवचनसारोद्धार	९६३	जीवसमास	४०
प्रवचनसारोद्धार	९६४	जीवसमास	४१
प्रवचनसारोद्धार	९६५	जीवसमास	४२
प्रवचनसारोद्धार	९६६	जीवसमास	४३
प्रवचनसारोद्धार	९६७	जीवसमास	४४
प्रवचनसारोद्धार	९६८	बृहत्संग्रहणी	३५१
प्रवचनसारोद्धार	९६९	बृहत्संग्रहणी	३५२
प्रवचनसारोद्धार	९७७	संबोधप्रकरण	७/१
प्रवचनसारोद्धार	९८०	संबोधप्रकरण	६/८८
प्रवचनसारोद्धार	९८१	संबोधप्रकरण	६/८९
प्रवचनसारोद्धार	९८२	संबोधप्रकरण	६/९०
प्रवचनसारोद्धार	९८४	संबोधप्रकरण	६/९६
प्रवचनसारोद्धार	९८५	पञ्चाशकप्रकरण	१०/१७
प्रवचनसारोद्धार	९८६	पञ्चाशकप्रकरण	१०/१८
प्रवचनसारोद्धार	९८६	संबोधप्रकरण	६/९८
प्रवचनसारोद्धार	९८७	पञ्चाशकप्रकरण	१०/१९
प्रवचनसारोद्धार	९८९	संबोधप्रकरण	६/१०४
प्रवचनसारोद्धार	९९२	संबोधप्रकरण	६/१०३
प्रवचनसारोद्धार	९९३	संबोधप्रकरण	६/११०
प्रवचनसारोद्धार	१००१	निशीथभाष्यम्	४८३३
प्रवचनसारोद्धार	१००१	बृहत्कल्पभाष्यम्	९७३
प्रवचनसारोद्धार	१००२	निशीथभाष्यम्	४८३४
प्रवचनसारोद्धार	१००२	बृहत्कल्पभाष्यम्	९७४
प्रवचनसारोद्धार	१००३	निशीथभाष्यम्	४८३५
प्रवचनसारोद्धार	१००३	बृहत्कल्पभाष्यम्	९७५
प्रवचनसारोद्धार	१००४	दशवैकालिकनिर्युक्ति	२५२
प्रवचनसारोद्धार	१००५	दशवैकालिकनिर्युक्ति	२५३
प्रवचनसारोद्धार	१००६	उत्तराध्ययननिर्युक्ति	२१२
प्रवचनसारोद्धार	१००७	उत्तराध्ययननिर्युक्ति	२१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवचनसारोद्धार	१००८	उत्तराध्ययननिर्युक्ति	२१५
प्रवचनसारोद्धार	१००९	उत्तराध्ययननिर्युक्ति	२१६
प्रवचनसारोद्धार	१०१०	उत्तराध्ययननिर्युक्ति	२१७
प्रवचनसारोद्धार	१०११	उत्तराध्ययननिर्युक्ति	२१९
प्रवचनसारोद्धार	१०१२	उत्तराध्ययननिर्युक्ति	२२१
प्रवचनसारोद्धार	१०१४	उत्तराध्ययननिर्युक्ति	२२२
प्रवचनसारोद्धार	१०१५	उत्तराध्ययननिर्युक्ति	२२३
प्रवचनसारोद्धार	१०१८	उत्तराध्ययननिर्युक्ति	२२४
प्रवचनसारोद्धार	१०१८	जीवसमास	११७
प्रवचनसारोद्धार	१०१९	जीवसमास	११८
प्रवचनसारोद्धार	१०२०	जीवसमास	११९
प्रवचनसारोद्धार	१०२०	ज्योतिष्करण्डक	७९
प्रवचनसारोद्धार	१०२१	जीवसमास	१२०
प्रवचनसारोद्धार	१०२२	जीवसमास	१२१
प्रवचनसारोद्धार	१०२३	जीवसमास	१२२
प्रवचनसारोद्धार	१०२४	जीवसमास	१२५
प्रवचनसारोद्धार	१०२५	जीवसमास	१२६
प्रवचनसारोद्धार	१०२५	तित्थोगालीपइण्णयं	१२
प्रवचनसारोद्धार	१०२६	जीवसमास	१३१
प्रवचनसारोद्धार	१०२७	जीवसमास	१२३
प्रवचनसारोद्धार	१०२८	जीवसमास	१२४
प्रवचनसारोद्धार	१०२९	जीवसमास	१२७
प्रवचनसारोद्धार	१०३०	जीवसमास	१३०
प्रवचनसारोद्धार	१०३१	जीवसमास	१३२
प्रवचनसारोद्धार	१०३२	जीवसमास	१३३
प्रवचनसारोद्धार	१०३४	ज्योतिष्करण्डक*	८५
प्रवचनसारोद्धार	१०३४	तित्थोगालीपइण्णयं	१८
प्रवचनसारोद्धार	१०३५	ज्योतिष्करण्डक प्र.	८६
प्रवचनसारोद्धार	१०३५	तित्थोगालीपइण्णयं	११७०
प्रवचनसारोद्धार	१०३६	तित्थोगालीपइण्णयं	२१
प्रवचनसारोद्धार	१०३७	तित्थोगालीपइण्णयं	२२

* डॉ. पाण्डे के आलेख में इसका गाथा क्रमांक ९५ है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवचनसारोद्धार	१०५७	संबोधप्रकरण	२/४५
प्रवचनसारोद्धार	१०६२	दशवैकालिकनिर्युक्ति	२५९
प्रवचनसारोद्धार	१०६३	दशवैकालिकनिर्युक्ति	२६०
प्रवचनसारोद्धार	१०६४	दशवैकालिकनिर्युक्ति	२६१
प्रवचनसारोद्धार	१०६४	संबोधप्रकरण	२/६५
प्रवचनसारोद्धार	१०६५	संबोधप्रकरण	२/६६
प्रवचनसारोद्धार	१०६५	दशवैकालिकानिर्युक्ति	२६२
प्रवचनसारोद्धार	१०६७	तित्थोगालीपइण्णयं	४६
प्रवचनसारोद्धार	१०६८	तित्थोगालीपइण्णयं	४७
प्रवचनसारोद्धार	१०७०	तित्थोगालीपइण्णयं	४९
प्रवचनसारोद्धार	१०७२	बृहत्संग्रहणी	२३९
प्रवचनसारोद्धार	१०७३	बृहत्संग्रहणी	२५५
प्रवचनसारोद्धार	१०७५	बृहत्संग्रहणी	२३३
प्रवचनसारोद्धार	१०७६	बृहत्संग्रहणी	२३४
प्रवचनसारोद्धार	१०७९	बृहत्संग्रहणी	२७९
प्रवचनसारोद्धार	१०८०	बृहत्संग्रहणी	२८०
प्रवचनसारोद्धार	१०८१	बृहत्संग्रहणी	२८१
प्रवचनसारोद्धार	१०८२	बृहत्संग्रहणी	२८२
प्रवचनसारोद्धार	१०८३	बृहत्संग्रहणी	२८९
प्रवचनसारोद्धार	१०८४	आवश्यकनिर्युक्ति	४७
प्रवचनसारोद्धार	१०८५	भगवतीसूत्रम्	३७/४
प्रवचनसारोद्धार	१०८६	समवायांगसूत्रम् स्थान १५ सूत्र १/गा. ११-१२	
प्रवचनसारोद्धार	१०९१	बृहत्संग्रहणी	२८४
प्रवचनसारोद्धार	१०९२	बृहत्संग्रहणी	२८५
प्रवचनसारोद्धार	१०९३	बृहत्संग्रहणी	२८६
प्रवचनसारोद्धार	१०९४	उपदेशपदम्	१७
प्रवचनसारोद्धार	१०९४	बृहत्संग्रहणी	३३३
प्रवचनसारोद्धार	१०९५	बृहत्संग्रहणी	३३४
प्रवचनसारोद्धार	१०९६	बृहत्संग्रहणी	३१२
प्रवचनसारोद्धार	१०९७	बृहत्संग्रहणी	३१३
प्रवचनसारोद्धार	१०९९	बृहत्संग्रहणी	३०७
प्रवचनसारोद्धार	११०२	बृहत्संग्रहणी	३११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवचनसारोद्धार	११०३	बृहत्संग्रहणी	३१०
प्रवचनसारोद्धार	११०४	बृहत्संग्रहणी	३०८
प्रवचनसारोद्धार	१११०	बृहत्संग्रहणी	३४२
प्रवचनसारोद्धार	१११७	बृहत्संग्रहणी	१७०
प्रवचनसारोद्धार	१११८	बृहत्संग्रहणी	१६९
प्रवचनसारोद्धार	१११९	बृहत्संग्रहणी	१७१
प्रवचनसारोद्धार	११२०	बृहत्संग्रहणी	१७२
प्रवचनसारोद्धार	११२४	बृहत्संग्रहणी	३३७
प्रवचनसारोद्धार	११२५	बृहत्संग्रहणी	३३८
प्रवचनसारोद्धार	११२८	बृहत्संग्रहणी	३४०
प्रवचनसारोद्धार	११२७	बृहत्संग्रहणी	३४१
प्रवचनसारोद्धार	११२९	बृहत्संग्रहणी	४२
प्रवचनसारोद्धार	११३०	बृहत्संग्रहणी	५८
प्रवचनसारोद्धार	११३०	देविदत्थओ पइण्णयं	६७
प्रवचनसारोद्धार	११३१	प्रज्ञापनासूत्रम् पद् २/सू. १९४/गा.१५१	
प्रवचनसारोद्धार	११३३	जीवसमास	१९
प्रवचनसारोद्धार	११३३	देविदत्थओ पइण्णयं	८१
प्रवचनसारोद्धार	११३४	जीवसमास	२०
प्रवचनसारोद्धार	११३७	देविदत्थओ पइण्णयं	१८४
प्रवचनसारोद्धार	११३८	बृहत्संग्रहणी	५
प्रवचनसारोद्धार	११३९	बृहत्संग्रहणी	६
प्रवचनसारोद्धार	११४०	बृहत्संग्रहणी	४
प्रवचनसारोद्धार	११४३	बृहत्संग्रहणी	१२
प्रवचनसारोद्धार	११४६	बृहत्संग्रहणी	१७
प्रवचनसारोद्धार	११४७	बृहत्संग्रहणी	३५
प्रवचनसारोद्धार	११४८	बृहत्संग्रहणी	३६
प्रवचनसारोद्धार	११४९	बृहत्संग्रहणी	३७
प्रवचनसारोद्धार	११५०	बृहत्संग्रहणी	५५
प्रवचनसारोद्धार	११५१	बृहत्संग्रहणी	११७
प्रवचनसारोद्धार	११५२	बृहत्संग्रहणी	११८
प्रवचनसारोद्धार	११५३	बृहत्संग्रहणी	११९
प्रवचनसारोद्धार	११५४	बृहत्संग्रहणी	१२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवचनसारोद्धार	११५५	बृहत्संग्रहणी	१४३
प्रवचनसारोद्धार	११५६	बृहत्संग्रहणी	१४४
प्रवचनसारोद्धार	११५७	बृहत्संग्रहणी	१४८
प्रवचनसारोद्धार	११५८	बृहत्संग्रहणी	१५०
प्रवचनसारोद्धार	११६०	देविदत्थओ पइण्णयं	१९२
प्रवचनसारोद्धार	११६१	बृहत्संग्रहणी	२२०
प्रवचनसारोद्धार	११६२	बृहत्संग्रहणी	२२१
प्रवचनसारोद्धार	११६३	बृहत्संग्रहणी	२२२
प्रवचनसारोद्धार	११६४	बृहत्संग्रहणी	२२३
प्रवचनसारोद्धार	११६५	बृहत्संग्रहणी	२२४
प्रवचनसारोद्धार	११६७	बृहत्संग्रहणी	१५०
प्रवचनसारोद्धार	११६८	बृहत्संग्रहणी	१५१
प्रवचनसारोद्धार	११६९	बृहत्संग्रहणी	१५२
प्रवचनसारोद्धार	११७०	बृहत्संग्रहणी	१५३
प्रवचनसारोद्धार	११७१	बृहत्संग्रहणी ---	१५४
प्रवचनसारोद्धार	११७२	बृहत्संग्रहणी	१५५
प्रवचनसारोद्धार	११७३	बृहत्संग्रहणी	१५६
प्रवचनसारोद्धार	११७४	बृहत्संग्रहणी	१८०
प्रवचनसारोद्धार	११७७	बृहत्संग्रहणी	१५७
प्रवचनसारोद्धार	११७८	बृहत्संग्रहणी	१८४
प्रवचनसारोद्धार	११८०	बृहत्संग्रहणी	१९८
प्रवचनसारोद्धार	११८१	बृहत्संग्रहणी	१९९
प्रवचनसारोद्धार	११८२	बृहत्संग्रहणी	२००
प्रवचनसारोद्धार	११८३	बृहत्संग्रहणी	२०१
प्रवचनसारोद्धार	११८४	बृहत्संग्रहणी	२०२
प्रवचनसारोद्धार	११८५	बृहत्संग्रहणी	२१४
प्रवचनसारोद्धार	११८७	बृहत्संग्रहणी	२१५
प्रवचनसारोद्धार	१२०७	आराधनापताका (प्रा.)	६८६
प्रवचनसारोद्धार	१२०८	आराधनापताका (प्रा.)	६८७
प्रवचनसारोद्धार	१२०९	समवायांगसूत्रम् परि. सू.	१५८/गा. ४७
प्रवचनसारोद्धार	१२०९	तित्थोगालीपइण्णयं	५७०
प्रवचनसारोद्धार	१२१०	समवायांगसूत्रम् परि. सू.	१५८/गा. ४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवचनसारोद्धार	१२१०	तित्थोगालीपइण्णयं	५७१
प्रवचनसारोद्धार	१२११	आवश्यकभाष्यम्	४१
प्रवचनसारोद्धार	१२१२	आवश्यकभाष्यम्	४२
प्रवचनसारोद्धार	१२१३	आवश्यकभाष्यम्	४३
प्रवचनसारोद्धार	१२१३	तित्थोगालीपइण्णयं	६१०
प्रवचनसारोद्धार	१२१५	बृहसंग्रहणी	३०३
प्रवचनसारोद्धार	१२१६	बृहसंग्रहणी	३०४
प्रवचनसारोद्धार	१२१७	बृहसंग्रहणी	३१२
प्रवचनसारोद्धार	१२१८	स्थानांगसूत्रम्	९/६७३/१
प्रवचनसारोद्धार	१२१९	स्थानांगसूत्रम्	९/६७३/२
प्रवचनसारोद्धार	१२२०	स्थानांगसूत्रम्	९/६७३/३
प्रवचनसारोद्धार	१२२०	तित्थोगालीपइण्णयं	११३३
प्रवचनसारोद्धार	१२२१	स्थानांगसूत्रम्	९/६७३/४
प्रवचनसारोद्धार	१२२२	स्थानांगसूत्रम्	९/६७३/५
प्रवचनसारोद्धार	१२२३	स्थानांगसूत्रम्	९/६७३/६
प्रवचनसारोद्धार	१२२३	तित्थोगालीपइण्णयं	११३६
प्रवचनसारोद्धार	१२२४	स्थानांगसूत्रम्	९/६७३/७
प्रवचनसारोद्धार	१२२५	स्थानांगसूत्रम्	९/६७३/८
प्रवचनसारोद्धार	१२२६	स्थानांगसूत्रम्	९/६७३/९
प्रवचनसारोद्धार	१२२७	स्थानांगसूत्रम्	९/६७३/१०
प्रवचनसारोद्धार	१२२८	स्थानांगसूत्रम् *	९/६७३/११
प्रवचनसारोद्धार	१२२८	तित्थोगालीपइण्णयं	११४१
प्रवचनसारोद्धार	१२२९	स्थानांगसूत्रम्	९/६७३/१२
प्रवचनसारोद्धार	१२२९	तित्थोगालीपइण्णयं	११४२
प्रवचनसारोद्धार	१२३०	स्थानांगसूत्रम्	९/६७३/१३
प्रवचनसारोद्धार	१२३१	स्थानांगसूत्रम्	९/६७३/१४
प्रवचनसारोद्धार	१२३८	संबोधप्रकरण	३/३२
प्रवचनसारोद्धार	१२४१	कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/५
प्रवचनसारोद्धार	१२४२	संबोधप्रकरण	३/३७

* स्थानांग के सन्दर्भ में प्रथम संख्या स्थान की दूसरी सूत्र की एवं तीसरी गाथा की सूचक है। ज्ञातव्य है कि मुनि जम्बूविजयजी द्वारा सम्पादित संस्करण में गाथा क्रमांक १-१७ न होकर ११७-१३० है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवचनसारोद्धार	१२४३	संबोधप्रकरण	३/३८
प्रवचनसारोद्धार	१२४४	संबोधप्रकरण	३/३९
प्रवचनसारोद्धार	१२४७	संबोधप्रकरण	२/४२
प्रवचनसारोद्धार	१२५१	कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/७
प्रवचनसारोद्धार	१२५४	पञ्चसंग्रह	३/११
प्रवचनसारोद्धार	१२६२	कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/७१
प्रवचनसारोद्धार	१२६३	कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/७२
प्रवचनसारोद्धार	१२६३	धर्मसंग्रहणी	६१८
प्रवचनसारोद्धार	१२६४	कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/७३
प्रवचनसारोद्धार	१२६४	धर्मसंग्रहणी	६१९
प्रवचनसारोद्धार	१२६५	कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/७४
प्रवचनसारोद्धार	१२६५	धर्मसंग्रहणी	६२०
प्रवचनसारोद्धार	१२६६	कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/७५
प्रवचनसारोद्धार	१२६७	कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/७६
प्रवचनसारोद्धार	१२६८	कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/७७
प्रवचनसारोद्धार	१२६९	कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/७८
प्रवचनसारोद्धार	१२७०	कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/७९
प्रवचनसारोद्धार	१२७१	कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१८०
प्रवचनसारोद्धार	१२७२	कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/८१
प्रवचनसारोद्धार	१२७३	कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/८२
प्रवचनसारोद्धार	१२७४	पञ्चसंग्रह	३/४
प्रवचनसारोद्धार	१२७६	कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	४/७९
प्रवचनसारोद्धार	१२९८	पञ्चसंग्रह	३/२५
प्रवचनसारोद्धार	१३००	कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	४/१३
प्रवचनसारोद्धार	१३०२	कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	४/२६
प्रवचनसारोद्धार	१३०३	आवश्यकनिर्युक्ति	१४
प्रवचनसारोद्धार	१३०३	जीवसमास	६
प्रवचनसारोद्धार	१३०५	कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	४/३४
प्रवचनसारोद्धार	१३११	जीवसमास	१९२
प्रवचनसारोद्धार	१३१७	कर्मग्रन्थ (प्राचीन)	१/१३६
प्रवचनसारोद्धार	१३१७	जीवसमास	२५
प्रवचनसारोद्धार	१३१७	बृहत्संग्रहणी	३६३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवचनसारोद्धार	१३१९	जीवसमास	८२
प्रवचनसारोद्धार	१३२३	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	२
प्रवचनसारोद्धार	१३२४	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	३
प्रवचनसारोद्धार	१३२५	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	५
प्रवचनसारोद्धार	१३२६	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	६
प्रवचनसारोद्धार	१३२७	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	७
प्रवचनसारोद्धार	१३२८	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	८
प्रवचनसारोद्धार	१३२९	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	९
प्रवचनसारोद्धार	१३३०	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	१०
प्रवचनसारोद्धार	१३३१	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	११
प्रवचनसारोद्धार	१३३२	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	१२
प्रवचनसारोद्धार	१३३३	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	१३
प्रवचनसारोद्धार	१३३४	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	१४
प्रवचनसारोद्धार	१३३५	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	१६
प्रवचनसारोद्धार	१३३६	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	१७
प्रवचनसारोद्धार	१३३७	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	१८
प्रवचनसारोद्धार	१३३८	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	१९
प्रवचनसारोद्धार	१३३९	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	२०
प्रवचनसारोद्धार	१३४०	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	२१
प्रवचनसारोद्धार	१३४१	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	२२
प्रवचनसारोद्धार	१३४२	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	२३
प्रवचनसारोद्धार	१३४४	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	२४
प्रवचनसारोद्धार	१३४५	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	२५
प्रवचनसारोद्धार	१३४६	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	२६
प्रवचनसारोद्धार	१३४७	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	२७
प्रवचनसारोद्धार	१३४८	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	२८
प्रवचनसारोद्धार	१३४९	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	३०
प्रवचनसारोद्धार	१३५०	श्रावकव्रतभङ्गप्रकरण	४०
प्रवचनसारोद्धार	१३५४	संबोधप्रकरण	३/१९९
प्रवचनसारोद्धार	१३५५	संबोधप्रकरण	३/२००
प्रवचनसारोद्धार	१३५६	धर्मरत्न प्रकरणम्	५
प्रवचनसारोद्धार	१३५६	संबोधप्रकरणम्	५/६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवचनसारोद्धार	१३५७	धर्मरत्नप्रकरणम्	६
प्रवचनसारोद्धार	१३५७	संबोधप्रकरण	५/७
प्रवचनसारोद्धार	१३५८	धर्मरत्नप्रकरणम्	७
प्रवचनसारोद्धार	१३५८	संबोधप्रकरण	५/८
प्रवचनसारोद्धार	१३८७	तित्थोगालीपइण्णयं	८२
प्रवचनसारोद्धार	१३८९	अङ्गुलसप्तति	२
प्रवचनसारोद्धार	१३९०	जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति	सूत्र २१९
प्रवचनसारोद्धार	१३९०	ज्योतिष्करण्डक	७३
प्रवचनसारोद्धार	१३९१	जीवसमास	९८
प्रवचनसारोद्धार	१३९१	ज्योतिष्करण्डक	७४
प्रवचनसारोद्धार	१३९४	अङ्गुलसप्तति	४
प्रवचनसारोद्धार	१३९४	जीवसमास	१०३
प्रवचनसारोद्धार	१३९५	अङ्गुलसप्तति	५
प्रवचनसारोद्धार	१३९६	विशेषणवती	१
प्रवचनसारोद्धार	१४३९	बृहत्संग्रहणी	१८१
प्रवचनसारोद्धार	१४४३	भगवतीसूत्रम्	६/५/२४३
प्रवचनसारोद्धार	१४४८	आवश्यकनिर्युक्ति	२१४
प्रवचनसारोद्धार	१४४९	भगवतीसूत्रम्	६/५/२४३
प्रवचनसारोद्धार	१४५४	आवश्यकभाष्यम्	२१६
प्रवचनसारोद्धार	१४५५	आवश्यकभाष्यम्	२१७
प्रवचनसारोद्धार	१४५६	आवश्यकनिर्युक्ति	१३३१
प्रवचनसारोद्धार	१३५७	आवश्यकनिर्युक्ति	१३३२
प्रवचनसारोद्धार	१४५८	आवश्यकनिर्युक्ति	१३३४
प्रवचनसारोद्धार	१४५९	आवश्यकनिर्युक्ति	१३३५
प्रवचनसारोद्धार	१४६०	आवश्यकनिर्युक्ति	१३३७
प्रवचनसारोद्धार	१४६१	आवश्यकनिर्युक्ति	१३३८
प्रवचनसारोद्धार	१४६२	आवश्यकनिर्युक्ति	१३४२
प्रवचनसारोद्धार	१४६३	आवश्यकनिर्युक्ति	१३४४
प्रवचनसारोद्धार	१४६४	आवश्यकनिर्युक्ति	१३४७
प्रवचनसारोद्धार	१४६५	आवश्यकनिर्युक्ति	१३५०
प्रवचनसारोद्धार	१४६६	आवश्यकनिर्युक्ति	१३५१
प्रवचनसारोद्धार	१४६७	आवश्यकनिर्युक्ति	१३५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवचनसारोद्धार	१४६८	आवश्यकभाष्यम्	२१९
प्रवचनसारोद्धार	१४६९	आवश्यकभाष्यम्	२२०
प्रवचनसारोद्धार	१४७०	आवश्यकनिर्युक्ति	१३५५
प्रवचनसारोद्धार	१४७१	आवश्यकनिर्युक्ति	१३५८
प्रवचनसारोद्धार	१५४०	देविदत्थओ पइण्णयं	२८९
प्रवचनसारोद्धार	१५८७	प्रज्ञापनासूत्रम् पद् १/सू. १०२/गा.११२	
प्रवचनसारोद्धार	१५८८	प्रज्ञापनासूत्रम् पद् १/सू. १०२/गा.११३	
प्रवचनसारोद्धार	१५८९	प्रज्ञापनासूत्रम् पद् १/सू. १०२/गा.११४	
प्रवचनसारोद्धार	१५९०	प्रज्ञापनासूत्रम् पद् १/सू. १०२/गा.११५	
प्रवचनसारोद्धार	१५९१	प्रज्ञापनासूत्रम् पद् १/सू. १०२/गा.११६	
प्रवचनसारोद्धार	१५९२	प्रज्ञापनासूत्रम् पद् १/सू. १०२/गा.११७	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org